अपना
पराया

अपना पराया

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2008 प्रकाशक

प्रकाशक · **प्रभात प्रकाशन**™
४/१९ आसफ अली रोड,
नई दिल्ली–११०००२
सर्वाधिकार · सुरक्षित
संस्करण · प्रथम, २०१०
मूल्य · दो सौ रुपए
मुद्रक · भानु प्रिंटर्स, दिल्ली

APANA PARAYA *by* Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' Rs. 200.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2
ISBN 978-81-7315-889-6

दो शब्द

'समर्पण' (१९८३) हिंदी काव्य-संग्रह से अपनी साहित्य-यात्रा प्रारंभ करनेवाले डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने हिंदी साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास और यात्रा-वृत्त आदि विधाओं में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। हिंदी उपन्यास साहित्य में 'निशंक' ने 'मेजर निराला' (२००७) के माध्यम से दस्तक दी। इसके बाद इनके 'पहाड़ से ऊँचा' (२००७), 'बीरा' (२००८), 'निशांत' (२००८), 'छूट गया पड़ाव' (२००९) उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। 'अपना-पराया' डॉ. निशंक का छठा उपन्यास है।

'निशंक' के उपन्यासों की अंतर्वस्तु पर्वतीय क्षेत्र की विविध समस्याओं से संबंधित रही है। उनमें आंचलिकता, सांस्कृतिक जीवंतता, विकास और पिछड़ापन, ग्रामीण क्षेत्र की विविध समस्याएँ, परंपरा और प्रगति, गाँव और शहर के जीवन-मूल्यों में अंतर, शिक्षा और स्वास्थ्यगत विभेद, अभाव और गरीबी, यथार्थ और आदर्श, स्वदेश प्रेम, भाग्यवादिता और कर्म के प्रति आस्था आदि एक साथ चित्रित हुए हैं।

उनके सभी उपन्यास मूलतः सामाजिक उपन्यास हैं। 'अपना-पराया' उपन्यास निशंक की इसी सामाजिक प्रतिबद्धता की अगली कड़ी है। इस उपन्यास की कथा गढ़वाल के एक गाँव के निकट पनघट पर सुरेश और लक्ष्मी की परस्पर भेंट से आरंभ होती है। सुरेश महिमानंद और कमला की बेटी लक्ष्मी के रिश्ते हेतु उसे देखने जाता है। लक्ष्मी अपनी अन्य तीन बहिनों—विनीता, मीरा और अनीता में सबसे बड़ी है। लक्ष्मी उसे पसंद आ जाती है और भविष्य के सपने बुनता हुआ वह अपनी नौकरी पर चला जाता

है। सुरेश की माँ इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं होती। वह सुरेश का रिश्ता प्रधान की बेटी से कराना चाहती है। सुरेश की बहन रेणु और पिता चैतराम के सुरेश के पक्ष में होने पर भी माँ द्वारा इस रिश्ते को अस्वीकार कर दिया जाता है।

रिश्ते की अस्वीकृति भेज दिए जाने के बाद भी सुरेश लक्ष्मी से ही विवाह करना चाहता है और दुबारा विवाह की तिथि निश्चित करने सीला गाँव पहुँचता है। लक्ष्मी के घरवालों को भी सुरेश पसंद है; पर उसकी माँ कमला की इस रिश्ते की अस्वीकृति के बाद इस संबंध में उनकी सुरेश से बात करने की हिम्मत नहीं होती। लेकिन फिर भी सुरेश लक्ष्मी के घरवालों को विवाह की तिथि निश्चित करने हेतु पिताजी के आने की बात कहकर वहाँ से वापस चला आता है। काफी जद्दोजहद के बाद अंतत: नवरात्रों में सुरेश और लक्ष्मी की शादी तय हो जाती है। शादी के बाद लक्ष्मी के अपने ससुराल आते ही सुरेश अपने वैवाहिक जीवन के कुछ दिन व्यतीत कर वापस नौकरी पर चला जाता है। कुछ दिनों बाद वह पुन: घर आने को होता है, पर घर पहुँचने से पहले ही एक जीप एक्सीडेंट में वह मारा जाता है। लक्ष्मी पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ता है। सुरेश की मृत्यु का सारा दोष कमला लक्ष्मी के सिर मढ़ती है। लक्ष्मी गर्भ से है। सुरेश की मृत्यु के बाद उसे क्षण-प्रतिक्षण सास के ताने और खरी-खोटी सुननी पड़ती है, उसके अत्याचार सहने पड़ते हैं। सुरेश की बहन रेणु भी लक्ष्मी से किनारा कर लेती है। सुरेश और लक्ष्मी की कथा का यहीं अंत हो जाता है। सुरेश का भाई राजेश घर से कोई मतलब नहीं रखता। दूसरा भाई राहुल अभी बहुत छोटा है। लक्ष्मी जैसे-तैसे अपने दिन व्यतीत करती है। वह समस्त अत्याचारों को सहते हुए सुरेश के बेटे को जन्म देती है। लक्ष्मी के माता-पिता जहाँ बच्चे के जन्म से खुश होते हैं, वहीं लक्ष्मी के दुर्भाग्य पर आँसू बहाते हैं।

दु:खों और बीमारी से घुलकर पं. महिमानंद की मृत्यु हो जाती है। उनकी पुत्री अनीता को मौसी अपने साथ ले जाती है। विनीता का एक दुहाजू से ब्याह हो जाता है। लक्ष्मी का देवर राहुल पढ़ाई छोड़कर घर से भागकर एक कस्बे में ढाबे में काम करता है, जहाँ से इंजीनियर पांडे उसे घर का काम करने के लिए अपने घर ले जाते हैं। उसकी पढ़ाई के प्रति लगन देखकर इंजीनियर पांडे उसे पढ़ाते-लिखाते हैं। पढ़-लिखकर राहुल की नौकरी लग जाती है। वह जूनियर इंजीनियर बन जाता है। राहुल सदा अपने भतीजे

मानस की अच्छी पढ़ाई के लिए चिंतित रहता है। उसका भाई राजेश शहर में शोभना नाम की लड़की से शादी कर लेता है। रेणु की भी शादी हो जाती है। लक्ष्मी की हालत भी दिन-पर-दिन गिरती जाती है। रोग और शोक से एक दिन कमला के पति चैतराम का भी निधन हो जाता है। इंजीनियर पांडे राहुल का विवाह इंजीनियर गैरोला की सुशील और पढ़ी-लिखी बेटी रश्मि से कराना चाहते हैं, किंतु होनी को कुछ और ही मंजूर होता है। अनीता के पति सुधीर की मृत्यु के उपरांत मरणासन्न कमला अनीता का हाथ राहुल के हाथ में देकर सदा के लिए आँखें मूँद लेती है। यहाँ से राहुल के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ होता है।

इस उपन्यास की कथावस्तु में मुख्यत: दो कथाएँ अंतर्ग्रथित हैं—सुरेश और लक्ष्मी की कथा और राहुल-अनीता एवं रश्मि की कथा। उपन्यास में लक्ष्मी एक ऐसी पात्र है, जो इन दोनों कथाओं से आद्यंत जुड़ी रहती है। कथा नायक के निर्धारण में थोड़ी कठिनाई आती है, किंतु अंतत: राहुल का पक्ष भारी पड़ता है। माँ, भाभी, लक्ष्मी, प्रेमिका अनीता और मंगेतर रश्मि के बीच अंतर्द्वंद्व से जूझते राहुल के जीवन में अंतत: माँ के हृदय परिवर्तन की आदर्श विश्रांति ही प्रसादांत की राह बनती है। लक्ष्मी असंदिग्ध रूप से उपन्यास की नायिका कही जा सकती है। लक्ष्मी उपेक्षिता, प्रताड़िता, सर्वसहा, सहनशीला, आदर्श एवं संस्कारशील पर्वतीय बहू और कमला बुर्जुआ सास का प्रतिनिधित्व करती हैं। उपन्यासकार बड़े कौशल से पर्वतीय अभावमय जीवन, सामाजिक विसंगतियों, अनमेल विवाह, विधवा-समस्या, सास-बहू-संबंध, वर्तमान शहरी प्रभाव, शिक्षा-स्वास्थ्य-बिजली-पानी-सड़क आदि और अन्य कई ग्रामीण समस्याओं का चित्रण कर समाधान पाठक के ऊपर छोड़ देता है। कुछ समस्याओं—शैक्षिक आत्मनिर्भरता, संशोधित घराट योजना आदि का वह समाधान भी प्रस्तुत करता है।

इस उपन्यास में आंचलिक रंगों के झीने ताने-बाने विद्यमान हैं। स्थानीय शब्दावली—पंदेरा (पनघट), रैबार (संदेश), पिठाईं (तिलक-भेंट), थौल (मेला), सौरगृह (प्रसव कक्ष), परोठी (घी रखने का लकड़ी का बरतन) आदि शब्द, विभिन्न परिधान, मेले, विवाह की रस्में—गारी, हल्दी-उबटन आदि परंपराओं में लोक-जीवन के गहरे रंग उभरे हैं। संस्कृत की तत्सम एवं संश्लिष्ट शब्दावली के साथ ही, जनप्रचलित अरबी, फारसी और अंग्रेजी भाषा के शब्द भाषा-शिल्प को जीवंत बनानेवाले हैं। ग्रामीण मुहावरेदार और लोकोक्तिपरक

वाक्य-रचना उपन्यास के आंचलिक वैशिष्ट्य को उकेरती हैं। इस उपन्यास में आधुनिक उपन्यासों की दार्शनिक या वैचारिक बोझिलता और कथ्य-विहीनता नहीं, एक सहज-सरल प्रवाह और घटना-बाहुल्य है। चलचित्र की तरह पात्र आवश्यकतानुसार स्वयमेव सम्मुख उपस्थित होते जाते हैं और कथा-सूत्र को आगे बढ़ाते चलते हैं।

उपन्यास का शीर्षक 'अपना-पराया' मानवीय संबंधों और संवेदनाओं को उजागर करने में समर्थ है। आत्मीयता, विश्वास, आस्था और स्नेह-प्रेम के भाव पराए को भी अपना बना लेते हैं और इनके अभाव में अपना भी पराया-सा लगता है। उपन्यास में यह भाव भी व्यक्त हुआ है कि स्वजन कितना ही क्रूर, निर्दय, भाव-शून्य और ममत्व-रहित हो, कहीं-न-कहीं अंतस्तल में तारल्य भाव से संवलित होता है। कमला और लक्ष्मी दो पीढ़ियों के द्वंद्व की कहानी को भी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देती हैं। वर्तमान के रूप में खटते-खपते राहुल को 'मानस' के प्रतीक के रूप में भविष्य की उज्ज्वलता दिखलाई देना उपन्यास की प्रतीकात्मक सार्थकता है।

आशा है, हिंदी जगत् में डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' कृत यह उपन्यास पर्याप्त समादर प्राप्त करेगा।

अस्तु।

–प्रो. देव सिंह पोखरिया

आचार्य एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
कु.वि.वि.,
एस.एस.जे. परिसर,
अल्मोड़ा

अपनी बात

संवेदना साहित्य का 'मूल आधार' ही नहीं, 'आत्मा' भी है। जैसे उर्वरता बिना धरती 'बाँझ' है, वैसे ही संवेदना बगैर साहित्य निष्प्राण होता है। यही संवेदनशीलता हमें मानवीय मूल्यों एवं मानवीय रिश्तों से जोड़ती है और जीवन को उसकी समग्रता में अनुभव कराती है। साहित्य इसी वेदना, संवेदना, अनुभूति और अनुभवों से अनुप्राणित आया होता है। यही संवेदना साहित्य को सजग एवं सार्थक बनाती है।

जीवन-मूल्यों के लिए मेरे अंदर की छटपटाहट इसी संवेदना की देन है। यही संवेदना मुझे जन-जन से जोड़ती आई है, उनका सहयोगी और सहभागी बनाती आई है। मेरी रचनाओं का संबल और शक्ति यही जन-चेतना रही है। मुझे जनोन्मुखी एवं जन-सरोकारी रचनाओं के लिए यही संवेदना प्रेरित करती रही है। इसे ही मैं सच्चे साहित्य की सार्थकता मानता हूँ और इसी को समर्पित हूँ।

मेरा यह उपन्यास 'अपना-पराया' इसी संवेदना की बुनियाद पर खड़ा जीवन का वह कटु यथार्थ है, जो मुझे अंदर तक बुरी तरह कचोटता रहा है। इसके जरिए मैंने 'अपने-परायों' की सीमा में बाँधने की हमारी क्षुद्र मानसिकता को न सिर्फ कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की है, बल्कि इस सोच और दायरे पर सशक्त प्रहार करने का प्रयास भी किया है। साथ ही, इस बात पर जोर देने की कोशिश की है कि रिश्ते किसी सीमा या दायरे के मोहताज नहीं होते। ये तो मन की अतल गहराइयों से स्वत: उपजते हैं और नेह-नीर बनकर हृदयरूपी बादल से निस्स्वार्थ बरस पड़ते हैं। ये हमारे बनाए खाँचों में ही अगर

कैद होते, तो क्यों तिरस्कृत होकर भी पराए अपने हो जाते और अजीज़ होकर भी अपने पराए बन जाते?

यह संवेदना और अंततः मन का रिश्ता ही तो है, जिसके बूते राहुल जैसे पराए, निराश्रित बच्चे के लिए एक अनजान इंजीनियर साहब के भीतर बाप का धरम जाग उठता है, तो 'अपने-पराए' का धुर 'त्रिया-हठ' त्याग एक सनकी सास के अंदर माँ की ममता हिलोरें लेने लगती है। जिंदगी भर उलाहनों की शिकार रही बहू लक्ष्मी ही आखिरकार सच्ची बेटी साबित होती है और राहुल तो कई प्रतिमान स्थापित करता है। इसके अलावा और भी कई पात्र हैं, जो संवेदनाओं और जीवन-मूल्यों की वकालत करते हैं। इनमें से एक लक्ष्मी की माँ के जरिए 'संस्कार ही गरीब की पूँजी' होने का संदेश दिया गया है। आशा है, मेरे ये सारे प्रयास पाठकों को न सिर्फ रुचिकर लगेंगे, बल्कि झकझोरेंगे भी।

आज से लगभग २९ वर्ष पूर्व सन् १९८१ में मेरे द्वारा जोशीमठ में लिखे गए इस उपन्यास की पांडुलिपि को पुस्तक रूप में सुधी पाठकों तक पहुँचाने में कई मनीषियों का योगदान रहा है। उन सभी के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

–रमेश पोखरियाल 'निशंक'

एक

दुर्गम पहाड़ी पगडंडी से गुजरते हुए आधा मील की खड़ी चढ़ाई पार कर सुरेश ने गहरी साँस ली और एक पत्थर पर निढाल बैठ गया। जेब से रूमाल निकाला और माथे पर पानी की बूँदों की तरह टपटपाते पसीने को पोंछने लगा। तेज चलने के कारण उसका चेहरा तमतमा गया था। यों तो अब तक सुरेश लगभग तीन मील की दूरी पैदल तय कर चुका था, लेकिन इस चढ़ाई को चढ़ने के बाद अब तो साँसें धौंकनी की तरह चल रही थीं। गाँव के बड़े-बूढ़े बताते हैं कि पानी और जंगल जहाँ अच्छा मिला, पुराने लोग वहीं बस गए। फिर चाहे वह जगह ऊँची पहाड़ी चोटी पर ही क्यों न हो। किंतु अब न तो ये जंगल ही अपने रहे और न पानी के वे प्राकृतिक स्रोत ही। बस, रह गई तो ये दुर्गम खड़ी चढ़ाई, बंजर होते खेत-खलिहान और तेजी से वीरान होते घर-गाँव!

आगे नजर गई, तो देखा, रास्ता दो भागों में बँटा है। कौन सा रास्ता जाता होगा सीला गाँव को? किससे पूछे? मोड़ मुड़ते ही मुख्य रास्ते का अंदाजा लगाकर वह एक रास्ते पर बढ़ गया। आठ-दस कदम पर पंदेरा दिखाई दिया, जिस पर गाँव की बहू-बेटियों की भीड़ जमा थी और उनके हँसने-खिलखिलाने की आवाजें वातावरण में गूँज रही थीं।

सुरेश ने इधर-उधर देखा, लेकिन कोई और नजर नहीं आया तो वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाता पंदेरे की ओर चल दिया।

लगभग ग्यारह बजे का समय होगा। नाश्ता-पानी निबटाकर बहू-बेटियाँ इत्मीनान से पंदेरे पर जमा थीं। किसी के पास धोने के लिए कपड़ों का ढेर

था, तो कोई जूठे बरतन ही वहाँ ले आई थी। पीढ़ियों से बाँज बुरांश की शीतल जड़ों का ठंडा-मीठा पानी पिलाते आ रहे सीला गाँव के इस कुदरती जलधारे से एक आत्मीय रिश्ता भी तो बन गया था गाँववालों का।

अपनी सखी-सहेलियों-सा ही अजीज यह पंदेरा जहाँ गाँव की बहू-बेटियों के सुख-दु:ख का साक्षी है, वहीं प्रौढ़ व वृद्धाओं के अतीत की स्मृतियों का स्मारक भी है। हँसी-ठिठोली और चुहुलबाजी से लेकर गाँव-इलाके की घटनाओं पर चर्चा करने और कुछ पल सुकून से बिताने का यही तो उन सबका एकमात्र ठिया है।

इतने शोर में कोई उसकी आवाज सुनेगा भी!

इसी संकोच में सुरेश ने एक बार फिर इधर-उधर देखा कि शायद कोई और नजर आ जाए तो उसी से पूछ लूँ, पर वहाँ दूर-दूर तक कोई नहीं दिखा।

आखिरकार पंदेरे के और पास आकर उसने रास्ता पूछने की हिम्मत जुटाई; पर वही हुआ जिसका उसे अंदेशा था। उसकी आवाज पंदेरिनों के शोर में कहीं दब गई। उसे सामने खड़ा देख वे इतना तो समझ गईं कि कोई परदेसी है, जो कुछ पूछ रहा है।

उन्हें शरारत से अपनी ओर निहारते देख सुरेश सकपका गया।

'हे भगवान्! कहाँ फँस गया।' सुरेश मन-ही-मन बुदबुदाया और रूमाल निकालकर माथे पर चमक आई पसीने की बूँदें पोंछने लगा।

तभी उनमें से किसी ने कुछ कहा, जो सुरेश को तो नहीं सुनाई दिया, लेकिन वे सभी खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

इन सबसे मदद की कोई उम्मीद छोड़ सुरेश आगे बढ़ चला, लेकिन उन सबकी खिलखिलाहट उसका पीछा करती रही।

इसी भीड़ में शामिल थी लक्ष्मी, जो राख-गारे से अपनी गागर माँजकर पानी भरने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रही थी। किसी अपरिचित परदेशी के साथ धारे पर खड़ी महिलाओं का यह व्यवहार उसे कतई अच्छा नहीं लगा। न जाने क्या पूछना चाहता था वह हमसे? कितनी बुरी बात है किसी अपरिचित की इस तरह हँसी उड़ाना? क्या सोचेगा वो हमारे और हमारे गाँव के बारे में? अनजाने ही उसके मन में उस युवक के प्रति सहानुभूति उमड़ आई। साथ ही उसने सबको झिड़क भी दिया कि ऐसा बरताव अच्छा नहीं है।

देर होने का बहाना कर लक्ष्मी ने अपनी गागर भरी और तेजी से घर की

ओर चल दी। उसकी तेजी देख पीछे से सुमति भाभी ने कोई फिकरा कसा, जिसे सुनकर एक बार फिर सबकी खिलखिलाहट गूँज उठी; लेकिन लक्ष्मी ने सुना-अनसुना कर दिया। वह तो जल्दी से उस युवक के पास पहुँचकर उससे जानना चाहती थी कि उसे जाना कहाँ है।

इसी हड़बड़ी में गागर का पानी छलककर उसके बालों को भिगोता हुआ उसके चेहरे पर टपक रहा था। पानी की बूँदों पर पड़ती सूर्य की किरणें लक्ष्मी के चेहरे की आभा बढ़ा रही थीं।

सुरेश चलता-चलता अचानक ठिठक गया। उसे लगा, पीछे से किसी ने आवाज दी है। पीछे मुड़ा, तो देखा एक युवती सिर पर पानी की गागर लिये खड़ी है। 'उनमें से ही होगी, जो अभी पंदेरे पर खड़ी उसका मजाक उड़ा रही थीं।' सुरेश का मन वितृष्णा से भर उठा। वह पलटकर अपनी राह चलने को ही था कि युवती प्रश्न कर बैठी।

'कहाँ जाना है आपको?'

युवती के स्वर में सौम्यता थी। सुरेश के दग्ध चित्त को शांति महसूस हुई। पंदेरे पर खिल्ली उड़ाने को उसने भीड़ में हुई सहज सी प्रतिक्रिया मान कर अपने मन से निकालने का प्रयास किया।

'सीला गाँव का रास्ता कौन सा है?'

'किसके घर जाना है आपको वहाँ?'

'जोशीजी के, महिमानंद जोशीजी के।'

लक्ष्मी चौंकी। एक पल को उसके हाथ काँपे। सिर पर रखी गागर थोड़ी सी छलकी, लेकिन लक्ष्मी तुरंत सँभल गई।

यह तो उन्हीं के घर का रास्ता पूछ रहा है। कौन है और क्यों आ रहा है उनके घर?

लक्ष्मी के पिता महिमानंद जोशीजी पंडिताई करते थे। आस-पास के गाँवों से लोग उनके पास आते रहते थे। किसी को वर्षफल पुजवाना होता तो किसी को सत्यनारायण की कथा करवानी होती। नवरात्रों में तो उन्हें फुरसत ही नहीं मिलती। पता नहीं यह युवक कौन है और क्यों उनके पास जा रहा है? होगा कोई भी, उसे क्या? लक्ष्मी ने अपना सिर झटका, उसे रास्ता बताया और अपने पग धीमे कर दिए। सुरेश लंबे-लंबे डग भरता हुआ युवती के बताए रास्ते पर चल दिया। लक्ष्मी ने जानबूझकर अपनी चाल धीमी कर दी। इस अनजान युवक के बाद ही घर पहुँचना चाहती थी वह।

कुछ दूर जाने पर सुरेश को पीपल का बड़ा पेड़ नजर आया, जिस के नीचे चबूतरा बना था। उसके एक ओर मंदिर और दूसरी ओर पगडंडी थी। उसी पगडंडी पर दूसरा घर बताया गया था उसे जोशीजी का। सुरेश पगडंडी की ओर मुड़ गया।

कुछ ही देर बाद लक्ष्मी घर पहुँची तो माँ बाहर ही खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी।

'कहाँ थी इतनी देर से? कब से प्रतीक्षा कर रही हूँ।' लक्ष्मी के सिर से गागर उतारकर माँ लगभग खींचती हुई उसे अंदर ले गई।

अंदर पहुँचकर जो लक्ष्मी को पता चला, उससे तो उसके होश ही उड़ गए। यह तो वही लड़का है, जिसका रिश्ता उसके लिए आया था। लेकिन ये ऐसे ही अचानक बिना बताए क्यों आ गया? मन में सवाल उठा, लेकिन किससे पूछती? चुपचाप भीगे कपड़े बदलकर माँ के साथ चाय-नाश्ते की तश्तरी लेकर ऊपरवाले कमरे में चली गई, जहाँ वह युवक उसके पिता के साथ बैठा था।

क्या सोच रहा होगा वह उसके बारे में? पंदेरे में और भी तो लड़कियाँ थीं। क्या जरूरत थी उसको दयाभाव से विगलित हो उसके पीछे जाने की? इतनी भीड़ में तो उसे नहीं पहचानता वह, लेकिन अब तो पहचान ही लेगा।

लेकिन दूसरे ही पल उसने सोचा, क्या बुरा किया उसने? एक अनजान, अपरिचित यात्री को उसके गंतव्य का मार्ग सुझाया। अगर इसे वह उसकी वाचालता समझे, तो वह क्या कर सकती है?

इसी उधेड़बुन में डूबती-उतराती लक्ष्मी माँ के साथ ऊपरी मंजिल में स्थित अपने घर की बैठक में प्रविष्ट हुई।

'ये है मेरी बड़ी बेटी लक्ष्मी।' पिता ने कहा और लक्ष्मी चाय-नाश्ते की तश्तरी मेज पर रख एक ओर बैठ गई। लज्जावश उसकी नजरें झुकी हुई थीं।

सुरेश ने धीरे से सिर उठाकर देखा। एक पल तो वह चौंक गया, लेकिन शीघ्र ही उसने अपने भावों पर काबू पा लिया। यह तो वही लड़की है, लेकिन है अच्छी कलाकार। एक बार भी ये प्रकट नहीं होने दिया कि अपने ही घर का रास्ता बता रही है। सुरेश मन-ही-मन मुसकरा दिया और लक्ष्मी! उसका तो चेहरा ही सुर्ख हो आया। थोड़ी ही देर में माँ का इशारा पाकर, वह धीरे से कमरे से बाहर निकल गई और सीढ़ियाँ उतरकर रसोई के एक कोने में दुबक कर बैठ गई।

'बड़ी खुश लग रही है। लड़का पसंद आ गया क्या?' छोटी बहन विनीता ने छेड़ा तो लक्ष्मी सकपका गई। सुर्ख बुराँश की सी लालिमा लक्ष्मी के चेहरे पर खिल आई।

विनीता को झूठा गुस्सा दिखाते हुए लक्ष्मी ने आँखें तरेरीं, लेकिन विनीता पर इसका कोई असर न हुआ।

पिछले एक वर्ष से माता-पिता लक्ष्मी के लिए उपयुक्त रिश्ते की तलाश में थे। कहीं जन्मपत्री न जुड़ती तो कहीं लेन-देन पर बात अटक जाती तो कहीं लड़केवालों को लक्ष्मी पसंद न आती। बेचारी लक्ष्मी पिछले कुछ समय से यही मानसिक यंत्रणा झेल रही थी। एक पल को आशा की किरण दिखाई देती, तो दूसरे ही पल माता-पिता का उतरा हुआ चेहरा देखकर वह समझ जाती कि ये रिश्ता भी…!

इसी कारण लक्ष्मी को धीरे-धीरे इन रिश्तों से वितृष्णा-सी होने लगी थी। रिश्ते की बात सुनते ही उसका मन कटुता से भर जाता था। उसका मन होता कि जाकर माँ-पिताजी से कह दे कि नहीं करना उसे विवाह। उसके रिश्ते को लेकर माता-पिता के चेहरे पर स्थायी तनाव की रेखाएँ उसे स्पष्ट दिखाई देती थीं, लेकिन जिस समाज में वह रह रही थी, वहाँ क्या यह संभव था कि लक्ष्मी अविवाहित रह पाती। जहाँ लड़कियों के जीवन की एकमात्र सफलता उनका घर बस जाना ही मानी जाती थी, वहाँ क्या कोई उसके अविवाहित रह जाने की बात मानना तो दूर, सुनता भी नहीं? लेकिन इस मनोदशा के चलते भी मन के किसी कोने में चोरी से इस नवयुवक ने अपनी जगह लक्ष्मी के मन में बना ही ली।

जोशीजी के बहुत आग्रह के बाद भी सुरेश दोपहर के भोजन से पहले ही अपने गाँव के लिए निकल गया। अगले ही दिन उसे अपनी नौकरी पर मेरठ वापस लौटना था।

पंडित महिमानंदजी की चार बेटियाँ थीं, जिनमें लक्ष्मी सबसे बड़ी थी। गाँव में आठवीं तक का स्कूल था, सो लक्ष्मी और विनीता दोनों आठवीं पास कर चुकी थीं और अब घर-बाहर के काम में माँ का हाथ बँटा रही थीं। विनीता से छोटी मीरा छठी में और सबसे छोटी अनीता चौथी कक्षा में पढ़ रही थी।

थोड़ी-बहुत खेती और पंडिताई के बल पर ही जोशीजी अपने परिवार की गुजर-बसर कर रहे थे। लक्ष्मी अब अठारह वर्ष की हो चुकी थी, तो

माता–पिता को उसके विवाह की चिंता सताने लगी थी। 'लक्ष्मी का रिश्ता जुड़ जाए तो फिर दूसरी के बारे में भी सोचें।' स्वयं पंडित होने के कारण वे विवाह संबंधों में जन्मपत्री के मिलान को अत्यावश्यक मानते थे। इसलिए रिश्ते की बात तभी आगे बढ़ाते जब जन्मपत्री मिल जाती। सुरेश और लक्ष्मी की जन्मपत्री का मिलाप भी वह कर चुके थे।

सुरेश के जाते ही पति–पत्नी दोनों आशा–निराशा के भँवर में डूबते–उतराते विचार–विमर्श में खो गए। सुरेश उन दोनों को ही बहुत पसंद आया था, लेकिन उसके मन में क्या है, ये तो वही जाने। कहकर तो गया है कि माता–पिता से पूछकर जवाब भिजवाएगा। लेकिन उन्हें यह भी खबर मिली थी कि लड़के की माँ तेज स्वभाव की हैं और घर में उन्हीं की चलती है। पता नहीं उनका क्या निर्णय होता है!

□

दो

सीला गाँव से वापस लौटते हुए सुरेश रास्ते भर लक्ष्मी के बारे में ही सोच रहा था। लक्ष्मी का व्यवहार उसके मन को छू गया था। पंदेरे पर खड़ी उस खिलंदड़ी भीड़ में एक वही तो थी, जिसने उसकी मदद करने की कोशिश की थी। उसके माता-पिता भी सरल और स्नेही स्वभाव के लोग हैं। अपनी पारिवारिक परिस्थितियाँ और गरीबी इत्यादि सब तो सीधे-सीधे बता दी थी उन्होंने। कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं रखा।

लेकिन अगले ही पल अपनी माँ के शब्द उसके कानों में गूँजने लगे।

'अरे, उस चार-चार बेटियों के बाप के यहाँ क्यों जा रहा है रिश्ता माँगने?'

सुरेश की माँ के पास न जाने कहाँ से जोशीजी की तथाकथित दरिद्रता का समाचार पहले ही पहुँच चुका था और वह तो इस रिश्ते के एकदम खिलाफ हो गई थीं। उनकी निगाह में नौकरी करनेवाले बेटे की तो अहमियत ही बहुत अधिक थी। अच्छे खाते-पीते परिवारों से रिश्ते मिल जाएँगे उसे तो, ऐसी उनकी राय थी।

पता नहीं माँ को क्यों लगता है कि हम लोग बहुत बड़े हैं। वह जाने क्यों भूल जाती हैं कि एक साधारण सी नौकरी में उसके पिता भी छह लोगों के परिवार को किसी तरह पाल रहे हैं। इसी कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते उसे दसवीं की पढ़ाई के बाद मेरठ की एक फैक्टरी में छोटी सी नौकरी पर संतोष करना पड़ा था। छोटा भाई राजेश बारहवीं की प्राइवेट परीक्षा की तैयारी कर रहा था तो बहन रेणु घर के काम-काज में माँ का हाथ बँटा रही

थी। दो वर्ष पहले ही आठवीं पास किया था उसने। सबसे छोटा राहुल छठी में पढ़ रहा था। लक्ष्मी और उसके परिवार को देखकर वह समझ गया था कि लक्ष्मी उसके परिवार में रच-बस जाएगी, लेकिन उसकी समस्या अब अपनी माँ को समझाने की थी।

मन-ही-मन माँ को मनाने की जुगत सोचते हुए सुरेश लंबे-लंबे डग भरता हुआ, इसी उधेड़बुन में अपने घर का रास्ता तय करता चला गया।

जब वह गाँव पहुँचा, तो घुप्प अँधेरा घिर आया था। गाँव की सीमा पर स्थित मंदिर से आरती के स्वर गूँज रहे थे। साथ ही घंटियों की मधुर-मधुर ध्वनि सारे वातावरण को संगीतमय बना रही थी।

मन-ही-मन अपनी इष्ट देवी का स्मरण करते हुए सुरेश घर पहुँचा। हाथ-मुँह धोकर जैसे ही घर के अंदर घुसा कि रेणु से सामना हो गया।

'भाई, कैसी लगी भाभी?'

उसके स्वर की आतुरता भाँप कर भी सुरेश बोला तो कुछ नहीं, लेकिन अपने चेहरे के भाव न छुपा पाया। मुसकराता हुआ अपने कमरे में चला गया।

'भैया, आपके चेहरे की मुसकराहट बता रही है कि लड़की पसंद आ गई आपको।' रेणु के चेहरे पर प्रसन्नता झलक आई। घर में विवाह समारोह होगा, यही कल्पना उसकी प्रसन्नता को और बढ़ा गई।

उसके पीछे-पीछे माँ भी कमरे में चली आईं।

'जरूरी नहीं है, जो लड़की देखी जाए, उसे हाँ ही कह दी जाए।' माँ ने रेणु को टोकते हुए अपनी मंशा जता दी।

सुरेश जानता था कि माँ क्या चाहती हैं। माँ का तर्क था कि सुरेश उन सभी लड़कियों को देख ले, जिनके रिश्ते आए हैं और बाद में घरवालों की सहमति से सोच-विचारकर अंतिम निर्णय ले। लेकिन सुरेश को ऐसी नुमाइश बिलकुल पसंद नहीं थी। इसीलिए लक्ष्मी को देखने भी वह अकेले ही बिना बताए जा पहुँचा था। अब जब उसे लड़की पसंद है, तो फिर बाकी लड़कियों को देखने जाने का क्या औचित्य?

बोला–'माँ, मुझे तो यही लड़की पसंद है। परिवार भी अच्छा है, अब और…'

'लेकिन मुझे तो बिलकुल पसंद नहीं।' वह बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि माँ झल्लाकर बुरी तरह बोल पड़ी।

सुरेश सोचने लगा कि कह दे माँ से साफ-साफ कि उसे इस तरह

बार-बार की नुमाइश पसंद नहीं। आखिर उसकी भी तो एक बहिन है। अगर उसके साथ भी ऐसा ही हो तो···! पर बात और न बढ़े, इसलिए उसने चुप रहने में ही भलाई समझी।

दरअसल, सुरेश के लिए आए इन्हीं रिश्तों में से एक पड़ोसी गाँव के प्रधानजी की बेटी सुशीला का रिश्ता भी था। खाते-पीते खानदानी लोग, ढेर सारी जमीन-जायदाद। प्रधानजी के घर-परिवार का वैभव देखकर सुरेश की माँ का मन इस रिश्ते में कहीं अटक गया था। एक लालच यह भी था कि बेटे के विवाह में मिला दान-दहेज बेटी रेणु के विवाह में काम आ जाएगा।

माँ की इस सोच से सुरेश बुरी तरह परेशान था। क्यों उसकी बोली लगाना चाहती है माँ? इतने गए, गुजरे भी नहीं हैं वे कि अपनी एक बहन का विवाह भी न कर सकें।

सुरेश और माँ की बात चल ही रही थी कि उनकी बातें सुनकर सुरेश के पिता भी दोनों के वार्तालाप में शामिल हो गए। उनके आने से सुरेश को बल मिला और उसने लक्ष्मी के बारे में अपनी राय पिता के सामने रख दी।

सरल स्वभाव के पिता माँ से बहस में कभी न जीत पाते। कुछ ही देर बाद वे समर्पण कर देते और विजय-दर्प से मुसकराती माँ अपनी बात मनवा कर ही दम लेती।

आज भी माँ पिता की बात सुनेगी या नहीं, सुरेश नहीं जानता; लेकिन पिता उसका पक्ष अवश्य लेंगे, यह विश्वास था उसे।

जब बाप-बेटे दोनों ने मिलकर इसी रिश्ते के लिए हिमायत करनी आरंभ की तो माँ को लगा कि वह सबके बीच अकेली पड़ गई हैं।

'जैसा तुम ठीक समझो, वैसा करो।' एक ठंडी साँस लेकर माँ ने भी जैसे-तैसे विवाद समाप्त किया और उठ खड़ी हुईं।

आखिरकार तय हुआ कि कुछ ही दिनों में सुरेश के पिता जोशीजी के घर जाकर रिश्ता पक्का कर आएँगे और लगे हाथ विवाह के लिए शुभ मुहूर्त भी निकाल आएँगे।

भविष्य की सुनहरी कल्पनाओं में खोया सुरेश खुशी-खुशी अपनी नौकरी पर मेरठ शहर लौट आया। माँ के अलावा इस निर्णय से घर में सब खुश थे। लेकिन माँ के हाव-भाव से ऐसा लग रहा था, मानो वह जोर-जबरदस्ती इस खुशी में शामिल हो रही हैं।

लेकिन सुरेश आश्वस्त था–'माँ लक्ष्मी को देखेंगी, तो उनकी सारी नाराजगी दूर हो जाएगी।'

इधर, पंद्रह–बीस दिन बाद पिता की चिट्ठी आई तो सुरेश ने उलट–पलट कर एक–एक शब्द कई बार पढ़ डाला, लेकिन चिट्ठी में जो कुछ वह पढ़ना चाहता था, वह कहीं न था। वह रिश्ते के पक्के होने की सूचना और उससे भी अधिक विवाह की तिथि को लेकर उत्सुक था। अपने इस उतावलेपन पर उसे हँसी भी आ गई। अगले माह दो–तीन दिन के लिए गाँव तो जाना ही है। तभी पता चल जाएगा कि क्या हो रहा है। उसने मन को समझाया।

कुछ दिनों बाद सुरेश गाँव पहुँचा। सभी लोग इधर–उधर की बातें करते रहे। उसकी नौकरी, उसकी छुट्टियाँ और अन्य हालचाल; लेकिन उसकी शादी, रिश्ते की कोई चर्चा ही नहीं। घर में तो अजीब सी खामोशी पसरी हुई थी। उसकी बेचैनी बढ़ गई। पर वह भी पूछे तो पूछे कैसे?

रात को रेणु ने उसे अकेला पाकर बात छेड़ दी।

'माँ ने उस रिश्ते के लिए मना कर दिया शायद।'

'लेकिन वे तो मान गई थीं। फिर तुझे कैसे पता कि मना कर दिया?' सुरेश के स्वर में आश्चर्य था। माँ ऐसा भी कर सकती हैं, उसने सपने में भी न सोचा था। पर रेणु ने जो कुछ बताया उसे सुन सुरेश भौंचक्का रह गया।

इतना सब होने के बाद भी माँ उसका विवाह केवल दान–दहेज की खातिर प्रधानजी की बेटी से ही कराना चाहती थीं। तभी तो एक दिन छोटे बेटे के साथ प्रधानजी के घर तक भी हो आईं। इसी बात को लेकर अपने पति से बहस भी बहुत हुई थी उनकी।

माँ के इस एकतरफा निर्णय से सुरेश तमतमा उठा था। लक्ष्मी और उसके माता–पिता का चेहरा उसकी आँखों के आगे घूम गया। आखिर क्या कमी है उसमें? सिर्फ यही कि वे लोग गरीब हैं। लेकिन इसकी भी क्या गारंटी है कि पैसेवाले घर की लड़की के साथ वह सुखी रह पाएगा!

उसका मन विद्रोह पर उतर आया, लेकिन बड़ा बेटा होने की मर्यादा उसके आड़े आ रही थी। क्या करे वह? पिता उसके पक्ष में हैं। क्या उनसे बात करे? कितनी मदद कर पाएँगे वे उसकी? इसी उधेड़बुन में साँझ ढल आई। रात्रि भोजन के बाद माँ ने बात करने की इच्छा जाहिर की तो सुरेश सफर की थकावट का बहाना बनाकर चुपचाप लेट गया। जानता था वह कि माँ क्या बात करना चाहती हैं। कहेंगी, 'तेरा रिश्ता प्रधानजी की बेटी के साथ

तय कर दिया है। जाकर उसे देख आ। बहुत अच्छा घर है...।' वगैरह-वगैरह।

माँ को अपनी बात कहने का मौका दिए बिना ही सुरेश अपनी बात कहना चाहता था। लेकिन कैसे? यही सोचते-सोचते उसकी आँख लग गई।

सुबह उठा तो मन आत्मविश्वास से भरा था। नाश्ते के बाद दोस्तों से मिलने के बहाने सुरेश घर से निकल गया। घर के बड़ों की बात की अवहेलना आज तक कभी नहीं की थी उसने। उसके स्वभाव और अनुशासन के उदाहरण दिए जाते थे घर-घर में; लेकिन इस बार वह अपनी जिद पर उतर आया था।

□

तीन

आज फिर पुरानी स्मृतियाँ ताजा हो आईं। आधा मील की खड़ी चढ़ाई के बाद सुरेश फिर उसी पंदेरे के पास खड़ा था। आज भी वहाँ पर उतनी ही भीड़ थी, लेकिन आज उसे वहाँ पर रुककर किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं थी। आगे का रास्ता अब अनजान नहीं था उसके लिए।

कनखियों से उसने धारे पर खड़ी भीड़ की ओर देखा। क्या लक्ष्मी आज भी इसी भीड़ में खड़ी होगी? होगी भी, तो क्या उसने सुरेश को देखा होगा? देखा होगा, तो क्या पहचान गई होगी? ऐसे ही कई प्रश्न मन में लिये सुरेश तेजी से पंदेरे की उस भीड़ को पार करता हुआ अपने गंतव्य की ओर बढ़ चला।

जोशीजी के घर के द्वार पर पहुँचकर सुरेश ठिठककर खड़ा हो गया। माँ का चेहरा आँखों के आगे घूम गया। क्या प्रतिक्रिया होगी माँ की, यह जानकर कि उनके लाख मना करने के बाद भी उनका बेटा अपना रिश्ता स्वयं ही पक्का कर आया है। अगले ही पल अपना मन कड़ा करके वह सीढ़ियाँ चढ़ गया।

जोशीजी वहीं तिबारी में किसी की जन्मपत्री पर ध्यान लगाए बैठे थे। सुरेश को देखकर चौंके। जिस घर से रिश्ते के लिए 'ना' हो गई, उसी घर का लड़का आज क्यों एक बार फिर द्वार पर खड़ा है? जिन जख्मों को भुलाकर एक बार फिर नए सिरे से बेटी के लिए उन्होंने रिश्ता तलाशना आरंभ किया था, वे जख्म आज हरे हो आए।

जोशीजी ने सुरेश को बैठने का संकेत किया। दोनों बातों का सिरा

तलाशने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन समझ में नहीं आ रहा था कि बात कहाँ से शुरू की जाए?

'आज कैसे आना हुआ?' बात शुरू करते हुए आखिर जोशीजी ने ही उसके आने का कारण पूछ लिया।

क्या उत्तर दे सुरेश? जिस रिश्ते के लिए माँ ने मना कर दिया, वह उसे फिर से जोड़ने आया है! क्या समझेंगे जोशीजी? लेकिन बताना तो था ही।

'जी, मैं विवाह का दिन निश्चित करवाने आपके पास आया था।' सुरेश अटकते हुए बोला। इसके अलावा क्या कहे, उसकी समझ में नहीं आया।

'विवाह का दिन निश्चित करवाने! अच्छा, तो इसका रिश्ता कहीं और तय हो गया और ये जले पर नमक छिड़कने के लिए अपने विवाह का दिन भी मुझसे ही निश्चित करवाना चाहता है।' उसकी निर्लज्जता पर मन-ही-मन उन्हें क्रोध तो बहुत आया, लेकिन अपना क्रोध दबाते हुए उन्होंने औपचारिकतावश सुरेश की भावी पत्नी और उसके माता-पिता के बारे में पूछ लिया।

'कहाँ रिश्ता तय हुआ है आपका?'

'क्या कह रहे हैं आप?' सुरेश उनका मतलब समझ न पाया।

'आप ही के यहाँ तो रिश्ते के लिए 'हाँ' की है मैंने।' जल्दी में उसने अपनी बात भी कह दी।

'बेटा, तुम्हारे हाँ कहने से क्या होता है, तुम्हारे माता-पिता तो ना कह चुके हैं।'

बैठक में किसी की आवाज सुन पंडिताइन पानी का लोटा हाथ में लिये ऊपर चली आई थीं, लेकिन सामने सुरेश को बैठा देखकर वह वहीं ठिठककर खड़ी हो गईं। सुरेश के मुँह से रिश्ते की बात सुनते ही उनसे रहा न गया और बोल उठीं–'तुम्हारे माता-पिता ने तो रैबार भेजकर साफ मना कर दिया था।'

'नहीं-नहीं, अवश्य कोई गलतफहमी हुई है। मैंने तो पिताजी को दिन पक्का करने को कह दिया था।' सुरेश ने तुरंत सफाई पेश की और माँ द्वारा भेजी गई अस्वीकृति से भी अनजान बन गया।

'बेटा, रिश्ता संयोग से होता है और बड़े-बूढ़ों के आशीर्वाद से फलता-फूलता है। यदि तुम्हारे माता-पिता को यह रिश्ता मंजूर नहीं तो फिर हमें भी मंजूर नहीं।'

पंडिताइन का दो-टूक जवाब सुनकर सुरेश की रही-सही हिम्मत भी जाती रही। ठीक ही तो कह रही है वह। यह रिश्ता सिर्फ लक्ष्मी और सुरेश

का नहीं, बल्कि दो परिवारों का है और अगर परिवार आपस में न जुड़ पाएँ तो ऐसा रिश्ता किस काम का? अपने माता-पिता के प्रति भी दायित्व है उसका और इस परिस्थिति में लक्ष्मी और उसके परिवारवाले भी क्यों राजी होंगे उससे विवाह करने को। लेकिन बात तो सँभालनी ही थी, वरना माँ तो प्रधानजी की बेटी से उसका रिश्ता करके ही मानेंगी। उसने किसी तरह अपने को सँभाला।

'ऐसा नहीं है, पिताजी ही आने वाले थे, लेकिन उन्हें छुट्टी नहीं मिल पाई।' सुरेश सफेद झूठ बोल गया, क्योंकि परिस्थिति के अनुसार उसे यही ठीक लगा। पिता के शीघ्र ही पंडितजी से मिलने की बात कहकर सुरेश लौट आया।

'कह तो आया है कि पिता को भेजेगा, लेकिन यह संभव भी हो पाएगा क्या? अभी तो यह खबर सुनकर माँ ही घर को सिर पर उठा लेंगी। लेकिन इस बार वह भी नहीं झुकेगा। आखिर उसकी जिंदगी का सवाल है।' सुरेश रास्ते भर सोचता रहा।

सुरेश के जाते ही पंडितजी और पंडिताइन सोच में पड़ गए। जिस घर से एक बार रिश्ते के लिए मना हो गया हो, उसी घर में फिर से रिश्ता जोड़ना ठीक होगा क्या? उनकी बेटी क्या ऐसे में सुखी रह पाएगी? लड़के के माता-पिता ने माना दबाव में आकर शादी के लिए 'हाँ' कर भी दी तो भी क्या वे लक्ष्मी को मन से अपना पाएँगे?

ऐसे ही कई प्रश्न उनके मन में घूम रहे थे, लेकिन जवाब कोई नहीं था। सोच-विचार कर दोनों ने यही निर्णय लिया कि यदि सुरेश के माता-पिता के आने से पहले लक्ष्मी के लिए कहीं और से रिश्ता आ गया, तो वे इनकार नहीं करेंगे।

यद्यपि सुरेश उन्हें पसंद था और बेटी की आँखों में भी इस रिश्ते के लिए मौन स्वीकृति उनकी पारखी निगाहों से छिपी नहीं थी, लेकिन होनी उनके वश में नहीं थी।

अच्छा हुआ, लक्ष्मी घर पर नहीं थी। सुबह से ही आज वह जंगल में लकड़ी लेने चली गई थी। पता नहीं इस बात का उसके मन पर क्या असर पड़ेगा, लेकिन ये बातें छिपती हैं भला! दिन में लकड़ी का बड़ा सा गट्ठर सिर पर लादे जैसे ही लक्ष्मी घर लौटी, छोटी बहन ने सुरेश के आने की खबर बताने में एक पल भी न लगाया।

सुरेश! पंदेरे पर महिलाओं की भीड़ के सामने पसीना पोंछता, सकपकाया -सा चेहरा लक्ष्मी की आँखों के आगे घूम गया। सुरेश के माता-पिता को वह स्वीकार्य नहीं, यह जानने के बाद सुरेश का खयाल ही अपने मन से निकाल दिया था उसने।

'आज फिर क्यों आया था वो यहाँ पर?

'शादी करना चाहता है तुझसे।' उसकी शंका का निवारण विनीता ने तुरंत ही करते हुए बता दिया।

'शादी करना चाहता है? क्या समझा है उसने मुझे? एक बार माँ-बाप मना करते हैं तो दूसरी बार बेटा 'हाँ' करने चला आता है। गुड्डे-गुड़िया का खेल है क्या?' अपमान और क्षोभ से लक्ष्मी का चेहरा तमतमा गया।

माता-पिता से इसकी चर्चा कर सके, इतनी हिम्मत नहीं थी उसकी। उसकी इस बात को निर्लज्जता ही समझा जाता। इसलिए उसने घर-परिवार की मान-मर्यादा के हित में अपने आपको भाग्य के सहारे छोड़ देना ही उचित समझा।

□

चार

'दो दिन के लिए तो घर आया है और उस पर भी सुबह से न जाने कहाँ गायब है। अरे, घर का बड़ा लड़का है। अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेगा तो कैसे चलेगा।' सुरेश की माँ कमला बड़बड़ाए जा रही थी।

साँझ ढलने को आई थी और सुरेश का कहीं पता न था। उसके पिता चैतरामजी छज्जे पर बैठे अस्त होते हुए सूर्य का सौंदर्य निहार रहे थे। चहचहाती हुई चिड़ियों के झुंड अपने-अपने ठिकाने की ओर लौट रहे थे और चीड़ व देवदार के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से छनती हुई सूर्य की सुनहरी किरणें साँझ की आभा को बढ़ा रही थीं।

'कहाँ गया होगा सुरेश?' अब उन्हें भी चिंता होने लगी थी, लेकिन पत्नी की बड़बड़ाहट को सुनकर भी अनसुना कर दिया उन्होंने।

उनकी चुप्पी ने कमला के गुस्से को बढ़ाने में आग में घी का काम किया। अब सुरेश को छोड़ उसका निशाना चैतरामजी थे।

'बच्चे मनमानी करने लगे हैं और एक आप हैं कि कुछ कहते ही नहीं। मैं ही कब तक कहती रहूँ और सबकी बुराई मोल लेती रहूँ।'

'आ जाएगा, क्यों चिंता कर रही है? बच्चा तो नहीं है वह अब।' अपनी चिंता को मन में ही रखकर उन्होंने पत्नी को सहारा दिया।

कमला का बड़बड़ाना फिर भी कम नहीं हुआ। ये तो बच्चों को कुछ कहते नहीं, उसे ही नियंत्रण रखना पड़ता है उन पर। डाँटती है तो बुरी भी बनती है बच्चों की। बच्चों की निगाह में तो उनके पिता इस दुनिया के सबसे अच्छे इनसान हैं।

उसका बड़बड़ाना चल ही रहा था कि सुरेश चुपके से आँगन में आ पहुँचा और एक कोने में रखी बालटी से पानी निकाल हाथ-मुँह धोने लगा। माँ की नजर उस पर पड़ी, तो वह नाराज हो उठी–

'कहाँ गया था तू? दो दिन के लिए आया है और एक पूरा दिन यार-दोस्तों के साथ गुजार दिया। इधर बैठ, जरूरी बात करनी है तुझसे।' माँ ने रेणु को आवाज देकर चाय बनाने को कह दिया।

सुरेश समझ गया था कि माँ क्या जरूरी बात करना चाहती है। माँ अपनी बात कहे, उससे पहले ही आज उसे अपनी बात कहनी होगी, वरना लक्ष्मी के माता-पिता को दिया हुआ उसका आश्वासन झूठा पड़ जाएगा।

हाथ-मुँह पोंछकर आँगन की मुँडेर पर ही बैठ गया सुरेश।

'माँ, मैं सीला गया था।' बिना एक पल गँवाए वह बोला।

'सीला!' माँ चौंकी, 'क्यों गया था वहाँ?'

'जोशीजी से मिलने।'

'अरे, लेकिन क्यों?'

'उनसे कह आया हूँ कि आनेवाले नवरात्रों में पिताजी जाकर मेरी शादी का दिन निश्चित कर आएँगे।'

माँ एकटक सुरेश की ओर निहार रही थी। क्या हो गया है इसे? कहाँ से इतनी हिम्मत आ गई है इसमें, जो हमसे पूछे बिना इतना बड़ा निर्णय ले लिया।

छज्जे पर बैठे पिता की आँखों में सुरेश की बात सुनते ही चमक उभर आई। सिर्फ गरीब परिवार होने के कारण रिश्ता ठुकराना तो उन्हें भी बहुत अखरा था। पत्नी से बहस भी हुई, लेकिन अंततः वही हुआ, जो सदा से होता आया था। उस दिन भी पत्नी अपनी बात मनवाने में सफल हो गई थी और चैतरामजी ने हमेशा की तरह हथियार डाल दिए थे।

पत्नी का अगला पैंतरा क्या होगा, यही अनुमान लगा रहे थे चैतरामजी। साथ ही मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि बेटा माँ से अपनी बात मनवाने में सफल हो जाए।

'ये नहीं हो सकता। मैंने प्रधानजी की बेटी के लिए 'हाँ' कर दी है। तेरा रिश्ता वहीं होगा।' कमला के स्वर में दृढ़ता थी।

'लेकिन मुझसे पूछे बिना? मैं भी तो लक्ष्मी के लिए 'हाँ' करके गया था न?'

'हम दुश्मन नहीं हैं तेरे। बुरा नहीं चाहेंगे कभी।'

थोड़ी देर दोनों की बहस चलती रही। कमला ने माता-पिता की इज्जत और उनके वचन की दुहाई दी तो सुरेश ने अपने जीवन की। दोनों अपनी-अपनी बात पर अडिग थे, लेकिन अंततः कमला अपना अंतिम निर्णय सुनाकर उठ खड़ी हुई।

'तेरी शादी तो वहीं होगी, जहाँ मैंने कह दिया। माता-पिता होने के नाते हमारा भी कुछ हक है तुझ पर।'

यह कैसा हक जता रही है माँ? हो सकता है, सुशीला बहुत अच्छी लड़की हो; इस बात से कब इनकार था उसे; लेकिन लक्ष्मी को सिर्फ उसकी गरीबी के कारण अस्वीकार करना, यह तो अन्याय ही है।

'ठीक है माँ, तुम जैसा चाहो, वैसा करो। मैं कल सुबह वापस जा रहा हूँ। इसके बाद कब आऊँगा, पता नहीं।' सुरेश के स्वर में गहरी निराशा थी। कितने विश्वास से कह आया था वह जोशीजी को कि उसके पिता आकर विवाह की शुभ तिथि निश्चित कर जाएँगे।

उसे अपने आप पर क्रोध आने लगा। माँ का स्वभाव जानते हुए भी क्यों जोशीजी की आशाओं को पुनर्जीवित करने गया वह? अब तक तो वे बेचारे उस प्रकरण को भूल भी चुके थे। कहीं का नहीं छोड़ा माँ की जिद ने उसे।

चैतरामजी भी पत्नी का आदेशात्मक स्वर सुन चुके थे। उन्हें लगा कि एक बार फिर वही होने वाला है जो वह चाहेगी। अभी तक वे इस वार्तालाप का आनंद ले रहे थे, लेकिन अंततः निराश हो छज्जे से उठकर कमरे की ओर जाने ही लगे थे कि सुरेश का निराशा भरा स्वर सुनते ही रुक गए।

अपनी बात कह सुरेश उठ खड़ा हुआ, तो कमला ने उसे बिठा दिया और स्वयं भी उसके बगल में बैठ गई।

'चाहता क्या है तू?'

कमला लाख जिद्दी हो, लालची भी हो; लेकिन आखिर थी तो माँ ही। जिस बेटे के लिए सबकुछ कर रही है, वही कल अगर घर नहीं आया, तो उसके लिए भला क्या रह जाएगा?

सुरेश चुप रहा। माँ जानबूझकर क्यों अनजान बन रही है। जानती तो है कि क्या चाहता है वह। बेटे को चुप देखकर चैतरामजी से नहीं रहा गया। कमला थोड़ी कमजोर पड़ी थी, अब तो इस समय ही अपनी बात कहना ज्यादा ठीक था।

‘बार-बार एक ही बात क्यों पूछ रही हो? आखिर हम उसी की खुशी के लिए तो कर रहे हैं ये सब।’

एक ओर पिता का सहारा, तो दूसरी ओर माँ का पुत्र-प्रेम। उचित समय भाँपकर सुरेश ने भी अपनी बात एक बार फिर दोहरा दी।

बेटे का हठ देखकर अंततः कमला ने हथियार डाल दिए। तय हुआ कि किसी शुभ दिन पर पति-पत्नी दोनों जाकर लक्ष्मी को देख आएँगे और विवाह का दिन भी निश्चित कर आएँगे।

सुरेश प्रसन्न था। आखिर अपनी बात मनवाने में वह सफल जो हो गया था। चैतराम भी बहुत प्रसन्न थे। सुरेश की जीत में उन्हें अपनी ही जीत नजर आ रही थी। विवशता में ही सही, कमला ने पहली बार अपनी जिद छोड़ी थी।

उसके बाद दो दिन सुरेश घर पर रहा। चैतरामजी ने स्वयं ही पंचांग देखकर सीला गाँव जाने का दिन निश्चित करके सुरेश और कमला को बता दिया। अपने आने की सूचना भी उन्होंने जोशीजी को समय पर भिजवा दी। सुरेश प्रसन्न मन अपनी नौकरी पर लौट आया। अब वह निश्चिंत था कि सब ठीक होगा।

उधर, लक्ष्मी के माता-पिता की सारी आशंकाएँ निर्मूल साबित हुईं, जब उन्हें सुरेश के माता-पिता के आने का समाचार मिला। उनकी खुशी की सीमा न थी। पूर्व में शायद कोई गलतफहमी ही रही होगी, जिसके कारण सभी को कष्ट उठाना पड़ा।

नियत दिन पर दोनों परिवारों का मिलन हुआ। सभी कुछ देखने, परखने के बाद सुरेश के पिता जहाँ इस रिश्ते के लिए बहुत उत्साहित दिखे, वहीं कमला चुप्पी साधे रही।

जोशीजी स्वयं पंडित थे, तो उसी दिन दोनों की जन्मपत्री और पंचांग देखकर विवाह के लिए आगामी नवरात्रों का दिन भी निश्चित हो गया।

लेकिन लक्ष्मी तो अभी भी मन-ही-मन आशंकित थी। सुरेश के पिता ने जहाँ उससे बहुत स्नेह से बात की, वहीं उसकी होनेवाली सास का स्वभाव रूखा ही बना रहा। फिर भी उसे अपनी क्षमता और अपने संस्कारों पर इतना विश्वास था कि हर परिस्थिति का सामना करके वह सबको स्नेह से अपना बना ही लेगी।

□

पाँच

आखिर वह दिन भी आ ही गया, जब सुरेश की दुलहन बनकर लक्ष्मी अपनी ससुराल पहुँची। गाँव की बहू-बेटियों के साथ ही बुजुर्गों और बच्चों की भीड़ दुलहन को एक नजर देखने के लिए जमा हो गई थी।

छोटी सी गठरी बनी लक्ष्मी भीड़ भरे कमरे के एक कोने में चुपचाप बैठी थी। महिलाएँ आ-आकर उसका घूँघट उठाकर भरपूर नजर देख जातीं। उन्हें घूँघट उठाता देख बच्चे भी ताका-झाँकी करने लगते थे।

'बहू तो जैसे नाम की लक्ष्मी है, वैसे ही रूप की भी लक्ष्मी है।' एक वृद्ध महिला ने टिप्पणी की, तो कमला की प्रतिक्रिया तुरंत हाजिर थी।

'बस नाम और रूप की ही लक्ष्मी है, बाकी तो कंगाल है।'

गाँववालों के मुख से उसकी प्रशंसा की प्रतिक्रियास्वरूप सास द्वारा ऐसा कटाक्ष करने पर लक्ष्मी को समझ में आ गया था कि उसकी आगे की राह आसान नहीं होगी और अपनी सास के दिल में जगह बनाने के लिए उसे अथक प्रयास करना होगा!

तीन-चार दिन तो विवाह-समारोह की औपचारिकताओं में ही बीत गए। अगले दिन ही पहाड़ की प्रथानुसार लक्ष्मी और सुरेश सीला भी हो आए। माँ ने सत्यनारायण की कथा रखी हुई थी।

सब कार्य निबटाकर देर रात एकांत में माँ ने लक्ष्मी की ससुराल के बारे में पूछा। बेटी अपने घर में खुश रहे, इससे बड़ी आकांक्षा भला क्या हो सकती है एक माँ की!

अपनी माँ की बात सुनकर लक्ष्मी मुसकरा दी थी, 'सब ठीक है, माँ।'

धीमे स्वर से कहे गए ये शब्द पंडिताइन को तृप्त कर गए। सुरेश का स्वभाव तो वैसे भी उन्हें बहुत अच्छा लगा था।

अगले दिन जब सुरेश और लक्ष्मी वापस लौटे तो माँ ने यथा-शक्ति उपहार और मिठाइयाँ लेकर चचेरे भाई को साथ में भेज दिया।

'हमारी इज्जत का थोड़ा सा तो ध्यान रखा होता समधीजी ने। इतनी सी मिठाई और कलेवा तो हमारे ही गाँव के लिए पूरा नहीं होगा। आस-पास के गाँवों में क्या बाँटेंगे?' कलेवा और मिठाइयों के टोकरे देखकर कमला बड़बड़ा रही थी।

'अरे राहुल, सुन तो! तुझे कितने की पिठाईं लगाई उन कंगालों ने?' कमला ने सुरेश और लक्ष्मी के साथ गए छोटे बेटे से पूछा, तो सुरेश से नहीं रहा गया। इतनी देर से माँ की बड़बड़ाहट सुनकर उसे अच्छा नहीं लग रहा था।

'क्यों बुरा-भला बोलकर अपनी ज़ुबान खराब कर रही हो, माँ! वैसे तो इतना सबकुछ दिया है उन्होंने, लेकिन फिर भी कम पड़ेगा, तो मैं और मँगवा लूँगा।'

सुरेश के जवाब ने जहाँ लक्ष्मी को तपती धूप में छाँव का अहसास कराया, वहीं माँ के गुस्से को निराशा में बदल दिया।

'जब अपना ही बेटा अपना न रहा तो कोई क्या करे? लेकिन कितने दिन रहेगा सुरेश गाँव में। आखिर रहना तो बहू को हमारे ही साथ है, तब देखूँगी कौन साथ देता है इसका?' कमला ने मन-ही-मन सोचा।

सुरेश की प्राइवेट नौकरी थी, इसलिए बहुत अधिक छुट्टी भी नहीं मिल पाई। बस, दो दिन और गाँव में रहकर, उसे मेरठ लौट जाना था।

'माँ मुँह की कड़वी जरूर है, लेकिन मन की बुरी नहीं। उनकी बातें एक कान से सुन दूसरे से निकाल दोगी तो खुश रहोगी।' नौकरी पर लौटने से पहले सुरेश ने समझाया तो लक्ष्मी ने भी सुरेश की बात सुनकर हाँ में सिर हिला दिया।

इन कुछ दिनों में ही सुरेश समझ गया था कि लक्ष्मी रूप के साथ-साथ गुणों की भी खान है। इतने कम समय में ही उसने घर-बाहर सबका दिल जीत लिया था। न जाने क्यों, उसे विश्वास होने लगा था कि जल्दी ही लक्ष्मी उसकी माँ का स्नेह प्राप्त करने में भी सफल हो जाएगी।

लक्ष्मी भी जानती थी कि सुरेश कभी भी गलत बात में माँ का साथ

नहीं देगा। घर-परिवार के अन्य लोग भी लक्ष्मी से बहुत स्नेह करने लगे थे। बड़ा देवर राजेश अंतर्मुखी स्वभाव का होने के कारण अधिक बात नहीं करता था, लेकिन उसकी ननद रेणु और छोटा देवर राहुल तो हर समय उसके आस-पास ही मँडराया करते थे।

मायके से लौटने के बाद जब पहली बार उसने खाना बनाया तो ससुरजी ने तो तारीफ के पुल ही बाँध दिए।

'बहू! ऐसी मुलायम रोटी तो मैंने आज तक नहीं खाई।' चैतरामजी ने बड़े प्रसन्न मन से कहा। लेकिन कमला का तो पारा चढ़ गया।

'हाँ-हाँ, सारी जिंदगी मेरे हाथ का खाना खाया और बहू को आए दो दिन हुए नहीं कि सब भूलकर उसकी तारीफ करने लगे।'

सास-ससुर की बहस सुनकर तो लक्ष्मी भी चेहरा छुपाकर मुसकरा दी।

रेणु लक्ष्मी की हमउम्र तो नहीं थी, लेकिन दोनों की उम्र में बहुत कम अंतर होने के कारण स्वत: ही रेणु के रूप में लक्ष्मी को ननद के साथ-साथ एक सहृदय सहेली भी मिल गई थी।

और राहुल! उसका तो कुछ दिन तक स्कूल जाने का मन ही नहीं हुआ। किसी-न-किसी बहाने लक्ष्मी के पास बैठने और उससे बातें करने का बहाना ढूँढ़ता रहता था। कभी उसकी लाल-लाल चूड़ियाँ छूकर देखता तो कभी पायल से खेलता था।

बस सात-आठ दिन का साथ, उसमें भी अधिकांश विवाह के बाद के समारोहों, पूजा इत्यादि में बीत गया। सुरेश लौट गया नई-नवेली दुलहन को अपने परिवार के बीच छोड़कर।

ससुरजी और राहुल सारा दिन घर से बाहर रहते और राजेश अपनी पढ़ाई व मित्रों में व्यस्त। घर में रह जाते तीन प्राणी—कमला, लक्ष्मी और रेणु।

कमला जरा-जरा सी बात पर कटाक्ष करने से बाज न आती, लेकिन रेणु आँखों-ही-आँखों में इशारा कर लक्ष्मी की हिम्मत बढ़ाती रहती। माँ के जाते ही, रेणु अपनी भाभी की बाँहों में झूलकर उसके सारे संताप हर लेती थी।

धीरे-धीरे लक्ष्मी ने घर का सारा काम अपने हाथों में ले लिया। अपने शालीन व्यवहार और घर-परिवार के कार्यों में दक्ष होने के कारण वह जल्दी ही सबकी चहेती बन गई।

यूँ तो सास भी लक्ष्मी की सुघड़ता से मन-ही-मन प्रसन्न थी, फिर भी

घर के किसी भी काम में लक्ष्मी की प्रशंसा होती तो भी उसके पास बुराई करने को कुछ-न-कुछ रह ही जाता। मन में प्रधानजी की बेटी से सुरेश का रिश्ता न होने की कसक अभी भी मौजूद थी। इसलिए लक्ष्मी को टोकने का कोई मौका वह कभी छोड़ती नहीं थी।

कभी दान-दहेज पर टिप्पणी, तो कभी बहू के सलीके पर कटाक्ष; लेकिन लक्ष्मी ने कभी जवाब में अपना मुँह नहीं खोला। माँ की सीख आँचल में बाँधे लक्ष्मी ने घर के सब लोगों को अपना बनाने का भरसक प्रयास किया।

इस बार सुरेश बीस दिन बाद ही छुट्टी लेकर घर चला आया। रेणु ने भाई को तो कुछ न कहा, लेकिन भाभी से चुहल करने का मौका वह नहीं चूकी।

'भाभी, भैया को तो मोहपाश में बाँध लिया है आपने। महीनों तक घर न आनेवाले भैया देखो, इस बार कैसे जल्दी से घर चले आए हैं।'

रेणु की बात सुनकर लक्ष्मी का चेहरा शर्म से लाल हो आया। निगाहें झुक गईं। सुरेश के आने की खबर की खुशी ने उसके सौंदर्य को जैसे बहुगुणित कर दिया।

दो दिन घर पर रहकर सुरेश वापस चला गया। गाँव के बड़े-बूढ़ों से लक्ष्मी की प्रशंसा सुनकर वह समझ गया कि उसका फैसला गलत नहीं था। एकांत मिलने पर जब सुरेश ने लक्ष्मी से घर के सदस्यों के व्यवहार के बारे में पूछा, तो गिनती के दो शब्द 'बहुत अच्छा' कह उसने निगाहें झुका लीं।

सुरेश सोच रहा था कि लक्ष्मी कम-से-कम माँ के व्यवहार की शिकायत उससे अवश्य करेगी ही। 'और माँ?' उसने कुरेदना चाहा।

'जैसी सब माँ होती हैं, वैसी ही हैं।' और लक्ष्मी खिलखिलाकर हँस दी। वह समझ तो गई थी कि सुरेश क्या पूछना चाहता है, लेकिन उसने सोच लिया था कि इस छोटे से समय को वह कटुता में भला क्यों गँवाए?

सुरेश तो बस उसका चेहरा देखता रह गया। विवाह के बाद पहली बार लक्ष्मी को खिलखिलाकर हँसते देखा था उसने। लक्ष्मी के कांतिमय चेहरे पर मोतियों की-सी आभा बिखेरती शुभ्र दंत-पंक्ति देखकर उसे लगा जैसे उसने इससे पहले कभी लक्ष्मी के बाह्य सौंदर्य की ओर ध्यान ही नहीं दिया था।

सुरेश को यूँ अपलक अपनी ओर निहारते देख लक्ष्मी ने शरमाकर अपनी निगाहें झुका लीं। गद्गद सुरेश ने हाथ आगे बढ़ाकर बत्ती बुझा दी। सुखद मिलन का अहसास लक्ष्मी के रोम-रोम में समा गया।

समय अपनी गति से चल रहा था। बीस-पच्चीस दिनों में सुरेश दो-तीन दिन के लिए घर आ जाता और उसके जाते ही लक्ष्मी के लिए प्रतीक्षा की घड़ियाँ आरंभ हो जातीं।

ऐसे ही छह माह बीत गए। एक शाम पंदेरे पर लक्ष्मी को अनमनी-सी देख उसकी चचिया सास से रहा न गया। उसने लक्ष्मी से इसका कारण पूछा। जिठानी के कटु व्यवहार से तो वह भी भली-भाँति परिचित थी। जब वह स्वयं इस घर में ब्याहकर आई थी, तो सास-ससुर जीवित थे और संयुक्त परिवार था। उस समय भी कमला ने अपने बड़े होने का अहसास उसे बखूबी करवा दिया था। सुरेश की अनुपस्थिति में न जाने कैसा व्यवहार करती होगी बहू के साथ। एक-दो बार लक्ष्मी से पूछना भी चाहा, लेकिन लक्ष्मी ने कभी सास के विरुद्ध एक शब्द न बोला।

'ऐसी चुप-चुप क्यों है बेटी, तबीयत ठीक नहीं है क्या?'

'चाची, पता नहीं क्यों कुछ दिन से सुस्ती-सी है। खाना खाने का मन भी नहीं करता। मसालों की गंध से ही जी मिचलाने लगता है।'

चाची को आश्चर्य हुआ। क्या हो गया उसकी जिठानी को? बहू में आया ये परिवर्तन उसे क्यों नहीं दिखाई दिया? बेचारी लड़की आखिर किससे कहे अपनी व्यथा। यह सब सोचते हुए भी किसी अच्छी खबर की आहट उनके चेहरे पर मुसकान ले आई।

लक्ष्मी सिर झुकाए उँगली से कच्ची मिट्टी पर आकृतियाँ उकेर रही थी। चाची का मन उसके प्रति स्नेह से भर उठा। चाची लक्ष्मी के सिर पर स्नेह से हाथ फेरने लगी।

स्पर्श की भाषा समझकर लक्ष्मी ने निगाहें उठाईं। चाची के चेहरे पर घिर आई मुसकान का मतलब लक्ष्मी नहीं समझ पाई। चाची ने एक-दो सवाल और पूछे और जवाब सुनते ही लक्ष्मी को गले से लगा लिया।

'यह तो बड़ी खुशी की बात है, बहू! कुछ दिन ऐसा ही रहेगा, फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।'

उसकी तबीयत ठीक नहीं है, तो उसमें कौन सी खुशी की बात हो सकती है। लक्ष्मी सोच रही थी। उसको बेवकूफों की तरह अपनी ओर ताकते देख चाची हँस दी।

'अरी, माँ बनने वाली है तू।'

'माँ!' लक्ष्मी का चेहरा सुर्ख हो आया। सुरेश के साथ बिताए क्षण

उसकी आँखों के आगे घूम गए।

चाची ने उसे गले से लगा लिया। प्यार भरा स्पर्श लक्ष्मी को अपनी माँ की याद दिला गया।

'अपना ध्यान रखना, बहू।' चाची ने उसे गले से लगाए हुए ही कहा, तो लक्ष्मी की आँखें भर आईं।

सुरेश को गए बीस-पच्चीस दिन हो चुके थे। इस बीच एक पत्र अवश्य आया था कि फैक्टरी में काम बहुत है, इसलिए अबकी बार घर आने में देर हो जाएगी।

इस शुभ समाचार को सबसे पहले सुरेश को देने का मन हो आया लक्ष्मी का।

'चाची, अभी किसी से कहना मत, वे आएँगे तो सबसे पहले उन्हें ही बताना चाहती हूँ।' शरमाते-लजाते लक्ष्मी ने अपने मन की बात चाची से कह ही डाली।

'ठीक है बहू, जैसी तेरी इच्छा।' कहते हुए चाची ने पानी से भरी गागर लक्ष्मी के सिर पर रख दी और उसे जाते हुए देखती रही।

कितनी सुशील और सुसंस्कृत बहू है। लेकिन इस हीरे की परख उसकी जेठानी को कहाँ! सोचते हुए चाची ने गहरी साँस ली।

□

छह

'इस बार तो भैया ने हमारी भाभी को बहुत परेशान किया। आने दो भैया को, मैं कहूँगी उनसे। ऐसे कोई अपनी नई-नवेली दुलहन को इतने दिन के लिए अकेले छोड़ जाता है भला!' भाभी को विचारों में खोए देख रेणु ने शरारत से कहा और लक्ष्मी की बगल में आकर बैठ गई।

'क्या बात है, भाभी? माँ ने कुछ कहा क्या? आजकल आप चुप-चुप रहती हो।' रेणु की शरारत गंभीरता में बदल गई।

'नहीं रेणु, ऐसी कोई बात नहीं।' लक्ष्मी ने गहरी साँस ली।

क्या समझाए बेचारी रेणु को? नए प्राणी के सृजन की सुखद अनुभूति को वह क्या समझ पाएगी? इस अनुभूति को नव सृजन के साझीदार से बाँटने की व्यग्रता से प्रतीक्षा है लक्ष्मी को। कितने खुश होंगे सुरेश यह सुखद समाचार सुनकर।

'कहाँ खो गईं भाभी?'

'कहीं नहीं। चल उठ तू, ढेर सारे कपड़े पड़े हैं धोने को। मेरे साथ पंदेरे पर चल। थोड़ा हाथ बँटा देना मेरा।' कहते हुए लक्ष्मी उठ खड़ी हुई।

रेणु ने महसूस किया कि कुछ दिन से भाभी उसकी मदद कुछ ज्यादा ही लेने लगी थीं। शायद रेणु को घर-परिवार का ज्यादा-से-ज्यादा काम सिखाना चाहती होंगी। उसने सोचा और भाभी के पीछे-पीछे चल दी।

दोनों कपड़े धोकर वापस लौटे तो चार बजने को थे।

राहुल स्कूल से लौटने वाला होगा और सास भी खेतों से वापस लौट रही होंगी। उसने चूल्हा जलाने की तैयारी आरंभ कर दी। बाहर सास की

आवाज सुनते ही चाय का पानी भी चूल्हे पर रख दिया। दो-ढाई मील चलकर स्कूल से घर लौटा राहुल भी भूखा होगा। वह भी तुरंत ही खाने को कुछ माँगेगा, यह सोच आटा गूँधकर एक तरफ रख दिया उसने।

लकड़ियाँ कच्ची व गीली थीं शायद। रसोई में धुआँ भर गया। फूँक मारते-मारते लक्ष्मी का दम निकल आया। आँखें धुएँ के तीखेपन से लाल हो गईं और उनसे पानी बहने लगा। धुएँ की कड़वाहट मुँह से होते हुए पूरे तन में समा गई। लक्ष्मी को कहाँ पता था कि आँखों से बहता हुआ यही पानी अब उसकी नियति बनने वाला है।

अचानक उसे बाहर शोरगुल की आवाज सुनाई दी। साथ ही जोर-जोर से रोने और चीखने-चिल्लाने का स्वर। घबराकर लक्ष्मी बाहर निकल आई।

उसे देखते ही चीखती-चिल्लाती सास ने चील की तरह झपट्टा मारकर उसे बाहर खींच लिया।

'करमजली! तेरा दुर्भाग्य खा गया मेरे बेटे को।' लक्ष्मी के सिर पर दोनों हाथों से प्रहार करते हुए लक्ष्मी की सास कमला चिल्लाई तो लक्ष्मी सकपका गई। उसकी कुछ समझ में न आया।

जब तक वह कुछ समझ पाती, सास उसके माथे का सिंदूर पोंछ चुकी थी। लक्ष्मी तो सुन्न हो गई। उसकी आँखों से एक भी आँसू नहीं निकला। बीच-बीच में कुछ शब्द उसके कानों में पड़ रहे थे, और कुछ नहीं।

जीप सवारियों से भरी थी। ड्राइवर ने संतुलन खो दिया और गाँव के सामनेवाले मोड़ पर ही जीप गहरी खाई में जा गिरी। ऐसे ही कुछ शब्द उसके कानों में पड़े।

बरसों से जन्मपत्री देखकर सबका भाग्य बाँचनेवाले जोशीजी अपनी ही बेटी का भाग्य नहीं पढ़ पाए थे, न ही पूजा-अर्चना कर आसन्न विपत्ति को टाल पाए थे।

सुबह मेरठ से निकला सुरेश जब कोटद्वार पहुँचा तो गाँव जानेवाली एकमात्र बस निकल चुकी थी। एक ही जीप खड़ी थी और वह भी सवारियों से ठसाठस भरी थी। घर जल्दी पहुँचने की उत्कंठा में सुरेश उसी जीप की छत पर बैठ गया। कुछ दूर चलकर वही जीप सवारियों के भार से असंतुलित होकर कई सौ फीट गहरी खाई में जा गिरी थी।

कमला दहाड़ें मारकर रोने के साथ-साथ लक्ष्मी को भी गालियाँ दिए

जा रही थी। पल भर में ही पूरा गाँव उनके आँगन में इकट्ठा हो गया। दबी जुबान से कई बड़ी-बूढ़ियाँ इस विपत्ति की घड़ी में भी लक्ष्मी को अपशकुनी कहने से नहीं चूकीं। लक्ष्मी तो पत्थर का बुत बनी जहाँ बैठी थी, वहीं बैठी रह गई। एक वृद्धा ने आगे बढ़कर उसकी नाक से खींचकर लौंग उतारी, तो वह बेचारी दर्द से बिलबिला उठी।

लेकिन जब लक्ष्मी के हाथों की चूड़ियाँ तोड़ी जाने लगीं तो न जाने किस कोने में खड़ा राहुल उससे लिपट गया।

'मत निकालो इन्हें। क्यों कर रहे हो मेरी भाभी के साथ ऐसा?'

भाभी की इस बद किस्मत से अनजान राहुल दहाड़ें मारकर रो दिया। राहुल के रुख से लक्ष्मी की चेतना जागी। राहुल को सीने से लगा उसके सब्र का बाँध टूट पड़ा। मन का संताप आँखों से बह निकला। उस दारुण दृश्य को देख सभी की आँखें नम हो आईं।

'एक को तो अपने वश में करके खा गई, अब इस पर भी कुदृष्टि डालेगी क्या?' कमला ने बिलखते राहुल को लक्ष्मी के आगोश से छीन लिया। इधर लक्ष्मी के हाथ चूड़ियों के टूटने से लहूलुहान हो गए और उधर रोते-रोते थक गए राहुल के क्रंदन की तीव्रता भी धीरे-धीरे कम होती गई।

देर शाम बेटी के दुर्भाग्य की खबर पंडित और पंडिताइन को मिली तो वे तत्काल बेटी की ससुराल पहुँच गए। जब तक दोनों वहाँ पहुँचे, घना अंधकार घिर आया था। तीव्र रुदन का स्वर अब सिसकियों में बदल चुका था। उनके पहुँचते ही एक बार फिर वातावरण में कोलाहल छा गया।

माता-पिता को सामने देखते ही लक्ष्मी के मन का बाँध फिर टूट पड़ा। उसके करुण क्रंदन से माता-पिता का कलेजा मुँह को आ गया। अभी कुछ माह पहले ही तो दुलहन बनाकर उसे घर से विदा किया था। कितनी सज रही थी यह अभागन उस वेश में और आज उसका कांति-विहीन, शृंगारहीन चेहरा उनके सामने था।

लगातार रोने से सूजी लक्ष्मी की आँखें, सूनी माँग और हाथों के घाव जो चूड़ियाँ उतारते हुए पड़ गए थे, आज उसके दुर्भाग्य की कहानी बयाँ कर रहे थे।

बहुत प्यार से पंडिताइन ने बेटी के लिए टिहरी गढ़वाल की नथ बनवाई थी, जिसने लक्ष्मी के चेहरे की आभा को द्विगुणित कर दिया था; लेकिन आज उसकी नाक के सूने छिद्र ने तो उसकी जैसे सारी कांति ही डस ली थी।

'वैसे तो बहुत बड़े पंडित बनते हो। अपनी बेटी का दुर्भाग्य क्या जान-बूझकर मेरे बेटे के सिर मढ़ दिया।' विलाप करते हुए जब कमला ने चिल्लाकर कहा तो जोशीजी और उनकी पत्नी बुरी तरह चौंक उठे।

अब यही आरोप लगना बाकी था उन पर! जन्मपत्री तो ठीक ही मिलाई थी। आखिर बेटी है वह उनकी। जानबूझकर उसका बुरा कैसे चाह सकते थे वो? छब्बीस गुण मिल रहे थे दोनों के। पर चूक कहाँ हो गई, वह खुद भी बहुत हैरान थे।

बेटी के दु:ख से लाचार दंपती के मुँह से आवाज तक न निकली। उन्हें चुप देखकर तो कमला का क्रोध और भड़क उठा।

'हम तो पहले ही इस रिश्ते के पक्ष में नहीं थे, लेकिन तुमने और तुम्हारी बेटी ने न जाने क्या जादू किया कि उस अभागे की तो मति ही मारी गई। पड़ गई अब तुम्हारे कलेजे पर ठंडक?' और वह दहाड़ें मारकर रोने लगी।

'ये क्या अंट-शंट बोले जा रही हो तुम? भला कौन माँ-बाप अपनी बेटी का बुरा चाहते हैं!' पत्नी के अनर्गल प्रलाप से दु:खी हो चैतरामजी को ही हस्तक्षेप करना पड़ा।

फिर जोशीजी के कंधे पर हाथ रखकर चैतराजजी ने उन्हें सांत्वना दी, 'बुरा मत मानिएगा, जवान बेटे की मौत का सदमा दिल में बैठ गया है।'

समझते थे जोशीजी, जिस माँ ने अपना बेटा खोया हो, उसका संताप कैसा होगा! लेकिन उनकी बेटी की जिंदगी तो अब जीते-जी मौत के समान थी।

सुरेश की अंतिम क्रिया के अगले दिन पंडित-पंडिताइन को घर वापसी की तैयारी करते देख कमला ने लक्ष्मी को भी अपना सामान बाँधने को कह दिया।

'कैसी बात कर रही हैं, समधनजी! हमारे समाज की रीत है कि बेटी एक बार मायके से विदा हो गई तो ससुराल से उसकी अरथी ही उठती है।' पंडिताइन की आवाज कँपकँपा गई।

विधवा बेटी को मायके में बिठाकर रखने की कल्पना मात्र से वह सिहर उठीं, तीन-तीन बेटियाँ और हैं उनकी। कौन ब्याह करेगा उनसे? और फिर आर्थिक स्थिति भी तो अच्छी नहीं है।

'अरथी तो हमारे बेटे की उठा दी इसने, यहाँ रहेगी तो और भी न जाने क्या-क्या अपशकुन करेगी। इसकी छाया मैं अपने परिवार पर और नहीं पड़ने दूँगी।'

जोशी दंपती खामोश थे। समधन मान जाए, ऐसे कोई आसार उन्हें नहीं

नजर आ रहे थे। उन्होंने सोचा, फिलहाल तो लक्ष्मी को अपने साथ ले ही जाते हैं, बाद में जो भी होगा, भगवान! की इच्छा पर छोड़ देना ही ठीक होगा।

लेकिन इस सारे वार्तालाप में देवदूत की तरह बीच में आकर समधी चैतरामजी ने उन्हें एक बार फिर से इस दारुण संकट से उबार लिया था, 'लक्ष्मी हमारी बहू है, बेटे के चले जाने से रिश्ता खत्म नहीं हो जाता। लक्ष्मी यहीं रहेगी हमारे साथ।' पति का दृढ़ स्वर सुनते ही कमला चौंकी। समधी-समधन के सामने उसने खुद को अपमानित महसूस किया, लेकिन बोली कुछ नहीं। कोई विरोध भी नहीं किया, लेकिन यह अपमान उसके मन में फाँस की तरह चुभ गया।

इस सबसे बेखबर लक्ष्मी घर के एक कोने में बैठी अपनी किस्मत पर आँसू बहा रही थी। एक पल को मन होता कि किसी पहाड़ी से कूदकर अपनी जीवन-लीला समाप्त करके इस कष्ट से छुटकारा पा ले, लेकिन दूसरे ही पल, अपने उदर में पल रहे दूसरे जीवन का खयाल आ जाता और वह भी सुरेश की अंतिम निशानी। अभागा सुरेश तो इस खुश-खबरी को सुन भी न पाया।

लक्ष्मी का चेहरा आँसुओं से तर हो गया। 'किस दोराहे पर छोड़ दिया तुमने मुझे, न जी सकती हूँ और न ही मर सकती हूँ।'

'भाभी, आपके माँ-पिताजी बुला रहे हैं।' पास जाकर रेणु ने इतना भर कहा और चल दी। इधर कुछ दिनों से रेणु के व्यवहार में भी अजीब सा परिवर्तन देख रही थी लक्ष्मी। हर समय उसके आस-पास मँडरानेवाली रेणु अब उसके पास भी नहीं फटकती। उसकी बातों का रूखापन लक्ष्मी के अंतर्मन को कचोट देता। 'क्या रेणु भी सासजी की तरह उसे ही सुरेश की मृत्यु का जिम्मेदार समझती है?' लक्ष्मी कई बार सोचती!

लक्ष्मी बाहर आई तो माता-पिता वापस जाने को तैयार थे। माँ को गले लगा एक बार फिर लक्ष्मी की आँखें नम हो आईं।

चैतरामजी ने लक्ष्मी को जाने से तो रोक लिया था, लेकिन कमला के मन में क्या चल रहा था, यह तो बस वही जानती थी। सुरेश की मृत्यु के कुछ समय बाद तक तो घर में लोगों का आना-जाना लगा रहा, जिनमें से कुछ की संवेदनाएँ नवविवाहिता लक्ष्मी के साथ अधिक थीं तो कुछ लक्ष्मी के साथ हुए सुरेश के रिश्ते को ही इसका कारण बताने में नहीं चूकते थे।

ऐसे समय में कमला लक्ष्मी के विरुद्ध और अधिक मुखर हो उठती थी। □

सात

धीरे-धीरे जीवन अपनी राह चलने लगा और घर में लोगों का आना-जाना भी कम हो गया। लक्ष्मी के अब दुर्दिन शुरू हो गए। छोटी-छोटी बातों को लेकर घर में उसके साथ गाली-गलौज तो आम बात हो गई।

रेणु ने उससे बात करना लगभग छोड़ ही दिया और जब भी बात करती, रूखापन उसकी बातों में स्पष्ट झलकता। इस घर में उसका सहारा पिता तुल्य ससुरजी और छोटा देवर राहुल ही थे, लेकिन दोनों के दिन भर घर से बाहर रहने के कारण अकसर उन्हें लक्ष्मी पर होनेवाली ज्यादतियों का पता भी न चल पाता था।

यूँ तो राजेश अकसर घर पर ही रहता था, लेकिन घर में क्या चल रहा है, इससे उसे विशेष मतलब नहीं था।

लक्ष्मी की चिंता अब अपनी होनेवाली संतान को लेकर थी। अभी तक तो चचिया सास के अलावा किसी को पता भी नहीं है कि वह माँ बनने वाली है। वह बेचारी स्वयं कैसे और किसको बताए? जिनको बता सकती थी, उन्हें तो अब कोई मतलब ही नहीं था उससे।

अगर उसकी सास को लक्ष्मी के गर्भ में पलनेवाले अपने बेटे सुरेश की आखिरी निशानी का पता चल जाए तो शायद लक्ष्मी के प्रति उनके व्यवहार में कुछ नरमी आ जाए। ऐसा सोचना था लक्ष्मी का। लेकिन उसकी यह सोच भी गलत ही साबित हुई।

कमला को लक्ष्मी के गर्भवती होने का पता लगा भी तो उससे लक्ष्मी के हालात में कोई सुधार न हुआ।

उस दिन कमला खेत में गई थी और रेणु गाँव में ही कहीं अपनी सहेली से मिलने चली गई थी। भोजन का समय होने पर लक्ष्मी ने दाल बनाकर चावल का पतीला चूल्हे पर रख दिया।

कुछ तो चूल्हे की तेज आँच और कुछ लक्ष्मी का दुर्भाग्य। अपने ही खयालों में खोई लक्ष्मी को तेज गंध आने पर ही पता चला कि भात नीचे से जल चुका है। लक्ष्मी काँप उठी। न जाने क्या होने वाला है। छोटी-छोटी गलतियों पर गाली-गलौज करनेवाली सास कमला के लिए तो यह अक्षम्य अपराध ही था।

जब तक लक्ष्मी सँभलती तब तक जलने की गंध रसोई पार करती हुई बाहर आँगन में फैल गई और उसी समय कमला भी आँगन में पहुँच गई।

'अरी अभागन, अपनी जली हुई किस्मत की तरह भात भी जला डाला है क्या तूने?'

सास की आवाज कान में पड़ते ही लक्ष्मी की रूह काँप गई और हाथ-पैरों को सिकोड़कर भय से काँपती लक्ष्मी चूल्हे के पास ही बैठी रह गई। न जाने क्या होगा आज? आँखें बंद कर परिस्थितियों के हवाले कर दिया लक्ष्मी ने अपने आप को।

'तेरे बाप के घर में बनता होगा ऐसा खाना।' कहते हुए कमला ने लक्ष्मी की सात पुश्तों की लानत-मलानत कर डाली। लक्ष्मी को रसोई से घसीटती हुई कमला आँगन में ले आई।

'जा, मर अपने बाप के घर!' कहते हुए उसने लक्ष्मी को जोर से धक्का दिया। लक्ष्मी औंधे मुँह आँगन में गिर पड़ी।

'ऐसा मत करो दीदी, बहू पेट से है।'

उधर से गुजरती हुई चाची ने यह दृश्य देखा तो उनसे न रहा गया। सुरेश की आखिरी निशानी को तन में सँजोए लक्ष्मी के साथ कहीं कुछ और बुरा न हो जाए, इसकी आशंका मात्र से काँप उठी थी चाची।

लेकिन इस बात की प्रतिक्रिया का लक्ष्मी और चाची को सपने में भी अंदेशा न था।

देवरानी की बात सुनकर कमला के चेहरे पर एक पल में ही कई भाव आए और चले गए।

'किसका पाप पेट में लिये घूम रही है, कुलक्षिणी?'

कमला के ये शब्द लक्ष्मी और चाची दोनों को ही चौंका गए। ऐसी

प्रतिक्रिया की तो दोनों को ही सपने में भी उम्मीद नहीं थी।

चाची हैरान थी कि ये क्या कह रही है उसकी जिठानी! लक्ष्मी की सौम्यता, चरित्र और सुशील स्वभाव के तो पूरे गाँव में चर्चे हैं। गाँव भर के रिश्ते के देवरों से कभी मुँह उठाकर बात करते नहीं देखा किसी ने उसे। उसके चरित्र पर इतना बड़ा आक्षेप! नहीं, वह चुप रहकर इस अन्याय का साथ नहीं दे सकती।

उधर चुपचाप मार खाती लक्ष्मी भी चरित्र पर लगे इस आक्षेप को सहन नहीं कर सकी।

'जान से मार दीजिए, लेकिन ऐसा न कहिए।' सिसकियाँ दबाते हुए लक्ष्मी का इतना कहना था कि कमला उस पर फिर से पिल पड़ी।

'जबान चलाना भी सीख लिया तूने अब! उस दो टके के पंडित ने इतना भी नहीं सिखाया तुझे कि बड़ों से कैसे व्यवहार करते हैं?'

मारने के लिए हाथ उठाया ही था कि देवरानी ने आकर हाथ पकड़ लिया। कमला कुछ समझती, इससे पहले उसने अपनी गलती के लिए क्षमा माँग ली और पंदेरे में लक्ष्मी और उसके बीच हुई बातचीत कमला को बता दिया।

कमला का गुस्सा एक पल को तो शांत हुआ, लेकिन दूसरे ही पल देवरानी के प्रति मन में ईर्ष्या के भाव उपज आए।

'अपने घर में तो किसी को बताया नहीं और दूसरे परिवार के लोगों में ढिंढोरा पीट दिया।' कमला ने मन-ही-मन सोचा। पर उस दिन से लक्ष्मी की हमदर्द होने के कारण देवरानी भी आज से उसके दुश्मनों में शामिल हो गई।

लक्ष्मी को यूँ ही बेसुध छोड़कर कमला अंदर चली आई। रेणु बहुत देर से इस तमाशे को देख रही थी, वह भी भाभी की ओर हिकारत भरी नजरों से देखती हुई माँ के पीछे-पीछे चल दी।

संयोग से राहुल की छुट्टी आज आधे दिन के बाद हो गई तो वह भी जल्दी घर चला आया। घर पहुँचा तो देखा, भाभी आँगन में बैठी सिसक रही थी। बस्ता एक ओर फेंककर राहुल उसके पास जा बैठा। नीचे गिरने के कारण लक्ष्मी का होंठ कट गया था, जिससे अभी तक भी काफी खून रिस रहा था।

राहुल ने हाथ आगे बढ़ाकर खून साफ किया और उसके रोने का कारण पूछता रहा। भोलेपन से पूछे गए प्यार भरे प्रश्नों को सुन लक्ष्मी की आँखों से

अश्रुधारा फूट पड़ी। भाभी को रोते देख राहुल घबरा गया।

उसने ऐसा क्या किया, जो भाभी और अधिक रोने लगी है। वह मासूम क्या जानता था कि उसके निश्छल स्नेह से द्रवित लक्ष्मी के मन में भावनाओं का ज्वार उमड़ आया है।

भाभी से कोई जवाब न मिलता देख राहुल माँ से उसके रोने का कारण पूछ बैठा। गुस्से से भरी कमला को कुछ और न सूझा तो लगी राहुल को ही गरियाने।

दोनों ओर से कोई जवाब न पाकर राहुल बाहर आकर फिर लक्ष्मी के पास बैठ गया।

'भाभी, अंदर चलो, भूख लगी है।' थोड़ी देर में राहुल भाभी का हाथ पकड़ता उठ खड़ा हुआ। जितनी देर बाहर बैठेगी, उतना आने-जानेवाले देखेंगे और अपना ही तमाशा बनेगा। यही सोचते हुए लक्ष्मी राहुल का हाथ पकड़ अंदर चली आई।

'खाएगा क्या? इसकी जली हुई किस्मत या हमारी, जो ऐसी कुलक्षिणी से पाला पड़ा।' जले हुए भात का मुद्दा कमला के दिमाग में अभी ठंडा नहीं पड़ा था। यूँ तो चावल सिर्फ नीचे से ही जले थे, लेकिन कमला लक्ष्मी की गलती को कमतर आँकने की भूल भला क्यों करती!

'तो दोबारा बना दो, मुझे वैसे भी अभी भूख नहीं है।' थोड़ी देर पहले भूख से बिलबिलाते राहुल ने लक्ष्मी के जख्मों पर मरहम लगाने की कोशिश की।

'कैसी जादूगरनी है। मेरे तो बेटे ही अपने नहीं रहे।' कमला बड़बड़ाती जा रही थी।

लक्ष्मी ने उनकी बात अनसुनी करके एक बार फिर चावल चूल्हे पर रख दिए। इस बार वह पूरी तरह सतर्क थी।

'माँ बनने वाली है तुम्हारी लाड़ली। कहती तो सुरेश का ही है लेकिन असलियत तो भगवान् ही जाने…' शाम को कमला ने पति को यह खबर सुनाई तो वे मन-ही-मन प्रसन्न हुए, लेकिन कमला की अंतिम बात उन्हें बिलकुल भी अच्छी न लगी। अपनी बहू को वे अच्छी तरह जानते थे। उसके चरित्र पर संदेह करने की तो लेशमात्र भी गुंजाइश न थी। कमला को तो उसके हर काम में नुक्स निकालने की आदत-सी पड़ गई है।

'अच्छा है, सुरेश की अंतिम निशानी तो कम-से-कम हमारे पास

रहेगी।' पत्नी द्वारा कही गई अशोभनीय बात को उन्होंने सुनकर भी अनसुना कर दिया।

लेकिन खुशी के साथ-साथ गहरी सोच में पड़ गए चैतरामजी। इतनी लंबी पहाड़-सी जिंदगी अकेले कैसे बिताएगी लक्ष्मी? बच्चे की परवरिश का दायित्व और उसकी पढ़ाई कैसे कर पाएगी? वैसे भी अभी उम्र ही क्या है उसकी! एक विचार बिजली की तरह उनके मन में कौंधा। राजेश, हाँ राजेश? वह तो लक्ष्मी का हमउम्र है। क्यों न लक्ष्मी का विवाह उससे करा दिया जाए। लक्ष्मी को सहारा भी मिल जाएगा और घर की बात घर में ही रह जाएगी।

झिझकते हुए पत्नी से मन की बात कहने का प्रयास किया तो वह ऐसे उठ बैठी मानो गरम तवे पर हाथ पड़ गया हो। 'सठिया गए हो क्या अभी से? एक बेटा तो खो दिया, अब दूसरे को उसे सौंपने की तैयारी कर रहे हो? अरे, अपने राजेश की शादी तो मैं ऐसे धूमधाम से करूँगी कि आसपास के सारे गाँव देखेंगे।'

चैतरामजी चुप्पी साध गए। पता नहीं राजेश की भी क्या मंशा हो! वैसे भी बारहवीं की परीक्षा के बाद वह शहर जाने की जिद किए हुए था।

'क्या एक बार बात कर उसका मन तलाश करें? हाँ, यही ठीक रहेगा।' पत्नी के विरोध के बाद भी उन्होंने राजेश से बात करने का मन बना लिया।

लेकिन कहते हैं कि दीवारों के भी कान होते हैं। पिता की इस इच्छा की भनक राजेश को न जाने कैसे लग गई। पिता उससे बात कर पाते, उससे पहले ही वह नौकरी ढूँढ़ने के बहाने घर से खिसक लिया और फिर जल्दी से लौटा ही नहीं।

□

आठ

लक्ष्मी की जिंदगी कटनी अब आगे बहुत मुश्किल हो जाएगी, इस बात का आभास उसके माता-पिता को कुछ दिन उसकी ससुराल में रहते हुए ही हो गया था। एक तो बेटी का अब यह पहाड़-सा वैधव्य जीवन और ऊपर से सास का विकराल रूप देख वह बिलकुल ही टूट गए। वह समझ गए, सुरेश अपनी माँ की इच्छा के विरुद्ध जिद कर उनकी बेटी को ब्याह लाया था, सो अब वह उसे जीने नहीं देगी।

पंडिताइन तो बेटियों से बात कर, दो आँसू बहा के अपना मन हलका कर लेतीं, लेकिन पंडितजी अंदर-ही-अंदर घुटते चले जा रहे थे। लोगों ने दबी जुबान से पंडितजी के शास्त्र ज्ञान पर भी उँगली उठाना शुरू कर दिया था। लोगों में कानाफूसी होने लगी थी कि जो पंडित अपनी बेटी का भाग्य नहीं बाँच पाया, वह औरों के भाग्य को क्या समझ पाएगा?

इन सारी बातों का असर अब धीरे-धीरे उनकी आजीविका पर भी पड़ने लगा। जहाँ पहले सिर्फ गाँव ही नहीं, आसपास के लोग भी जोशीजी के पास पूजा करवाने, जन्मपत्री दिखवाने आते थे, वहाँ उनकी संख्या अब धीरे-धीरे घटने लगी। घटती आय में परिवार का भरण-पोषण और तीन-तीन जवान बेटियों का विवाह कैसे संभव होगा? दोनों इसी चिंता में डूबे रहते।

लक्ष्मी की ससुराल की ही एक लड़की समीप के गाँव में ब्याही थी। पंडिताइन कभी-कभार वहाँ जाकर बेटी के हाल-चाल पूछ लिया करती थी।

दो महीने बीत चुके थे। पंडिताइन का मन बेटी से मिलने को अधीर होने लगा। न जाने किस हाल में होगी! दुःखों की मारी लक्ष्मी को अगर

उन्होंने भी अकेला छोड़ दिया तो उस बेचारी का तो जीना ही दूभर हो जाएगा।

'क्या वह लक्ष्मी से मिलने उसकी ससुराल हो आए?' यह विचार मन में आया, लेकिन दूसरे ही पल समधन द्वारा कहे गए कटु वचन कानों में गूँज गए। 'क्या अपनी बेइज्जती कराने जाएँ वहाँ?' अचानक फिर पंडिताइन का आत्मसम्मान आड़े आ गया।

'लेकिन क्या इस खोखले आत्मसम्मान के लिए अपनी बेटी को छोड़ देना ठीक होगा?' मन के किसी कोने से आवाज आई। आखिर हमारी बेटी है वह। उसे खुशी मिले, इसके लिए वह समधन की गालियाँ सुनने को भी तैयार है। काफी सोच-विचार के पश्चात् अगले ही दिन उसने लक्ष्मी की ससुराल जाने का मन बना लिया।

पंडितजी को बताया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी, किंतु अस्वस्थता के कारण स्वयं जाने में लाचारी जता दी। पिछले कई दिनों से उन्हें हलका सा बुखार रहने लगा था। गाँव के ही वैद्य की दवा खा रहे थे। बुखार तो उतर गया था, लेकिन अंदर-ही-अंदर बहुत कमजोरी महसूस होने लगी थी।

पंडिताइन मँझली बेटी विनीता के साथ अगले दिन ही लक्ष्मी की ससुराल चल दीं। सौभाग्य से जब वे लोग वहाँ पहुँचे, उस समय लक्ष्मी घर पर अकेली थी।

दो माह बाद बेटी को देख रही थीं पंडिताइन। उसकी हालत देखकर कलेजा मुँह को आ गया। मैले कपड़े, थका व सहमा-सा चेहरा, आँखों के नीचे स्याह गड्ढे उसके दु:ख की कहानी स्वत: बयाँ कर रहे थे। बेटी की दुर्दशा देखकर माँ का मन भर आया। लक्ष्मी भी माँ से लिपट पड़ी। दोनों गले लगकर न जाने कितनी देर तक अश्रुओं से एक-दूसरे को भिगोती रहीं।

ममता के आगोश में लक्ष्मी का संताप थोड़ा कम हुआ, तो उसे माँ के इतनी दूर से पैदल चले आने का ध्यान आया। तुरंत उन्हें बिठाकर स्वयं पानी लेने चली गई।

कुशल-क्षेम के बाद बातों का सिलसिला आरंभ हुआ ही था कि कमला और रेणु खेतों से लौट आईं।

'आ गई आज अपनी बेटी की याद?'

आते ही व्यंग्यात्मक लहजे में कमला ने कहा तो पंडिताइन खून का घूँट पीकर रह गईं।

सास और ननद के आते ही लक्ष्मी सहमकर रसोई में जा बैठी।

बेटी की भड़ास माँ पर निकालने को कमला ने पास ही आसन जमा लिया। आशल-कुशल की जगह फिर वही जली-कटी बातें।

'तो क्या सिखा-पढ़ा रही थी तुम्हें तुम्हारी लाड़ली? ये भी बता दिया होगा कि वह पेट से है। लेकिन क्या करना ऐसी कलमुँही संतान का, जो आने से पहले ही बाप को खा जाए!'

सुनते ही पंडिताइन को तो जैसे साँप सूँघ गया हो। कुछ समय तक तो उन्हें समझ ही नहीं आया कि वह इस खबर पर खुश हों या दुःखी! नवविवाहिता बेटी माँ बनने वाली है, इस शुभ समाचार पर कौन माता-पिता फूले न समाएँगे, किंतु किस्मत ने तो उन्हें इस अवसर पर खुश होने का भी मौका न दिया।

ऊपर से समधन के व्यंग्य-बाण उनका सीना छलनी कर गए। कैसी माँ है यह, जो अकाल मृत्यु प्राप्त बेटे के अंश के इस दुनिया में आने पर भी खुश नहीं है।

'यह तो खुशी की बात है समधनजी। इस बहाने सुरेश हमारे बीच रहेगा।' पंडिताइन ने डरते-डरते अपने मन की बात कह डाली।

इतनी देर में लक्ष्मी चाय ले आई तो कमला फिर भड़क उठी-

'खाना खाने का समय है और तू चाय लेकर आ रही है। जाकर खाना बना समधन के लिए।'

सहमी हुई लक्ष्मी की इतनी हिम्मत न हुई कि वह माँ से चाय के लिए पूछ भी ले। चुपचाप जैसे आई थी वैसे ही वापस चली गई।

दीदी की कुछ मदद कर देगी और साथ में बातचीत भी हो जाएगी, यही सोचकर विनीता भी उसके पीछे-पीछे रसोई में चली गई।

'इतनी भी अक्ल नहीं इस लड़की को कि कब क्या करना है? समधनजी, लगता है, आपने कुछ सिखाया नहीं अपनी बेटी को।'

'इसे कहते हैं समय का फेर।' पंडिताइन ने सोचा, जिस लक्ष्मी की सुघड़ता की तारीफ हर जगह होती थी, वही लक्ष्मी आज बेशऊर होने का दंश झेल रही है।

'लेकिन समधनजी, हम तो सुबह भरपेट नाश्ता करके आए थे। बिलकुल भी भूख नहीं है अब।' लक्ष्मी की हालत देख पंडिताइन की भूख-प्यास दोनों ही चली गईं।

इतनी देर में लक्ष्मी ने सबके लिए खाना परोस दिया तो बेटी का मन

रखने को वह न नहीं कर पाईं।

पंडिताइन के गले से नीचे निवाला बड़ी मुश्किल से उतरा। पता नहीं, इस स्थिति में लक्ष्मी को भर पेट खाना भी मिलता होगा या नहीं। सोचा, लक्ष्मी को कुछ दिन के लिए अपने साथ ले जा पातीं तो कितना अच्छा होता। मन में आई बात जुबान पर भी आ गई। शायद समधन कुछ दिन के लिए भेज ही दें।

'क्यों?' कमला ने सीधा प्रश्न किया।

'अपने बाबूजी से भी मिल लेती और इस अवस्था में थोड़ा सा आराम भी मिल जाता।' हड़बड़ाहट में पंडिताइन अपने मन की बात छुपा नहीं पाईं।

'तो क्या यहाँ हम मार रहे हैं आपकी लाड़ली को?'

'नहीं-नहीं, मेरा मतलब ये नहीं था।' पंडिताइन ने बात को सँभालने का प्रयास किया। लेकिन कहते हैं न कि तीर कमान से और बात जुबान से एक बार निकल गए तो वापस नहीं आते। कमला को तो एक बहाना मिल गया था ताना मारने का।

'तो क्या मतलब था आपका? भरपेट खाने को नहीं दे रहे हैं या ज्यादा काम ले रहे हैं उससे?'

समधन का रौद्र रूप देखकर पंडिताइन ने चुप रहना ही बेहतर समझा। कमला बड़बड़ाती चली जा रही थी–

'ये तो हमारे बेटे को खा गई, तब भी हमने इसे अपने साथ रखा है। इस बात का अहसान मानना तो दूर, ऊपर से आरोप लगा रहे हैं हम पर।'

'आपकी कृपा है, मैंने तो ऐसे ही कह दिया।' पंडिताइन की आँखों से आँसू निकल आए।

'ले जाना है तो ले जाओ, लेकिन फिर वापस मत लाना इस मनहूस को। साफ कहना और सुखी रहना।' कमला ने बड़ी चालाकी से कहा। उसे अच्छी तरह मालूम था कि विधवा बेटी को हमेशा के लिए घर में रखने का साहस उसके माता-पिता कभी नहीं कर पाएँगे।

दरअसल, कमला बाहर-ही-बाहर बहू को जितनी भी गालियाँ देती रहे, किंतु यह बात सत्य थी कि लक्ष्मी के रहते माँ-बेटी को आरामतलबी की जो आदत पड़ गई थी, वह जल्दी से हटने वाली न थी। दिन-रात सास की गालियाँ और मार खाकर भी लक्ष्मी मशीन की तरह घर के काम में लगी रहती थी।

'कैसी बात कर रही हैं, समधनजी। हमारे लिए तो बेटी उसी दिन पराई हो गई जिस दिन हमने उसे इस घर के लिए विदा किया था। अब तो लक्ष्मी आपके घर की इज्जत है।' लक्ष्मी को हमेशा के लिए अपने घर में रखने की बात पर पंडिताइन सिहर उठी थीं। लक्ष्मी के कष्टों का अनुमान होने के बाद भी कुछ न कर पाने की लाचारी से उन्हें अपने आप पर ही क्रोध आया। किंतु वह लाचार थीं।

अँधेरा होने से पहले अपने गाँव भी वापस पहुँचना था, इसलिए पंडिताइन ने समधन से विदा ली। 'अरे बहू, कहाँ मर गई? तेरी माँ वापस जा रही है, बाहर तो निकल आ। पता नहीं कब तमीज आएगी इस कमबख्त को!' कमला जोर से चिल्लाई तो सहमी सी लक्ष्मी बाहर आ खड़ी हुई।

बेटी की हालत देखकर माँ का मन एक बार फिर पसीज गया। उसका मन हुआ, अभी बेटी को अपने साथ ले चले। बाद में जो होगा, देखा जाएगा। जब सामने ही सास ऐसा बरताव कर रही है तो पीठ पीछे तो भगवान् ही मालिक है।

लेकिन अगले ही पल उनका ध्यान विनीता की ओर गया और विवश माँ के आगे तीनों बेटियों का चेहरा घूम गया। मन की पीड़ा को दबाते हुए उन्होंने बेटी की ससुराल से विदा ली।

□

नौ

छोटी उम्र में पति को खो चुकी लक्ष्मी, अब दु:ख और अभाव को ही अपनी नियति मानने लगी थी। सोचने-समझने की उसकी शक्ति क्षीणप्राय हो चुकी थी। एकदम मशीन की तरह दिन-रात काम में व्यस्त रहती थी।

सारे दिन की हाड़-तोड़ मेहनत के बाद सास यह भी न पूछती कि उसने भरपेट खाना भी खाया है या नहीं। सांत्वना के दो बोल सुनने को भी तरस जाती लक्ष्मी।

चचिया सास उससे अगाध स्नेह रखती, लेकिन जेठानी के भय से अधिक बात न कर पाती। उसकी अनुपस्थिति में कभी-कभी लक्ष्मी को खाने को कुछ दे जाती।

भय से काँपती लक्ष्मी के आँसू निकल आते। माँ होती तो वह भी ऐसे ही करती इस समय।

'बेचारी बहू। भाग्य ने साथ दिया होता तो सब सिर-आँखों पर बिठाकर रखते इस समय।' चाची सोचती।

पिता तुल्य ससुरजी बहू से स्नेह रखते, लेकिन वे तो दिन भर घर से बाहर ही रहते। दबी जुबान से दो-एक बार पत्नी से इस स्थिति में बहू का खयाल रखने को कहा भी; किंतु उन्हें तो पता भी न लग पाता कि लक्ष्मी के साथ पूरे दिन कैसा बरताव होता है। उनसे लक्ष्मी का सामना भी कम ही होता।

एक राहुल ही था, जो स्कूल जाने से पहले और बाद में भाभी से बात करना नहीं भूलता था।

'भाभी, इन्होंने आपकी चूड़ियाँ क्यों उतारीं?' सुरेश की मृत्यु के कुछ ही दिन बाद मासूमियत से पूछे गए इस सवाल से लक्ष्मी की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे थे।

भाभी को रोता देखकर राहुल सहम गया। ऐसा क्या कह दिया उसने? उसकी आँखों से भी आँसू बह निकले। भाभी ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे गले से लगा लिया। स्नेह की गरमाहट पाते ही उसके आँसू तो थम गए, किंतु मन-ही-मन इस प्रश्न को फिर कभी न पूछने का उसने संकल्प ले लिया।

रेणु तो भाभी से मतलब से ही बात किया करती। सारे दिन माँ के साथ खेतों में काम करने के नाम पर गायब रहती और शाम को भी गाँव भर में घूमती रहती। भाभी के शृंगार का सामान अब उसके काम आ रहा था। गाँव के समीप लगनेवाले थौल-मेलों से भी अपने लिए क्रीम, पाउडर, लिपस्टिक लाना न भूलती रेणु। लक्ष्मी को आश्चर्य था कि बहू की एक-एक गतिविधियों पर ध्यान रखनेवाली सास का ध्यान अपनी जवान होती बेटी पर क्यों नहीं है? क्या करे वह, पहले की बात होती, तो समझाती उसे। अब तो उसके कुछ कहने भर से ही घर में कोहराम मच जाएगा।

'हे ईश्वर! यह किसी गलत राह पर न चल पड़ी हो।' लक्ष्मी ने मन-ही-मन प्रार्थना की।

लेकिन कुछ ही दिनों बाद कुछ ऐसा हो गया कि न चाहते हुए भी लक्ष्मी की जुबान खुल ही गई।

गाँव की एक वृद्ध महिला की तबीयत अधिक खराब होने पर कमला साँझ ढलते ही वहाँ चली गई। माँ को घर से निकलते देख रेणु भी चुपचाप निकल ली।

लक्ष्मी ने शाम के भोजन की तैयारी आरंभ की। ससुरजी ऊपर अपने कमरे में थे। राहुल भी वहीं अपनी पढ़ाई कर रहा था।

आठ बज गए। लक्ष्मी भोजन तैयार कर प्रतीक्षा में बैठी रही। न तो सास ही आई और न रेणु। उसने सोचा, दोनों साथ ही गई होंगी शायद।

थोड़ी ही देर में धमधमाती हुई रेणु रसोई में आ बैठी।

'खाना दो, भूख लगी है।'

'सासजी को तो आ जाने दो।' लक्ष्मी बोली।

'माँ नहीं आईं!' रेणु ने उलटा सवाल किया तो लक्ष्मी ने अनुमान

लगाया कि दोनों साथ नहीं थे।

'तू कहाँ थी इस वक्त तक?' न जाने कहाँ से लक्ष्मी के अंदर एकाएक इतनी शक्ति आ गई!

'तुम कौन होती हो पूछने वाली? भैया को छीनकर भी तुम्हारा मन नहीं भरा और अब बड़ी खैरख्वाह बनने का नाटक कर रही हो।'

यह सुनते ही बुरी तरह तिलमिला उठी लक्ष्मी। पूछना चाहती थी, 'क्या कह रही है तू रेणु! तू बड़े-छोटे का भेद भी भूल गई क्या?' पर वह खून का घूँट पीकर रह गई। कुछ देर मौन रही, लेकिन मन न माना तो रेणु को घर की मान-मर्यादा समझाने लगी। अभी वह रेणु को समझा ही रही थी कि कमला पहुँच गई।

कमला के आते ही लक्ष्मी के शब्द उसके गले में ही घुटकर रह गए, पर माँ को देखते ही रेणु का साहस और बढ़ गया।

'माँ, समझाओ इसे, जब देखो मेरे पीछे पड़ी रहती है।'

'क्यों पीछे पड़ी है तू इस बेचारी के?' कमला ने गुस्से में पूछा।

'कुछ नहीं माँ, मैं थोड़ी देर के लिए सुनयना के घर चली गई थी। वापस आई तो लगी ये उलटा-सीधा बोलने।' लक्ष्मी कुछ कह पाती, उससे पहले ही ननद ने अपनी सफाई दे डाली। साथ ही अच्छा-खासा नाटक कर आँखों में आँसू भी ले आई।

लक्ष्मी हैरान थी। क्या कह रही है रेणु। ऐसा क्या कह दिया उसने। और इतनी देर से घर से गायब है, ये बात तो छुपा ही ली। माँ की सीख उसे याद हो आई। 'कितना भी काम हो बेटी, अँधेरा होने से पहले घर लौट आया करो। इसी में बहू-बेटियों की इज्जत रहती है।' माँ की इसी सीख को लक्ष्मी रेणु को भी सिखाना चाहती थी।

लेकिन सास ने लक्ष्मी को सफाई का कोई मौका ही न दिया। बेटी की आँखों में आँसू देखकर कमला आगबबूला हो उठी।

'मेरी बेटी को बुरा-भला कहती है! तेरी इस गंदी जुबान पर ही डाम धर दूँ, तभी ठीक रहेगी तू।' कहते हुए कमला ने चूल्हे से अधजली लकड़ी उठा ली।

रेणु के चेहरे पर विजयी मुसकान घिर आई तो दूसरी ओर लक्ष्मी भय से चीख उठी। सास साक्षात् रणचंडी बनी उसी की ओर आ रही थी। भय से उसने आँखें बंद कर अपने आप को परिस्थितियों के हवाले कर दिया।

रात के सन्नाटे को चीरती भाभी की चीख सुन राहुल दौड़ता चला

आया। कमला का हाथ बहू को मारने के लिए उठा ही था कि राहुल दौड़कर भाभी से लिपट गया।

कमला ने खींचकर बेटे को हटाना चाहा तो राहुल ने उन्हें धक्का देकर दूर कर दिया। अब तो कमला का गुस्सा लक्ष्मी को छोड़ राहुल पर फूट पड़ा। लक्ष्मी तो बच गई, लेकिन राहुल को पिटने से न बचा पाई। कमला लक्ष्मी को गाली देती और राहुल को मारती रही।

उस रात घर में किसी ने खाना न खाया। मार खाकर राहुल लक्ष्मी की गोद में ही दुबककर सो गया।

उस दिन से लक्ष्मी ने रेणु को कभी भी कुछ न कहने का संकल्प ले लिया, किंतु ननद के हाव-भावों से मन-ही-मन वह आशंकित थी। ससुरजी से अपनी आशंका व्यक्त करने की हिम्मत नहीं थी और राहुल इन सब बातों को समझने के लिए अभी अबोध था।

रेणु अब और अधिक निरंकुश होकर मनमानी पर उतर आई। लक्ष्मी ने तो उस ओर से आँखें ही मूँद लीं।

कुछ ही महीनों बाद नन्हे शिशु के आगमन ने लक्ष्मी के जीवन में नई आशा का संचार कर दिया।

दर्द से कराहती, पीली पड़ी लक्ष्मी ने शिशु का पहला क्रंदन सुना, तो उसके सारे दुःख-दर्द कुछ पलों के लिए दूर हो गए। गाँव की दाई ने नहला-धुलाकर शिशु को उसके बगल में लिटाया तो उसमें पति की छवि देखकर लक्ष्मी की आँखें छलक आईं।

और राहुल! उसके तो खुशी के मारे जमीन पर पैर ही न पड़ते। स्कूल से आने के बाद भूख-प्यास की सुध छोड़ राहुल सौर-गृह के द्वार पर बैठ जाता। माँ का डर न होता तो अब तक न जाने कब का उस नन्हे से बालक को गोद में उठा चुका होता।

घर का एक अँधेरा कमरा, जहाँ एक कोने में जलाऊ लकड़ियाँ रखी थीं, उसी के दूसरे कोने में पुआल बिछाकर प्रसव के बाद लक्ष्मी के लिए व्यवस्था कर दी गई।

राहुल का ध्यान शिशु के रुई के फाहे जैसे कोमल हाथों पर जाता। यह बिस्तर चुभता नहीं होगा उसे! दो-एक बार माँ से पूछ भी चुका था, किंतु कोई संतोषजनक जवाब न मिला। अगले ही दिन चोरी से दो चद्दरों की तह बनाकर भाभी को पकड़ा गया।

'छुटकू के नीचे रख दो।'

'छुटकू!' यही नाम दिया था उसने नवजात शिशु को। ग्यारहवें दिन नामकरण होगा, ऐसा उसे बताया गया था। जब से पता लगा था, तभी से राहुल अच्छा सा नाम तलाशने में जुट गया।

कमला और रेणु को आजकल चौका-चूल्हा भी देखना पड़ता तो जरा-जरा सी बात पर झल्ला जातीं। मन-ही-मन अब उन्हें बहू के रहने की महत्ता का आभास हुआ। किंतु उसे शब्दों में व्यक्त कर अपने को छोटा समझने की बेवकूफी कैसे कर सकती थी कमला!

दो-तीन दिन बाद लक्ष्मी के माता-पिता को पुत्र-जन्म की खबर मिली तो दौड़े चले आए। बड़े यत्न से पंडिताइन ने दो किलो घी इकट्ठा कर रखा था। पहुँचते ही समधन के हाथ में घी से भरी परोठी पकड़ाई तो कमला ने बुरा सा मुँह बनाया। लक्ष्मी से सहानुभूति रखनेवाले लोगों से चिढ़ हो आती थी उसे।

लक्ष्मी पास के गधेरे में अपने और नवजात शिशु के कपड़े धोने गई थी। वापस लौटी तो माता-पिता को आँगन में बैठे पाया।

'क्या हाल हो गया है लक्ष्मी का? पीला पड़ा चेहरा, जैसे पूरा शरीर ही निचोड़ लिया हो। आँखों के नीचे गहरे काले गड्ढे।' पिता तो कई महीनों बाद देख रहे थे उस अभागन को।

उधर लक्ष्मी पिता को देखकर हैरान थी। कितने कमजोर हो गए हैं। अभी उम्र ही क्या है इनकी, लेकिन असमय ही बूढ़े लगने लगे हैं।

रविवार का दिन था। पिता समधी के साथ उनके कमरे में चले गए तो लक्ष्मी ने पिता की इस हालत के लिए माँ से पूछ ही लिया।

'कई महीनों से बुखार रहता है। दिन में उतरता है तो शाम को फिर चढ़ जाता है। इतना चलने की हिम्मत भी नहीं थी, लेकिन तुझे और तेरे बच्चे को देखने की चाहत यहाँ तक खींच लाई।' माँ ने धोती के छोर से आँखें पोंछीं।

अपने ही दु:ख से दु:खी लक्ष्मी अब पिता की हालत देखकर सहम गई।

उसी दिन अपने गाँव वापस लौटने की पंडितजी की सामर्थ्य न थी, अत: न चाहते हुए भी दोनों को एक रात बेटी की ससुराल में बितानी ही पड़ी।

लक्ष्मी शारीरिक रूप से वैसे ही कमजोर थी। इस स्थिति में भी अपने सारे काम स्वयं कर रही है। ऐसे तो सारी जिंदगी के लिए कोई रोग बिठा

लेगी। यह सोचकर अगले दिन वापस घर पहुँचते ही विनीता को लक्ष्मी की ससुराल भेज दिया पंडिताइन ने।

यूँ तो कमला को लक्ष्मी के मायकेवाले फूटी आँख नहीं सुहाते थे, फिर भी घर के काम-काज से मुक्ति की खातिर उसने इसका विरोध नहीं किया।

विनीता ने आते ही घर-बाहर का काम सुघड़ता से सँभाल लिया। कमला के साथ-साथ लक्ष्मी को भी राहत मिली, लेकिन कमला जल-भुन जाती, जब राहुल को हर समय विनीता के आस-पास घूमता पाती।

'जादूगरनियाँ हैं सारी बहनें।' कमला गुस्से में बड़बड़ाती, लेकिन राहुल पर तो उसका कोई असर ही नहीं पड़ता था। भाभी तो अधिकतर गुमसुम ही रहती थी, इसलिए राहुल अपनी सारी जिज्ञासा विनीता से बात करके ही शांत कर लेता।

'छुटकू' का क्या नाम रखा जाए, इसको लेकर दोनों के बीच लड़ाई हो जाती। विनीता उसे चिढ़ाने की कोशिश करती और जब वह रूठ जाता, तो प्यार से पुचकारकर मना लेती।

भाभी की चूड़ियाँ और पाजेब उतारने का राज भी उसने विनीता से ही पूछ लिया था।

'तुम्हारे भैया भगवान् के पास चले गए हैं न, इसलिए।' और कुछ न सूझा तो विनीता ने यही जवाब दे डाला।

राहुल कुछ समझा, कुछ नहीं। भैया के भगवान् के पास जाने से भाभी की चूड़ियाँ उतारने का संबंध उसकी समझ में न आया।

शिशु-जन्म के ग्यारहवें दिन सूतक हटाने के लिए एक छोटा सा हवन कर दिया गया। वैसे भी सुरेश की मृत्यु को अभी साल भी पूरा नहीं हुआ था। नामकरण पर समारोह तो किया ही नहीं जा सकता था।

बहुत प्यार से राहुल ने उसका नाम रखा 'मानस' और विनीता की ओर देख मुँह चिढ़ा दिया। बताना चाहता था कि आखिर उसी का बताया नाम रखा गया है।

भाभी ने धीरे से उसे राहुल की गोद में रखा तो राहुल सिहर उठा। कितना कोमल स्पर्श था मानस का। उसके रोंएँ जैसे हाथ राहुल ने अपने हाथ में लिये और उसकी मुट्ठी के बीच अपनी उँगली फँसा दी। मानस ने कस कर उसकी उँगली पकड़ ली तो राहुल खुशी से फूला न समाया।

नामकरण में शामिल होने पंडितजी तो न आ पाए, हाँ, पंडिताइन बच्चे

के लिए दो जोड़ी कपड़े लेकर पहुँच गईं।

'मामा होता तो इस समय उसके लाए कपड़े पहनता हमारा पोता।' कमला इस मौके पर भी पंडिताइन को उनका कोई बेटा न होने का ताना देने से नहीं चूकी।

अगले ही दिन पंडिताइन विनीता को साथ लेकर वापस लौट गईं और लक्ष्मी ने फिर चौका-चूल्हा सँभाल लिया।

प्रथानुसार जच्चा को इक्कीस दिन तक घर के काम करने की अनुमति नहीं दी जाती। शायद यह प्रथा इसलिए ही बनाई गई होगी कि कुछ दिन जच्चा-बच्चा दोनों को आराम मिल सके।

गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने कमला से जिक्र किया तो उसने इसे पुराने जमाने की रीत कहकर टाल दिया। अगर लक्ष्मी को दस दिन और अंदर बिठाकर रखेगी तो घर का काम कौन करेगा?

कई महीनों बाद राजेश का पत्र आया था। एक सरकारी दफ्तर में अस्थायी नौकरी मिल गई थी। निकट भविष्य में पक्की होने की आशा थी।

इतने दिनों से घर की सुध न लेनेवाले राजेश के प्रति पिता ने तो कोई उत्सुकता न दिखाई, किंतु माँ गर्व से पुलकित हो पूरे गाँव में बेटे की नौकरी लगने की खबर दे आई।

मानस अब दो महीने का हो गया था, लक्ष्मी को जहाँ जीने का सहारा मिल गया, वहीं राहुल को एक खिलौना। स्कूल से आते ही बस्ता एक ओर फेंककर राहुल मानस के पास जा बैठता। कभी मानस सोया मिलता तो राहुल हताश हो उठता।

'भाभी, ये कब सोया था, कब उठेगा?' जैसे कितने ही प्रश्न कर लक्ष्मी को भी परेशान कर देता।

जैसे-जैसे मानस बड़ा हो रहा था, सुरेश की स्पष्ट छाप उसके चेहरे पर दिखाई देने लगी थी।

लक्ष्मी मन-ही-मन ईश्वर को धन्यवाद देती। अच्छा हुआ, मानस की शक्ल उस पर नहीं गई। उसे वह दिन आज भी याद था, जब सास को पहली बार उसके गर्भवती होने का पता लगा था और इस पर उन्होंने उसके चरित्र पर कितने व्यंग्य-बाण चलाए थे। उसके पाक-साफ होने का सबूत था मानस।

□

दस

एक ओर बेटी का दुःख तो दूसरी ओर डाँवाँडोल आर्थिक स्थिति। पंडितजी की जो बीमारी हलके बुखार से आरंभ हुई थी, खत्म होने का नाम ही न ले रही थी।

आस-पास के गाँवों से छोटी-मोटी पूजा का बुलावा आता भी तो बेचारे लाख चाहकर भी अपनी कमजोरी के कारण वहाँ नहीं जा पाते थे।

गाँव के वैद्यजी पुड़िया दे जाते, लेकिन अब उसने भी असर दिखाना बंद कर दिया था। दो-चार दिन पहले ही समीपवर्ती स्वास्थ्य केंद्र में भी दिखा आए थे पंडितजी।

'बड़े अस्पताल जाओ, पंडितजी एक्स-रे कराना पड़ेगा आपका।' कंपाउंडर ने कहा तो इस बात को मन में ही छिपा लिया उन्होंने।

घर में बताएँगे तो पंडिताइन शहर के बड़े अस्पताल जाने की जिद करेगी। कहाँ से आएगा इतना पैसा?

पति की बीमारी का कारण पंडिताइन न जानती हों, ऐसा नहीं था। घर-गृहस्थी चलाने में कुछ मदद कर सकें तो पंडितजी के सिर का बोझ कुछ कम हो। लेकिन वे भी क्या करें?

बहुत सोचने-विचारने के बाद दिल पर पत्थर रख माता-पिता की आखिरी निशानी सोने के कंगन, बेच डाले और उनसे दो दुधारू भैंसें खरीद लाईं। सुहाग जीवित रहेगा तो कंगन फिर भी आ जाएँगे। बाकी गहने तो वह बेटी के विवाह के लिए पहले ही तुड़वा चुकी थीं।

दूध-घी बेचकर कुछ तो आर्थिक मदद कर पाएगी, पंडिताइन ने बस

यही मन में ठानी थी।

वैसे तो गाँव में अधिकांश लोगों के पास अपनी-अपनी गाय-भैंसें थीं, लेकिन स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र इत्यादि में काम करनेवाले लोग किराए के मकानों में रहते थे, इसलिए उन्हीं के पास दूध बेचने का प्रबंध कर लिया था पंडिताइन ने। दो किलो दूध गाँव से कुछ दूर मोटर सड़क पर स्थित चाय की दुकान चलानेवाले कल्याण सिंह ने लेने को कह दिया था।

'भैंसें कहाँ से आईं?' अशक्त पंडितजी ने पूछा तो पंडिताइन के पास जवाब तुरंत मौजूद था–

'थोड़ा पैसा मेरे पास था, बाकी उधार ले आई हूँ। धीरे-धीरे दूध बेचकर चुका दूँगी।' कहने को तो कह गईं पंडिताइन, लेकिन झूठ के बोझ से आँखें झुक गईं।

पंडितजी अनुभवी थे। जानते थे, पंडिताइन झूठ बोल रही हैं। किश्तों में भैंस नहीं मिलती। समझ गए थे कि घर की कोई कीमती निशानी बिक चुकी है; लेकिन पत्नी और बेटियों पर इतना विश्वास था कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया होगा।

पंडिताइन बेटियों से घर-बाहर के चाहे कितने ही काम करवा लेतीं, किंतु दूध देने स्वयं ही जातीं। ज्यादातर नौकरी-पेशेवाले लोग अकेले ही गाँव में रह रहे थे, कल बात का बतंगड़ बनते देर न लगती। यही सोचकर सुबह-शाम पंडिताइन स्वयं दूध पहुँचा आतीं।

धीरे-धीरे घर की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी। लेकिन दुर्भाग्यवश उसी गति से पंडितजी की शारीरिक स्थिति बिगड़ने लगी। अब तो बेचारे कई-कई दिन तक बिस्तर से भी न उठ पाते। लक्ष्मी और मानस को देखने की बहुत-बहुत इच्छा थी उनकी। पंडिताइन के समक्ष अपनी इच्छा उन्होंने जाहिर की, तो वे सोच में पड़ गईं। समधीजी, हाँ उन्हीं से कहना ठीक रहेगा। गाँव के ही किसी आदमी से पंडिताइन ने उनके पास संदेशा भिजवाया।

बेटी की ससुराल में वही एक संवेदनशील इनसान थे, जो बहू की पीड़ा समझते थे; साथ ही पत्नी के उग्र स्वभाव से डरते भी थे। उन्हें जब समधीजी की बीमारी और उनकी इच्छा के बारे में पता चला तो उनके सम्मुख पत्नी को समझाने की सबसे बड़ी समस्या आ खड़ी हुई।

पिता की बीमारी की खबर ने लक्ष्मी को बेचैन कर दिया। सास के आगे मायके जाने के लिए हाथ जोड़ दिए उसने। दो-तीन माह पूर्व देखा पिता

का चेहरा लक्ष्मी की आँखों के आगे घूम गया।

यह लक्ष्मी के आग्रह का प्रभाव था या समधी के प्रति सहानुभूति कि पत्थर-दिल कमला बहू को उसके मायके भेजने को सहमत हो गई; लेकिन सिर्फ दो दिन के लिए। नन्हे मानस को भी साथ जाना था तो राहुल भी साथ हो लिया।

आज तीसरी बार भाभी के गाँव जा रहा था राहुल। लेकिन कितना अंतर था—पहली दो बार के जाने में और अब की बार के जाने में।

पहली बार वह बाराती बनकर आया था। दूल्हे का सबसे छोटा भाई और लक्ष्मी का सबसे छोटा देवर। गाँव की लड़कियों ने मिलकर उसे खूब परेशान किया था। सब मिलकर चिढ़ाते हुए 'जीजाजी' कह रही थीं उसे, जो उसे बिलकुल भी अच्छा न लगा। अभी वह छोटा है, थोड़ा बड़ा हो जाए तो इन सबको एक-न-एक दिन अवश्य सबक सिखाएगा, उसके बाल मन ने ठान लिया था।

लेकिन जब उसने झिलमिलाती लाल साड़ी में लिपटी भाभी को देखा तो उसका सारा गुस्सा ठंडा पड़ गया। लाल रंग की चूड़ियाँ, बड़ी सी गोल नथ, माथे पर टीका, सचमुच उस समय भाभी उसे देवी समान लग रही थीं। फेरों के वक्त जब उन्हें मुकुट पहनाया गया तो राहुल को घर में टँगे कैलेंडर पर बनी देवी की तसवीर याद आ गई।

और उसके बाद तो वह हर समय भाभी के पास ही बैठा रहा था। भाभी की बहिनों और सहेलियों ने खूब ताने कसे, लेकिन राहुल टस से मस न हुआ। वापस लौटने तक तो वह भाभी की आँखों का तारा बन चुका था। घर-आँगन में चलते हुए भाभी के पायलों की छुन-छुन उसे मधुर संगीत के समान लगती। काम-काज करते हुए भाभी की चूड़ियाँ बजतीं तो एक पल के लिए उसे लगता, मानो सारा घर ही संगीतमय हो गया है।

तब से अब में कितना अंतर आ गया है। भाभी का शृंगार-रहित मुरझाया हुआ चेहरा। उनके घर-आँगन में अजीब से सन्नाटे का माहौल, बिस्तर पर लेटे अशक्त पंडितजी, सभी कुछ तो बदल गया था।

छोटी-छोटी बातों में उससे हँसी-ठिठोली करनेवाली भाभी की बहनें भी शांत थीं। भाभी और मानस वहाँ न होते तो राहुल के लिए कुछ पल भी वहाँ रुकना असंभव होता।

मानस और लक्ष्मी के आने से पंडितजी के सूखे चेहरे पर कुछ देर के

लिए रौनक लौट आई।

अगले दिन चैतरामजी बहू को लेने के बहाने समधीजी को देखने भी पहुँच गए।

पंडितजी को देखते ही उनकी आँखों के आगे पिछले ही वर्ष लंबी बीमारी के बाद भगवान् को प्यारे हुए रामप्रसाद का चेहरा घूम गया। टी.बी. थी शायद उसे। लेकिन घर की गरीबी में न तो ढंग से दवा ही खा पाया, न पेट भर खाना।

रामप्रसाद के चेहरे का वही रंग आज चैतरामजी को पंडितजी के चेहरे पर भी नजर आया।

'हे ईश्वर! इनकी रक्षा करना।' मन-ही-मन उन्होंने भगवान् से प्रार्थना की और पंडिताइन को उन्हें बड़े अस्पताल में दिखाने की सलाह देकर बहू को साथ लेकर वापस चले आए।

लेकिन होनी को तो कुछ और ही मंजूर था। पंडितजी की हालत बद से बदतर होती गई। कमजोरी इतनी कि स्वयं चलकर स्वास्थ्य केंद्र तक भी न जा पाते। गाँववालों की मदद से डांडी में बिठाकर लोग स्वास्थ्य केंद्र लाए भी, लेकिन कंपाउंडर ने फिर शहर जाकर एक्स-रे करवाने की सलाह दे दी। जितना कुछ उसे समझ में आया, उतनी दवाई थमा दी।

घर के खर्च से बचाकर कुछ पैसे जोड़े थे पंडिताइन ने। उन्हीं के सहारे देवर-जेठ से बात कर पंडितजी को शहर ले जाने को तैयार कर लिया।

बस, कुछ दिन बाद ही उन्हें शहर ले जाएँगे और सब ठीक हो जाएगा, पंडिताइन यही सोचकर आश्वस्त थीं; लेकिन ऊपरवाला क्या ताने-बाने बुन रहा है, यह उस बेचारी को कहाँ पता था!

निर्धारित दिन से दो दिन पहले पंडितजी को तेज बुखार आ गया। एक तो शरीर में जान नहीं, ऊपर से अन्न का एक दाना भी पेट में नहीं गया। और अंतत: इसी सन्निपात की-सी अवस्था में उनकी साँसें उखड़ गईं।

ब्राह्म मुहूर्त में ठीक बैकुंठ एकादशी के दिन ही प्राण त्यागे थे पंडितजी ने।

'सीधे स्वर्ग जाएँगे, पंडितजी।' गाँव के एक बुजुर्ग ने कहा तो पंडिताइन की सिसकियों के साथ ही आँसुओं की गति और तीव्र हो गई।

'लेकिन हमें यहाँ नरक भुगतने को क्यों छोड़ गए? कैसे पालेगी वह तीन-तीन बेटियों को? एक बेटी का विवाह किया भी तो दुर्भाग्य हाथ धोकर

उसके पीछे पड़ा है।' पंडिताइन मन-ही-मन सोच रही थीं। विपत्ति के इन पलों में बेटियों का मनोबल न टूटे, इसलिए खुलकर रो भी नहीं सकती थीं।

लक्ष्मी को लेने भोर में ही उसके चचेरे भाई को दौड़ा दिया गया था। अपने ससुर और देवर के साथ अंतिम संस्कार से ठीक पहले ही अपने मायके पहुँच गई थी लक्ष्मी।

इस हँसते-खेलते परिवार को अचानक ही किसी की नजर लग गई। अभी उम्र ही क्या थी उनकी। लक्ष्मी उनकी मौत के लिए भी परोक्ष रूप से अपने आप को ही उत्तरदायी मान रही थी। लक्ष्मी के दुर्भाग्य ने उन्हें कहीं का न छोड़ा। उसी कारण उनकी रोजी-रोटी पर प्रभाव पड़ा और तनाव के कारण बीमार पड़ गए। मन-ही-मन अपने आपको कोसा लक्ष्मी ने, फिर एक नजर मानस की ओर डाली। वह नहीं होता तो कब का अपना जीवन त्याग चुकी होती।

'ये शादी जोशीजी को फली नहीं। पहले दामाद गया और अब जोशीजी स्वयं।' भीड़ में खड़ी एक वृद्धा ने कहा तो दूसरी ने हाँ-में-हाँ मिलाते हुए नन्हे मानस को ही अपशकुनी ठहरा दिया।

'पेट में आया तो बाप को खा गया और दुनिया में आया तो नाना को, आगे भगवान् ही मालिक…।'

उसी भीड़ में खड़ा था राहुल। उसको भी कानाफूसी के ये स्वर सुनाई दिए। पहले तक तो उसने इन बातों पर बहुत ध्यान नहीं दिया, किंतु जब बात उसके छुटकू की होने लगी तो उसके कान खड़े हो गए। मन हुआ कि पलटकर उनसे कह दे, उसका छुटकू अपशकुनी नहीं, बहुत भाग्यशाली है।

लेकिन कुछ न कह पाया, मन मसोसकर उस भीड़ से अलग हटकर खड़ा हो गया।

बहू और पोते को वहीं छोड़ चैतरामजी राहुल को साथ लेकर अगले ही दिन वापस चले आए।

'माँ, क्या भैया का विवाह भाभी के पिताजी को फला नहीं?'

राहुल का मासूमियत से पूछा गया सवाल कमला के तन-बदन में आग लगा गया।

'क्यों? किस कमबख्त ने कहा ऐसा?'

परिणाम सोचे बिना राहुल ने मानस और सुरेश को लेकर हुआ सारा

वार्तालाप ज्यों-का-त्यों माँ को सुना दिया।

'अब देखते हैं, कैसे आती है लौटकर यहाँ! एक तो मेरे बेटे को खा गई और ऊपर से वहाँ बैठकर हमारे ही बारे में ऊल-जलूल बातें बना रहे हैं!'

माँ की त्यौरियाँ चढ़ी देख सकपकाया राहुल यह भी न बता पाया कि इसमें भाभी और उनके परिवार का कोई सदस्य शामिल नहीं है, लेकिन माँ कुछ सुने, तब न!

यूँ तो राहुल की उम्र अधिक न थी, किंतु घर की परिस्थितियों ने उसके बाल मन को समय से पहले ही परिपक्व बना दिया था।

माँ का क्रोध देखकर वह समझ गया कि अब भाभी की खैर नहीं। मन-ही-मन उसे बहुत पछतावा हुआ कि क्यों इस बात को अपने मन में नहीं छुपा पाया वह? और अगर पूछना ही था तो भाभी से ही पूछ लेता। क्यों माँ से पूछ बैठा यह सब?

मन-ही-मन पश्चात्ताप कर राहुल भगवान् से भाभी और उसके परिवार की कुशलता की कामना करने लगा।

□

ग्यारह

पंडितजी की तेरहवीं के बाद एक-एक कर सभी लोग विदा होने लगे। अपनों की इस भीड़ में किसी ने भी यह न पूछा कि पंडितजी के बाद अकेली औरत कैसे अपना और अपनी तीन-तीन बेटियों का जीवन-निर्वाह करेगी।

मात्र पंडिताइन की संतानहीन विधवा बहन ने अनीता को अपने साथ ले जाने की इच्छा डरते-डरते अपनी बड़ी बहन के सामने रख दी। अपने जिगर के टुकड़े को कोई भला क्यों किसी और को सौंपना चाहेगा? लेकिन परिस्थितियों की मारी पंडिताइन बहन के इस अपनत्व भरे प्रस्ताव से निश्चिंत हुईं। कम-से-कम एक बेटी का भार तो कम होगा और साथ ही निस्संतान बहन को भी जीने का सहारा मिल जाएगा।

उधर छोटी बहन भी खुश थी। न जाने कब से बाँझ होने का दंश झेल रही थी। उसे डर था कि कहीं बहन अपनी बेटी को उसके साथ भेजने से मना न कर दे। लेकिन जब बहन ने बिना किसी ना-नुकुर के अनीता को उसके हवाले कर दिया तो उसकी खुशी की सीमा न रही।

तेरहवीं में आए ससुरजी से लक्ष्मी ने कुछ दिन और मायके में रहने का आग्रह किया तो उन्होंने मना नहीं किया। साथ ही उसे लिवा लाने को स्वयं आने को कहकर उन्होंने भी वहाँ से विदा ली।

अनीता भी चली गई। अब पंडिताइन के साथ रह गईं विनीता और मीरा, किसी अपने के जाने का और वह भी कुसमय शोक तो बहुत होता है; लेकिन किसी के चले जाने के बाद जीवन नहीं रुकता, यह एक निर्विवाद सत्य है।

पंडिताइन ने एक बार फिर बेटियों के पालन-पोषण के लिए कमर कस ली।

लक्ष्मी के ससुर को गए दस दिन बीत चुके थे, किंतु अभी तक न तो वे उसे लेने आए और न ही कोई रंत-रैबार भेज पाए, तो स्वाभाविक रूप से पंडिताइन के माथे पर चिंता की लकीरें खिच आईं। इस बात का तो उन्हें सपने में भी आभास न था कि राहुल की बातों ने वहाँ क्या गुल खिलाए हैं।

प्रतीक्षा जब बरदाश्त से बाहर हो गई तो पंडिताइन ने स्वयं ही लक्ष्मी को उसकी ससुराल छोड़ आने का निश्चय किया। मुँह अँधेरे ही वह विनीता को साथ लेकर बेटी की ससुराल की ओर चल पड़ीं, ताकि शाम को जल्दी ही घर वापस लौट आएँ।

'अब क्यों आई हो हमारे परिवार से रिश्ता जोड़ने? हमसे तो रिश्ता फला ही नहीं तुम्हारे परिवार को!' पहुँचते ही उन्हें तो समधन के व्यंग्य-बाण सुनने को मिले। क्षण भर के लिए तो सहम गईं पंडिताइन।

अब ये क्या नया बखेड़ा खड़ा हो गया? समधन को चुप और हैरान देखकर कमला ने फिर हावी होने का प्रयास किया।

'मेरा बेटा अपशकुनी, मेरा पोता अपशकुनी, तो अब यहाँ अपनी इस बेटी को लेकर क्यों आई हो? ले जाओ इसे अपने साथ।'

पंडिताइन ने हाथ जोड़ दिए—'क्या गलती हो गई हमसे? हम तो पहले ही अपने दु:खों से दु:खी हैं।'

जितना पंडिताइन झुकती गईं, कमला उतनी ही उस पर हावी होती गई। लक्ष्मी गोद में मानस को लिये बुत बनी एक कोने पर खड़ी रह गई। थोड़ी देर में भूख से कुलबुलाते मानस ने चीख-चीखकर रोना आरंभ किया, तब जाकर दादी का दिल पसीजा।

लक्ष्मी ने डरते हुए घर के अंदर प्रवेश किया और पंडिताइन बेटी की ससुराल का पानी पिए बिना ही आँगन से ही, उलटे पाँव वापस लौट गईं। लक्ष्मी समझ गई थी कि मायके के दरवाजे उसके लिए हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं; लेकिन वह सोचती रही कि आखिर उसके मायके में भीड़ में की गई टिप्पणी पर यहाँ आकर किसने आग लगाई?

राहुल, हाँ, वही हो सकता है। उसे क्या मालूम कि उसकी यह जरा सी नादानी भाभी के जीवन में कितना बड़ा तूफान ला सकती है! मन-ही-मन उसे राहुल पर बहुत गुस्सा आया।

इसी मन:स्थिति में उसने कुछ दिन तक राहुल से बात नहीं की। राहुल भी समझ रहा था कि भाभी उससे नाराज है। उसके मन में अपराध-बोध भी था। राहुल मानस के बहाने भाभी के आसपास मँडराया करता, किंतु भाभी तो हर समय काम में ही व्यस्त रहती।

लक्ष्मी ने अब पूर्णत: समर्पण करते हुए अपने आप को उस घर के वातावरण में ढाल लिया। दिन-रात काम करती। काम करते-करते थककर चूर हो जाती तो रात में सोचने के लिए भी फुरसत न मिलती। ऐसी स्थिति में जाती भी तो कहाँ? कौन था उसका अपना, जो उसे सहारा देता? समाज की बुरी नजरों से बचने का सबसे अच्छा तरीका था, जैसे भी रहने को मिले, ससुराल में ही रहना है।

उसे याद है कि पति की मौत के कुछ समय बाद ही पंदेरे पर उसे अकेली देखकर सुरेश के एक दोस्त ने ही कैसी अश्लील फब्तियाँ कसी थीं। वही दोस्त, जो कल तक 'भाभी-भाभी' कहते नहीं थकता था, सुरेश के जाते ही इतना बदल गया। क्या उसके सिर से पति का साया उठने के बाद भाभी का रिश्ता भी समाप्त हो गया था?

उसके बाद लक्ष्मी जब भी पंदेरे के अलावा घास-लकड़ी लेने जंगल जाती, घर-गाँव से किसी-न-किसी को अवश्य अपने साथ ले जाने का प्रयास करती। लेकिन हर बार ऐसा न होता, कभी तो उसे अकेले जाना ही पड़ता। लेकिन इस घटना के बाद डर के मारे लक्ष्मी ने अकेले जंगल जाने से ही मना कर दिया।

कारण तो न बता पाई, लेकिन सास की ढेरों गालियाँ और मार खाने पर भी वह टस से मस न हुई। हारकर कमला ने इस काम को अपने और रेणु के सिर ले लिया।

किसी तरह इज्जत बची रहे, यही सोचकर लक्ष्मी हर अन्याय को चुपचाप सहन करती गई और किसी तरह अपने दुर्दिनों को व्यतीत करती रही। □

बारह

कई मौसम आए और गए। मेले-त्यौहार चले गए, लेकिन लक्ष्मी के जीवन में कोई बदलाव न आया। मानस अब तीन वर्ष का हो चुका था और राहुल दसवीं का विद्यार्थी था।

आज लक्ष्मी का मन सुबह से अनमना-सा था। न जाने क्यों, रह-रहकर सुरेश की छवि आँखों में कौंध रही थी। दो दिन बाद ही तो पास के गाँव में मकर संक्रांति के अवसर पर लगनेवाला उत्तरायणी का मेला है। उसे याद आया, अपने विवाह के कुछ दिनों बाद ही पड़नेवाले इस मेले में सुरेश के साथ ही गई थी वह। रेणु और राहुल भी उनके साथ हो लिये थे।

रंग-बिरंगे परिधान पहने गाँववासी, बुजुर्ग महिलाएँ जिनकी नाक तीन-चार तोले की नथ से एक ओर ढलकी जाती तो कइयों ने होंठों के नीचे तक छूती हुई बुलाक पहनी हुई थी।

इस बुलाक में ये खाना कैसे खा पाती होंगी; लेकिन देख रही थी कि सलीके से बुलाक को ऊपर उठाकर रस में तर गाढ़े नारंगी रंग की जलेबियाँ वे इतनी सफाई से चट कर रही थीं जैसे बुलाक पहनना कोई बाधा ही न बनता हो।

राहुल का ध्यान खिलौनों की ओर था तो रेणु का चूड़ी, माला, बिंदी की ओर। सुरेश ने सभी को उनकी पसंद का सामान दिलाया और जब लक्ष्मी से पूछा तो वह लजा गई। लक्ष्मी के ना-नुकुर करने के बाद भी सुरेश ने काँच की रंगबिरंगी चूड़ियाँ, बिंदिया और परांदियाँ उसे दिलवा ही दी थीं। कहाँ पहन पाई वह अभागन इन्हें, ईश्वर ने इन्हें पहनने का सौभाग्य ही छीन लिया था उससे।

वैसे तो श्रृंगार संबंधी समस्त सामग्री या तो वह नष्ट कर चुकी थी अथवा उसकी ननद ने उन्हें इस्तेमाल कर लिया था। लेकिन सुरेश की इस आखिरी निशानी को फेंकने का साहस लक्ष्मी नहीं कर पाई थी। तब से यह सब सामान यूँ ही उसके बक्से में पड़ा था।

बक्से से चूड़ियाँ निकाल, अपने हाथों में लेकर उन्हें सहलाने लगी, तभी बाहर से सास के चीखने की आवाज आई।

'छन्न'–एक आवाज हुई और चूड़ियों के टुकड़े चारों ओर बिखर गए। मिट्टी का फर्श होने के कारण कुछ चूड़ियाँ टूटने से बच गईं, लक्ष्मी ने उन्हें उठा लिया। चूड़ियों की किरचें हाथों के साथ-साथ मन को भी लहूलुहान कर गईं।

जल्दी से उन्हें बक्से में डाल, आँसू पोंछकर अपने घाव छुपाती लक्ष्मी बाहर आ गई।

'परसों बसंती की शादी है, जाकर अरसे बनाने के लिए चावल कूट आ।' सास ने आदेश दिया, तो लक्ष्मी चुपचाप बसंती के घर की ओर चल दी।

शादी की तैयारियाँ जोरों पर थीं। गाँव भर की बहू-बेटियाँ उनके आँगन में जमा थीं।

'अब आई असली अरसे बनानेवाली। चल, आ जल्दी बैठ। इससे तो ये पाक ही नहीं बन रहा।' लक्ष्मी के पहुँचते ही चाची ने उसके लिए चूल्हे के पासवाली जगह खाली कर दी। एक ओर ओखल में रात के भीगे चावल कूटे जा रहे थे तो दूसरी ओर चूल्हे पर गुड़ का पाक खौल रहा था। एक तरफ अरसों को तलने के लिए तेल गरम किया जा रहा था।

एक टीम अरसे बना रही थी तो दूसरी गुड़ से गुँधे आटे में सौंफ-नारियल मिलाकर उसे लकड़ी के डिजाइनवाले साँचों में डाल-डालकर रोट तैयार कर रही थी।

आँगन ही नहीं, बल्कि आसपास के पूरे क्षेत्र में खुशबू फैली हुई थी, साथ में बहू-बेटियों के साथ-साथ वृद्धाओं की हँसी-ठिठोली का दौर भी चल रहा था। लक्ष्मी के दुखते मन को थोड़ी देर के लिए वहाँ रुककर बड़ी शांति मिली।

लेकिन उसे कहाँ पता था कि दो दिन बाद ही एक नई तोहमत उसके सिर लगने वाली है।

बसंती की बारातवाले दिन उसके बहुत आग्रह पर उसने कमला से वहाँ

जाने की अनुमति ले ली। बक्से से अपनी एक पुरानी साड़ी निकालकर पहन ली। भीड़ में छिपती-छिपाती लक्ष्मी पर कमला की कब दृष्टि पड़ी, उसे पता भी नहीं लगा।

'इतनी सज-धजकर किससे मिलने गई थी?' आधी रात को सास के मुँह से निकली इस बात ने उसे स्तब्ध कर दिया। लक्ष्मी बोली कुछ नहीं, चुपचाप सिर झुकाए खड़ी थी।

'ये साड़ी पहनकर किसको दिखाना था तुझे वहाँ? किस्मत फूट गई, पर नाज-नखरे नहीं गए महारानी के!' इतना कहकर कमला ने चोटी खींचकर उसे फर्श पर गिरा दिया।

इस पर क्या कहती लक्ष्मी, चुपचाप मार खाती रही और सास की गालियाँ सुनती रही। यह सब अब उसकी आदत बन गई थी। उसी समय राहुल भी विवाह से घर लौटा तो उसने माँ को भाभी के चरित्र पर कीचड़ उछालते सुना। उसका मन क्षोभ से भर उठा। अब वह बच्चा नहीं था, जो यह भी न समझ पाता कि माँ कहना क्या चाहती है।

अगले दिन राहुल स्कूल गया तो क्लास में उसका मन ही नहीं लगा। रह-रहकर भाभी की निर्दोष छवि आँखों में घूम जाती और साथ ही उसे मानस के भविष्य की भी चिंता होने लगी।

इन्हीं चिंताओं में डूबता-उतराता राहुल मध्यांतर के बाद कक्षा में न जाकर जंगल की ओर चल दिया। न जाने क्यों, उसके दिमाग में भाभी की माँ से मिलने का खयाल आया। घर में तो उनके बारे में कभी बात न होती, लेकिन राहुल बाहर ही लोगों से सुना करता कि उनके पारिवारिक हालात ठीक नहीं चल रहे हैं।

क्या भाभी का मन नहीं करता होगा उनसे मिलने का? क्यों न आज उनकी खबर भाभी तक पहुँचाकर उनके चित्त को थोड़ी शांति देने का प्रयास करे वह? और यही सोचकर राहुल स्कूल से भाभी के गाँव की ओर चल दिया।

राहुल को पहले तो किसी ने पहचाना ही नहीं। उम्र के साथ-साथ उसकी लंबाई भी बढ़ गई थी और तीन वर्ष पहले का बच्चा अब बड़ा हो गया था।

बेटी और नाती की कुशलता पाकर माँ खुशी से भावुक हो उठीं। और फिर बेटी की ससुराल से उसका देवर आया है, यही उनके लिए बहुत बड़ी बात थी।

बातों-ही-बातों में कितना समय बीत गया, पता ही न चला। पंडिताइन के प्यार-दुलार से राहुल अभिभूत था, तो वह भी राहुल की आवभगत में कोई कमी नहीं करना चाहती थीं। उन्हें क्या मालूम था कि राहुल बिना घर में बताए यहाँ तक चला आया है।

राहुल स्कूल से समय पर घर न लौटा तो एक-दो घंटे तक किसी ने परवाह न की। कहीं दोस्तों के साथ खेल रहा होगा, लेकिन जब साँझ ढलने लगी और धीरे-धीरे अँधेरा घिरने लगा तो घर में सबको चिंता हुई।

रेणु, कमला और चैतरामजी अलग-अलग जाकर हर संभावित जगह पर देख आए, पूछ आए; लेकिन जब सहपाठियों से पता चला कि वह तो दिन में ही स्कूल से चला गया था तो सबका चिंतित होना स्वाभाविक ही था।

वापस लौटते हुए आधे रास्ते में ही राहुल को हाथ में लालटेन और टॉर्च लिये गाँव के युवक मिले तो वह समझ गया कि उससे गलती हो गई है। लेकिन अब जो हो गया, उसे बदला तो नहीं जा सकता था।

'कहाँ गया था तू?' आँगन में ही खड़ी माँ ने गुस्से में तमाचा जड़ दिया उस पर।

'सीला।'

'सीला! लेकिन क्यों? और किसके पास?'

'भाभी की माँ के पास।' माँ के गुस्से से आतंकित राहुल झूठ नहीं बोल पाया।

'तो जा, वहीं जाके मर।' कहते हुए कमला ने बेटे को जोर का धक्का देकर अपनी खीझ उतारी। बिना किसी को बताए राहुल के वहाँ जाने की खबर सुनते ही कमला आपा खो बैठी थी।

'जा, अब वही है तेरी माँ, वहीं जा के रह।' कमला जोरों से बड़बड़ाती जाती और एक-एक कर राहुल का सारा सामान बाहर फेंकती जाती।

इस समय कमला को कोई रोक सके, ऐसी हिम्मत किसी में वहाँ नहीं थी।

'थोड़ी देर में गुस्सा शांत होगा, तो अपने आप बेटे को अंदर बुला लेगी कमला।' ऐसा सोचना था चैतरामजी का। एक बेटे की अकाल मृत्यु का दुःख और दूसरा बेटा शहर गया तो वहीं का हो गया। अब तीसरे बेटे को खोने की हिम्मत नहीं होगी कमला में।

लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। बहुत देर तक राहुल अपने बिखरे हुए सामान के साथ बाहर आँगन में ही बैठा रहा। आधी रात तक तो चैतरामजी ने

भी उसे बाहर बैठे देखा, लेकिन सुबह के वक्त उनकी आँख लग गई। सुबह उठे तो वहाँ कोई न था।

'कमला का दिल पसीज गया होगा।' उन्होंने मन-ही-मन सोचा। लेकिन कुछ देर बाद ही पता चल गया कि अपनी कुछ किताबें और दो जोड़ी कपड़े लेकर राहुल घर से गायब है।

कमला का गुस्सा तब भी शांत न हुआ था।

'जाने दो, जहाँ जाता है। एक तो गलती करे, ऊपर से माफी भी न माँगे कहीं बरतन माँजने पड़ेंगे तो रोटी-दाल का भाव पता चल जाएगा।' कहने को तो कह दिया कमला ने, लेकिन मन-ही-मन डर रही थी। आखिर माँ थी, मन के एक कोने में बेटे के लिए ममता उमड़ आई। राहुल के जिद्दी स्वभाव को उससे ज्यादा कौन जानता था। लेकिन मन के डर को अहंवश उसने बाहर नहीं आने दिया।

दो दिन बीत गए, राहुल का कहीं पता न था। दो दिन से स्कूल भी न आया था। पिता उसके सभी मित्रों, सहपाठियों और अध्यापकों से पूछ आए, लेकिन कोई कुछ न बता पाया।

कुछ तो चिंता और कुछ क्रोधवश तीसरे दिन भोर होते ही कमला बेटी को साथ ले समधियाने पहुँच गई। मन में एक क्षीण आशा थी कि शायद राहुल वहाँ हो!

किंतु वहाँ पहुँचते ही जब यह आस भी धूमिल हो गई तो उन्होंने समधन की लानत-मलानत कर डाली। उन अभागों को तो ये भी पता न था कि राहुल बिना बताए वहाँ पहुँच गया था। तीनों के मुँह से एक शब्द नहीं निकला। चुपचाप कमला की गालियाँ सुनने के अलावा कोई चारा उनके पास न था।

थोड़ी देर में अपने मन की भड़ास निकालकर कमला तो वापस चली गई, पर पंडिताइन का मन इधर और घबराने लगा। वह सोचने लगीं कि इस अपयश को भी उनकी बेटी के सिर मढ़ते हुए सास अब उसका जीना और भी मुश्किल कर देगी।

पंडिताइन का घबरा उठना गलत भी नहीं था। समधियाने से वापस पहुँचकर कमला ने पहला काम लक्ष्मी पर अपनी भड़ास निकालने का ही किया।

'एक बेटे को खा गई, दूसरा भी तेरी वजह से घर छोड़ गया और अब तीसरा...। आखिर चाहती क्या है तू?'

लक्ष्मी की समझ में न आया कि राजेश के घर छोड़ने से भला उसका क्या संबंध था? चुपचाप सब सुनती रही। सास की किसी बात का प्रतिरोध कर सके, इतनी हिम्मत अब नहीं थी उसमें।

और फिर, प्रतिरोध करके जाती भी कहाँ? यहीं एक ठौर था उसका। मायके के दरवाजे तो सास पूर्व में ही बंद कर चुकी थी और अब इस घटना के बाद तो बची-खुची आशा भी समाप्त हो गई।

राहुल के जाने से लक्ष्मी और मानस ने जहाँ घर में अपना एक हमदर्द खो दिया था, वहीं उसके जाने का अपयश भी लक्ष्मी के सिर ही मढ़ दिया गया था।

राहुल शहर न चला गया हो, यही सोचकर पिता ने बड़े बेटे राजेश को पत्र लिख दिया। यूँ तो राजेश जब से घर से गया था, उसने गाँव आना बहुत कम कर दिया था; लेकिन फिर भी, छोटे भाई को ढूँढ़ने में तो मदद कर ही देगा। उन्होंने सोचा।

पिछले तीन वर्ष से अस्थायी नौकरी कर रहे राजेश की नौकरी पक्की होने के आसार बन रहे थे। पिछले महीने ही उसका पत्र आया तो माँ खुशी से फूली न समाई और कुछ ही पलों में यह समाचार पूरे गाँव को दे आई थी।

बेटा सरकारी नौकरी पर है तो दान-दहेज के साथ-साथ लड़की भी बहुत अच्छी मिलेगी। राजेश के विवाह के सुनहरे सपने देखने शुरू कर दिए थे कमला ने। कुछ ही दिनों में लड़कियाँ देखने का सिलसिला भी चल निकला था।

लेकिन अब ये राहुल का तनाव! पता नहीं कहाँ होगा और किस हाल में होगा…?

□

तेरह

माँ की बातों से आहत राहुल ने आवेश में घर छोड़ तो दिया, लेकिन जाए कहाँ? पौ फटते-फटते पैदल मार्ग तय करके वह मोटर मार्ग पर जा पहुँचा।

कुछ देर वहीं बैठा रहा। फिर दिशा की परवाह न कर जिधर भी जाती पहली बस मिली, उसी में जा बैठा। बस देखी तो कई बार थी उसने, लेकिन बैठने का मौका पहली बार मिला।

हिचकोले लेती बस कच्ची सड़क पर आगे बढ़ी तो उसने बस का हैंडल थाम लिया। बस अभी निकली ही थी, इसलिए बहुत भीड़ नहीं थी। कोई पहचान न ले, इस डर से सबसे आगेवाली सीट पर बैठते ही राहुल ने सिर झुका लिया।

बस कंडक्टर ने टिकट के लिए पूछा तो राहुल की आँखों में आँसू आ गए।

'पैसे नहीं हैं क्या?'

राहुल ने ना में सिर हिला दिया।

'घर से भागकर आया है?'

'नहीं!' राहुल फिर रुआँसा हो उठा।

राहुल की मासूमियत को देख कंडक्टर का दिल पसीज गया। 'बता देना, कहाँ उतरना है।' कहकर कंडक्टर अन्य सवारियों के टिकट बनाने में व्यस्त हो गया।

दो-तीन घंटे के सफर के बाद बस एक कस्बे में रुकी। राहुल भी नीचे उतर आया। स्टेशन पर कई ढाबेनुमा होटल थे। सवारियाँ वहाँ रुककर चाय

नाश्ते का आनंद ले रही थीं। यहाँ कुछ दिनों के लिए दो जून की रोटी का जुगाड़ हो सकता है, सोचकर राहुल वहीं रुक गया।

सुबह से शाम हो गई। भूखा-प्यासा राहुल यहाँ-वहाँ भटकता रहा, लेकिन कहीं ठौर न मिला। देर रात तक ढाबों में चहल-पहल रही, लेकिन जब देर रात पूरे कस्बे में सन्नाटा पसर गया तो अपना बस्ता सिर के नीचे रख वह एक ढाबे के बाहर ही सो गया।

सुबह किसी के झकझोरने से नींद खुली। देखा तो अधेड़ उम्र के एक व्यक्ति को अपने समीप पाया।

व्यक्ति सहृदय था। पास ही में एक ढाबा था उसका।

'काम करोगे मेरे ढाबे में?'

नेकी और पूछ-पूछ! राहुल उसके साथ हो लिया और उसी भोर से राहुल का एक नया जीवन आरंभ हो गया।

सुबह से शाम ढाबे की नौकरी, ग्राहकों की फरमाइशें और जूठे बरतन साफ करते-करते कब दिन बीत जाता, पता ही न चलता। साथ ही जब भी समय मिलता, राहुल किताब खोलना न भूलता। दो महीने बाद ही तो उसकी बोर्ड की परीक्षा थी। परीक्षा दे भी पाएगा या नहीं, कुछ भी निश्चित नहीं था। लेकिन फिर भी उसने पढ़ाई की आदत न छोड़ी।

जल्दी ही अपनी मेहनत और कर्तव्यनिष्ठा से उसने मालिक के साथ-साथ ग्राहकों का भी दिल जीत लिया। खाली समय में जहाँ बाकी लड़के इधर-उधर की बातों में समय गँवाते, वहीं राहुल एकांत में अपनी किताब लेकर बैठ जाता।

ढाबे में आनेवाले कुछ ग्राहक स्थानीय थे, जो नित्य वहीं भोजन करते थे। इनमें अधिकांशत: वे लोग थे, जो अपनी नौकरी के कारण वहाँ अकेले रहते थे। उन्हीं लोगों में एक थे इंजीनियर पांडे।

गढ़वाल के सुदूरवर्ती इलाके के मूल निवासी पांडेजी के दादाजी वर्षों पूर्व नौकरी के चलते अपना पुश्तैनी गाँव छोड़कर देहरादून आ बसे थे। एक बार गाँव क्या छोड़ा कि पूजा-पाठ अथवा विवाह समारोह में ही उनका गढ़वाल जाना हो पाता था।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद जब पांडेजी को पहाड़ों में नौकरी करने का मौका मिला तो उन्होंने सहर्ष इसे स्वीकार किया। अपनी जड़ों से जुड़ने का इससे सुनहरा मौका फिर कहाँ मिलता।

तीन वर्ष सुदूरवर्ती पहाड़ी क्षेत्र में रहने के बाद पिछले पाँच वर्षों से पांडेजी इसी क्षेत्र में थे। पूर्व में पत्नी भी साथ रही थीं, परंतु अब बच्चे की पढ़ाई के कारण सास-ससुर के साथ देहरादून में ही रह रही थीं।

शाम को अकसर इंजीनियर पांडे उसी ढाबे में भोजन करने आते। राहुल पर उनकी निगाह पड़ी तो थम-सी गई।

कितना अलग दिखता है यह लड़का बाकी लोगों से। कुछ दिन तक पांडेजी उसके क्रियाकलापों को ध्यान से देखते रहे। अपने काम से काम और फिर पढ़ाई। उसके बारे में जानने की जिज्ञासा हुई, ऐसा न हो कि इसकी प्रतिभा ढाबे की जूठन में ही दम तोड़ दे।

'राहुल!' किसी ने आवाज दी।

कौन आ गया उसे इस नाम से पुकारनेवाला। यहाँ आकर तो वह अपना असली नाम भूल ही गया था। 'ऐ लड़के', 'छोटू', बस यही दो नाम याद थे अब उसे।

'कहाँ के रहनेवाले हो?'

'जी, गाँव का।'

'यहाँ क्यों और कैसे आए?'

यह एक ऐसा सवाल था, जिसका राहुल के पास कोई जवाब नहीं था, वह सिर झुकाए खड़ा रहा।

'पढ़ते थे क्या?' राहुल को खामोश देख इंजीनियर पांडे ने अगला सवाल पूछा। आजकल के बच्चे, जरा भी धैर्य नहीं, घर में बड़े-बुजुर्गों ने किसी बात पर डाँटा होगा तो चले आए घर छोड़कर। उन्होंने सोचा।

'जी हाँ, दसवीं का बोर्ड है इस साल।'

'कैसे दोगे परीक्षा? घर से तो भाग आए हो।'

इस प्रश्न का जवाब भी राहुल नहीं जानता था। समय मिलने पर पढ़ाई तो कर लेता, लेकिन अपना भविष्य अब उसे अंधकारमय नजर आने लगा था।

'मेरे साथ चलोगे?'

'कहाँ?' उसकी आँखों में प्रश्नचिह्न था। लोगों से सुना था उसने कि पहाड़ के कई गरीब लड़के शहर में साहबों के यहाँ बरतन माँजते हैं, उनके नौकर बनकर रहते हैं। अगर वह भी आज उनके साथ चला गया तो पढ़ाई कर पाने की एक क्षीण आशा, जो उसके मन में टिमटिमा रही है, वह भी बुझ जाएगी।

'मेरे घर, अकेला रहता हूँ। कुछ खास काम नहीं है, अपनी पढ़ाई भी कर पाओगे।'

पता नहीं कौन हैं, उन्हें जानता भी तो नहीं! कैसे चला जाए इनके साथ? फिर दूसरे ही पल उसने सोचा, जब घर छोड़ ही आया है तो फिर क्या डरना! हो सकता है, ढाबे में काम करने से यही बेहतर हो।

उसने हामी में सिर हिलाया।

ढाबे का मालिक उसे छोड़ने को तैयार न था, लेकिन इंजीनियर साहब के अनुरोध पर वह भी मान गया। मालिक से अनुमति मिलते ही अपना बस्ता बगल में दबाए राहुल पांडेजी के पीछे-पीछे हो लिया और पहुँच गया उनके घर पर।

अंग्रेजों के जमाने का बना सरकारी आवास। चारों ओर फैली हुई हरियाली, कुछ फलदार और कुछ जंगली वृक्ष। टीन की लाल चादरों से ढके कस्बे से थोड़ी दूरी पर स्थित इस घर में आकर राहुल को तो जैसे नया जीवन ही मिल गया।

इंजीनियर साहब अकेले ही रहते थे। साथ ही आवास की साफ-सफाई हेतु एक व्यक्ति पहले से ही मौजूद था। राहुल ने धीरे-धीरे खाना बनाना सीखकर रसोई का सारा काम अपने हाथ में ले लिया। घर का सारा काम निपटाने के बाद भी उसे पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय मिल जाता था।

पांडेजी का स्वभाव बहुत अच्छा था। दिन भर तो वे घर से बाहर ही रहते, साथ ही सरकारी दौरों पर उन्हें बाहर भी रहना पड़ता। ऐसे में राहुल पर विश्वास करके सारा घर उसके भरोसे ही छोड़ जाया करते।

कुछ ही दिनों में राहुल को परख-समझ लिया था पांडेजी ने। 'बहुत मेहनती, ईमानदार और शांत लड़का है। न जाने ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ थीं, जो अपना घर छोड़कर चला आया।'

पूछने का प्रयास भी किया; लेकिन इस प्रश्न पर राहुल हमेशा ही चुप्पी साध लेता था।

और एक दिन स्वत: ही उनकी शंका का समाधान हो गया। राहुल को ढूँढ़ते हुए उसके पिता वहीं पहुँच गए थे।

इधर से गुजरते समीपवर्ती गाँव के किसी व्यक्ति ने राहुल को यहाँ पर देख लिया था और उसके घर पर सूचना दे दी थी। इस खबर को सुनते ही एक दिन की छुट्टी ले चैतरामजी पूछते-पूछते वहीं पहुँच गए। ढाबेवालों से

पूछताछ कर अंततः उन्हें इंजीनियर साहब के घर का पता चल ही गया।

'मैं घर नहीं जाऊँगा।' सदा शांत रहनेवाले राहुल के स्वर में दृढ़ता थी।

पिता ने एक बार फिर समझाया, 'क्या करेगा? ऐसे ही धक्के खाएगा, तो हमें भी दुःख होगा।'

किंतु राहुल टस से मस न हुआ। अपने पैरों पर खड़ा होकर भाभी और मानस के लिए कुछ करने की स्थिति में होगा, तभी घर आएगा। वह मन-ही-मन निश्चय कर चुका था। पिता खाली हाथ लौट गए और पांडेजी को समझा गए राहुल के घर छोड़ने का कारण, घर की स्थिति और सबकुछ।

वैसे मन-ही-मन इंजीनियर पांडे का स्वभाव और राहुल की स्थिति देखकर उन्होंने भी अधिक जिद न की। अपने घर में होनेवाली रोज की गाली-गलौज से तो घर से राहुल का बाहर रहना ज्यादा अच्छा लगा था उन्हें।

उस दिन से पांडेजी की निगाह में राहुल की स्थिति और अच्छी हो गई। कभी-कभार उसकी पढ़ाई के बारे में भी पूछ लेते और कभी तो गणित-विज्ञान की किताबें स्वयं हाथ में लेकर उससे प्रश्न पूछना आरंभ कर देते।

राहुल बहुत खुश था, लेकिन कभी-कभी घर की याद आती। सोचता, भाभी और मानस का क्या हाल किया होगा माँ ने उसके चले आने के बाद? सिर्फ कुछ दिन और हैं भाभी के कष्ट के, अपने पैरों पर खड़ा होते ही दोनों को अपने साथ ले आएगा वह।

कभी भाभी के मायके के हालात उसकी आँखों के आगे घूम जाते। कितने स्नेही लोग हैं। विकट परिस्थितियों में भी स्वभाव की मधुरता नहीं खोई। दूसरी ओर माँ है, जो भाभी को उनसे मिलने तक नहीं देती। क्या कभी दोनों परिवारों में मेल-जोल हो पाएगा? इसके लिए भी अपने प्रयत्नों में कोई कमी नहीं रखेगा वह। यही सब सोचते हुए बेचैन हो उठता राहुल।

हाई स्कूल की परीक्षा के लिए राहुल के रहने की व्यवस्था इंजीनियर साहब ने ही कर दी। राहुल के सहपाठियों ने उसके घर में बताया तो माँ का अहं एक बार फिर आड़े आ गया।

'हम जाएँगे उससे मिलने? इतना बड़ा आदमी हो गया है क्या? माँ-बाप की चिंता होगी तो खुद आएगा नाक रगड़कर।'

लेकिन राहुल के पिता इतने कठोर नहीं थे। वह बीच-बीच में जाकर उसे देख आते थे। अंतिम परीक्षा के दिन तो वह पहाड़ी उड़द, गहथ आदि की पोटली बनाकर राहुल को दे आए।

'इंजीनियर साहब के लिये बना देना। पहाड़ी दाल का तो स्वाद ही अलग होता है।' और फिर लौटते हुए अपने काँपते हाथ राहुल के सिर पर रखकर बहुत भावुक हो उठे थे वह।

पुत्र के यूँ भागकर चले जाने की पीड़ा उनके मन को हमेशा सालती रहती थी। बड़ा बेटा खोया, दूसरा बेटा तो घर से मतलब ही नहीं रखता और तीसरा, उसे तो उसकी माँ ने ही बाहर का रास्ता दिखा दिया। पर किसी से कुछ न कहते, बस मन-ही-मन घुटते रहते।

राहुल इम्तिहान के बाद सीधा वापस चला गया तो कमला के क्रोध की सीमा न रही। अपना गुस्सा उतारने के लिए एक ही निरीह प्राणी था उसके पास—बेचारी लक्ष्मी।

'तेरे ही कारण नहीं आया मेरा बेटा घर। तेरी और तेरे घरवालों की सीख पर चल रहा होगा, वरना मेरा बेटा तो ऐसा नहीं था।'

'सासजी मेरे मायकेवालों को क्यों घसीट लेती हैं इस सब में? वे बेचारे तो अपने दुःख से स्वयं ही दुःखी हैं।' लक्ष्मी सोचती।

मायके के दरवाजे तो उसके लिए कब के बंद हो चुके थे। कभी-कभार किसी से कोई खबर-सार मिल जाती तो लक्ष्मी के मन को सुकून मिल जाता।

लक्ष्मी कभी गहराई से सोचती तो देवर राहुल को भी दोषी पाती। अब तो राहुल बड़ा हो गया है, समझदार है, जानता है कि माँ को भाभी के परिवारवालों से मेल-जोल पसंद नहीं, फिर क्यों बिना बताए चला गया उनके गाँव?

लक्ष्मी तो जैसे-तैसे अपनी जिंदगी काट ही रही थी, अब राहुल ने स्वयं के लिए भी कठिनाई मोल ले ली थी, जिसकी सजा वह भुगत रहा था।

□

चौदह

राहुल के घर से चले जाने का ठीकरा बेटी की सास ने पंडिताइन के सिर फोड़ा। अब एक और अपयश उनके सिर पर आ गया। राहुल पर मन-ही-मन उन्हें गुस्सा भी आया। क्या आवश्यकता थी घर में बिना बताए यहाँ आने की?

उस दिन के बाद से बेटी से मिलने के सारे रास्ते स्वत: ही बंद हो गए। नन्हे मानस को देखने को मन तड़पता, लेकिन उसके बारे में आने-जानेवालों से सुनकर ही पंडिताइन अपने मन को शांत कर लेती।

ज्यों-ज्यों विनीता की उम्र बढ़ रही थी, पंडिताइन का तनाव भी बढ़ता जा रहा था। किसी तरह दो जून की रोटी जुटा रही थीं। कैसे करेंगी बेटियों का विवाह? उनके हालातों को देखकर बेटी के लिए रिश्ता माँगने भी कोई न आया आज तक।

इस बुरे वक्त में रिश्तेदारों ने भी मुँह फेर लिया। पंडितजी के सबसे छोटे भाई अपनी नौकरी के कारण शहर में रह रहे थे। एकमात्र उन्हीं को अपनी भतीजियों से सहानुभूति थी। आसमान छूती महँगाई के इस दौर में छोटी सी नौकरी में छह प्राणियों का स्वयं का परिवार पालना ही मुश्किल हो रहा था। दूसरों की मदद क्या खाक कर पाते! फिर भी, कभी-कभार जो कुछ बन पड़ता, उनकी मदद कर दिया करते।

उन्हीं के प्रयासों से एक जगह विनीता का रिश्ता तय हो गया। लड़का उम्र में विनीता से काफी बड़ा और विधुर था। पहली पत्नी का विवाह के एक वर्ष बाद ही प्रसव के समय निधन हो गया। होनेवाले बच्चे और पत्नी की मौत

से दु:खी हो, उसने कई वर्ष तक दूसरे विवाह के लिए हामी ही नहीं भरी। अब 'हाँ' कहा भी तो पाँच लोगों की उपस्थिति में बिना ताम-झाम के विवाह करने को राजी हुआ।

पंडिताइन के मन को थोड़ा सुकून मिला। लड़का और घर-परिवार अच्छा था। उनकी बेटी सुखी रहे, इससे अधिक आकांक्षा मन में नहीं थी।

यूँ तो विवाह सादे तरीके से ही होना था, किंतु अपने परिवार के लोगों की उपस्थिति तो होनी ही चाहिए थी। बड़ी बेटी के ससुरालियों को भी बुलाना आवश्यक था। हो सकता है, इसी बहाने दोनों परिवारों के संबंध सामान्य हो जाएँ।

विवाह समारोह में सम्मिलित होने का न्यौता देने चाचाजी के आने पर ही लक्ष्मी को इस रिश्ते के बारे में पता चला। इसी बहाने मायकेवालों से मिलने की आस बँधी। सास ने इस बार भी चचिया समधी को खरी-खोटी सुनाने में कोई कसर बाकी न रखी। इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न कर आग्रहपूर्वक सबको विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण देकर लक्ष्मी के चाचा लौट गए।

सास इतनी कठोर तो नहीं हो सकतीं कि बहन के विवाह में भी न जाने दें, यही सोचकर लक्ष्मी ने मन-ही-मन सपने बुनना आरंभ कर दिया। विवाह से तीन-चार दिन पहले तो भेज ही देंगी सास उसे। यही सोचती रही, किंतु जब विवाह को दो दिन बाकी रह गए और सास ने जाने का जिक्र तक नहीं किया तो लक्ष्मी का धैर्य जवाब दे गया।

ससुरजी के सामने ही उसने सास से मायके जाने की अनुमति माँगी। जानती थी, वही उसका सहारा बनेंगे और सास उनके कहने से शायद अनुमति दे ही दे। लेकिन उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ससुरजी को तो विवाह के बारे में अब तक पता ही नहीं था।

'तो क्या सासजी ने उन्हें आज तक बताया भी नहीं था?'

चैतरामजी को पत्नी की इस बात पर आश्चर्य हुआ। ठीक है, उन्होंने अपना बेटा भले ही खो दिया हो, लेकिन उस घर की बेटी बहू बनकर आज भी उनके पास ही रह रही है। बेटे के चले जाने से रिश्ता तो समाप्त नहीं हो जाता।

'मुझे बताया क्यों नहीं अब तक?' चैतरामजी के मन की कटुता शब्दों में झलक आई।

सास-ससुर के बीच थोड़ी देर तक इस बात पर बहस चलती रही। सास ने अपना अंतिम निर्णय सुना दिया।

'इस घर से कोई नहीं जाएगा विवाह में।'

'लेकिन क्यों?' ससुरजी के स्वर में आक्रोश था।

'एक बेटे को छीनकर मन नहीं भरा था उनका, जो दूसरे को जीते-जी मुझसे अलग कर दिया!'

'उसको तुम्हारे स्वभाव ने तुमसे अलग किया है।'

अपने पर आरोप लगते देख कमला और भड़क उठी। लक्ष्मी यदि जाना चाहती है तो जाए, लेकिन फिर इस घर में वापस नहीं आ पाएगी। फिर चाहे कोई कुछ भी कर ले। इस बार अपने निश्चय से बिलकुल भी नहीं डिगेगी वह।

बहस बढ़ते देख लक्ष्मी ने दोनों के सामने हाथ जोड़ दिए। उसके विवाह में जाने को लेकर घर में इतनी कलह हो, ऐसा वह हरगिज नहीं चाहती। ससुरजी की जिद के आगे चली भी गई और फिर सास ने उसे यहाँ नहीं आने दिया तो कहाँ जाएगी मानस को लेकर?

कमला एक बार फिर विजयी मुद्रा में खुशी से भर गई। लेकिन अपने निश्चय पर अडिग चैतरामजी घर में बिना बताए विनीता के विवाह में शामिल हो ही आए। वैसे भी दिन-दिन का समारोह था। कमला तो यही समझती रही कि पति नौकरी पर गए हैं।

अगले दिन एकांत में उन्होंने लक्ष्मी को बताया तो उसकी आँखों से आँसू झर आए। श्रद्धा के वशीभूत नतमस्तक हो उसने ससुरजी के चरण छू लिए।

'अच्छा लड़का है। विनीता खुश रहेगी।'

ससुरजी की बात सुन लक्ष्मी के मन को शांति मिली। चलो, माँ की एक जिम्मेदारी तो पूरी हुई। मीरा के लिए तो दो-तीन वर्ष का समय है ही उनके पास। माँ भी कुछ समय चैन से रह पाएगी अब।

लेकिन कहाँ चैन से रह पाईं पंडिताइन? जीवन के झंझावातों ने तन-मन दोनों को खोखला कर दिया था। पिछले कुछ समय से सीने में उठनेवाले दर्द को अंदर ही छुपाती पंडिताइन विवाह के दस दिन बाद ही एक रात ऐसी सोईं कि फिर कभी न उठ पाईं।

अभागी लक्ष्मी को अबकी बार मायके जाने की अनुमति मिल गई। घर में सभी नाते-रिश्तेदार जमा थे। सभी बहनों का रो-रोकर बुरा हाल था। लेकिन मीरा की स्थिति सबसे ज्यादा विकट थी। उसके सिर से तो अब पिता के साथ

ही माँ का साया भी उठ चुका था। कैसे रहेगी अकेले?

'मीरा का यहाँ अकेले रहना अब ठीक नहीं।' कहते हुए चाचा ने अपनी पत्नी की ओर अर्थपूर्ण नजरों से देखा। इस उम्मीद में कि शायद वह कह ही दे कि हम अपने साथ ले जाते हैं। लेकिन सबकुछ भाँपकर चाची ने मुँह फेर लिया। सीधे-सीधे पत्नी से मीरा को अपने साथ ले जाने को कहकर वे अपने घर में कलह नहीं करना चाहते थे। वैसे भी, विनीता के विवाह में भाभी की मदद करने पर बहुत लांछन लगे थे उन पर और लांछन लगानेवाले भी गैर नहीं, बल्कि अपने ही थे।

भाइयों ने बड़े भाई के घर-मकान पर नजर रखने का आरोप लगाया, तो पत्नी ने अपने परिवार का पेट काटकर उनकी मदद करने का। इसी वजह से इस वक्त उन्होंने चुप रहना ही उचित समझा। मदद करने की इच्छा होने पर भी मन मसोसकर रह गए।

पंडिताइन की तेरहवीं के बाद एक-एक कर रिश्तेदार वापस जाने लगे। लेकिन किसी के मन में एक बार भी मीरा का खयाल नहीं आया। लक्ष्मी और विनीता की स्थिति भी ऐसी न थी, जो बहन को साथ रख सकतीं।

'चल बेटी, अपना सामान बाँध।' उसकी मौसी ने एक बार फिर आगे बढ़कर सहारा दिया था।

अनीता के साथ-साथ मीरा भी मौसी के साथ चली गई तो सबने राहत की साँस ली।

माँ-पिता स्वर्ग सिधारे, दोनों बहनें मौसी के पास चली गईं। लक्ष्मी और विनीता के लिए मायका कहने के लिए कुछ भी न बचा। वहाँ से वापस आते दोनों एक-दूसरे से लिपट बहुत देर तक फूट-फूटकर रोती रहीं। लक्ष्मी ने घर की एक-एक दीवार को छूकर देखा। गोबर-मिट्टी से लिपे फर्श की खुशबू अपने नथनों में भर ली। यह वही घर है जहाँ बचपन से लेकर विवाह होने तक की ढेर सारी खट्टी-मीठी स्मृतियाँ उसके मन में समाई थीं। घर, खेत, खलिहान सभी कुछ तो आज छूट रहा था सदा के लिए।

शायद उनका इस घर में आखिरी मिलन हो, यही सोचकर दोनों बहनों की आँखें धुँधला जातीं।

लौटते हुए पंदेरे पर निगाह पड़ी तो सुरेश की स्मृति एक बार फिर जीवंत हो उठी। काश, उस दिन वह पंदेरे पर नहीं होती तो शायद सुरेश का

विवाह उससे न होता और आज वह जीवित होता। लक्ष्मी ने अपने मन में सोचा।

सास द्वारा बार-बार ताने दिए जाने पर अब लक्ष्मी स्वयं भी अपने आप को ही पति की मृत्यु के लिए उत्तरदायी समझने लगी थी।

एक भरपूर निगाह से उसने पंदेरे की ओर देखा और आह भरते हुए आगे बढ़ गई। उमड़ते-घुमड़ते खयालों के बीच पूरे रास्ते भर उसका मन बेचैन रहा।

□

पंद्रह

परीक्षाएँ समाप्त होते ही राहुल सीधे इंजीनियर पांडेजी के पास लौट आया। 'घर गए थे? सब ठीक है वहाँ पर?' उन्होंने पूछा तो राहुल ने उनका मन रखने के लिए 'हाँ' में सिर हिला दिया। देहरादून में स्कूल ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए बंद हो गए तो पांडेजी की पत्नी और बेटा भी वहीं आने वाले थे।

राहुल मन-ही-मन आशंकित था, मेमसाहब का स्वभाव न जाने कैसा हो? उनसे तालमेल बिठा पाएगा या नहीं, यही भय उसे सताता रहता। लेकिन उनसे मिलते ही उसकी सारी शंकाएँ स्वत: ही दूर हो गईं। सहृदय पांडेजी की पत्नी उनसे भी अधिक मृदु स्वभाव की थीं और उनका चार वर्षीय बेटा शांतनु! वह तो हर समय राहुल के आगे-पीछे ही घूमता रहता था।

शांतनु को देखते ही राहुल को मानस की याद आ जाती। लगभग एक साल ही तो बड़ा होगा शांतनु उसके मानस से। लेकिन कितना अंतर है दोनों में। एक की परवरिश जहाँ माता-पिता और दादा-दादी के लाड़-प्यार व सुख-सुविधाओं के बीच हुई तो दूसरी ओर मानस–जिसे न प्यार मिल पाया, न ही कोई अन्य सुविधा।

शांतनु को देख राहुल को पहली बार पता चला कि शहरों में पहली कक्षा से पहले भी पढ़ाई होती है। गाँव में तो उसने पाँच-छह वर्ष के बच्चे को कक्षा एक में सीधे ही प्रवेश लेते देखा था। नन्हा शांतनु कभी-कभी राहुल से ही ऐसे सवाल पूछ लेता कि उससे जवाब देते न बनता। उसको निरुत्तर देख शांतनु खिलखिलाकर हँस पड़ता। काश, मानस को भी ऐसी शिक्षा मिल पाती!

इसी बीच राहुल का परीक्षा फल घोषित हुआ तो सब लोग प्रसन्न हो उठे। विज्ञान और गणित में विशेष योग्यता प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था राहुल।

'मुझे पता था, तू ऐसा कुछ करेगा, तभी तो ढाबे से उठा लाया था तुझे।' इंजीनियर पांडे ने प्यार से राहुल के सिर पर हाथ फेरा तो उसके आँसू निकल आए।

एक ओर परीक्षा फल की खुशी और दूसरी ओर पांडेजी के प्रति अपार कृतज्ञता का भाव, भावुकतावश राहुल के आँसू बहने आरंभ हुए तो कुछ देर तक उन्होंने थमने का नाम न लिया।

'तुम यहीं ग्यारहवीं में प्रवेश ले लो।' श्रीमती पांडे ने सुझाव दिया, तो पांडेजी ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

लेकिन राहुल को यह मंजूर नहीं था। पहले ही कम उपकार हैं पांडेजी के उस पर, जो एक और बोझ डाले।

विनम्रता से मना कर दिया उसने।

'तो क्या करोगे अब?'

'अगर सहायता करना ही चाहते हैं तो कोई छोटा-मोटा काम दिलवा दीजिए। मानस और भाभी के लिए मुझे काम करने की सख्त जरूरत है।' और राहुल ने हाथ जोड़ दिए।

राहुल की प्रतिभा को देखते हुए पांडेजी उसके अभी से काम करने के पक्ष में नहीं थे, लेकिन उसको और उपकृत कर उसके खुद्दार मन को वे ठेस नहीं पहुँचाना चाहते थे।

'ठीक है, ये तुम्हें काम दिलवा देंगे। लेकिन एक शर्त है।' अगले ही दिन श्रीमती पांडे ने कहा तो राहुल चौंक उठा। न जाने कौन सी शर्त रख देंगे वे लोग उसके सामने, जिसे वह पूरा कर भी पाएगा या नहीं!

राहुल को अपनी ओर टुकुर-टुकुर ताकते देख वह हँस दीं।

'हमारी शर्त है कि तुम यहाँ से कहीं नहीं जाओगे और साथ ही प्राइवेट तौर पर ही सही, अपनी आगे की पढ़ाई भी जारी रखोगे।'

राहुल का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा। शांतनु के स्कूल खुलने वाले थे। पत्नी और बच्चे को छोड़ने पांडेजी भी उनके साथ देहरादून गए।

'राहुल, तुम्हारे यहाँ रहने से मैं निश्चिंत रहती हूँ। वरना ये तो अपने काम में खाना-पीना भी भूल जाते हैं।' जाते हुए श्रीमती पांडे ने कहा तो राहुल

के चेहरे पर सहज सी मुसकान लौट आई।

जाते समय श्रीमती पांडे अपने पति के प्रति राहुल की जिम्मेदारी का अहसास करा गई थीं। और राहुल ने भी इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। कुछ ही समय बाद पांडेजी ने अपने ही विभाग में दैनिक वेतनभोगी के रूप में राहुल की नियुक्ति करवा दी। ऑफिस की ड्यूटी के बाद राहुल कुछ बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाने लगा।

अब वह अति व्यस्त हो गया। सुबह उठकर पहले घर का काम निपटाना, फिर ऑफिस जाना, शाम को ट्यूशन पढ़ाना। अपनी इस व्यस्त दिनचर्या से वह स्वयं भी खुश था। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ रहा था। महीने के अंत में जब कुछ हरे-हरे नोट उसके हाथों में आए तो उसे सहसा विश्वास ही नहीं हुआ।

शाम को पांडेजी के आने पर सारे पैसे राहुल ने उनके हाथ में रख दिए तो वे चौंक उठे। ये क्या कर रहा है राहुल? कहीं यहाँ रहने का मूल्य तो नहीं चुकाना चाहता?

'राहुल, ये क्या है?'

क्या जवाब दे राहुल, पहली कमाई पर लोग मंदिर में प्रसाद चढ़ा आते हैं, लेकिन राहुल के लिए तो मंदिर था ये घर और उसमें प्रतिष्ठित देवता थे पांडेजी। यह सब राहुल कहना चाहता था, लेकिन कह न पाया।

'आप अपने पास रखिए इसे। मैं कहीं खो दूँगा। गाँव जाऊँगा तो ले लूँगा।' अपनी बात से राहुल ने जता दिया था कि यहाँ तो वही उसके अभिभावक हैं।

राहुल को काम करते हुए दो-तीन माह बीत चुके थे। अब उसके पास कुछ पैसे भी इकट्ठे हो गए थे। घर-गाँव की बहुत याद आ रही थी उसे। कितने महीने बीत गए थे मानस को देखे हुए! आज वह अपने पैरों पर खड़ा है। गाँव जाएगा तो उसकी उपस्थिति से भाभी को भी बहुत बल मिलेगा।

यही सोच सबके लिए कुछ-न-कुछ उपहार ले राहुल गाँव चला गया। बस से उतरते ही उसने पैदल राह ली तो बचपन आँखों के आगे जीवंत हो उठा। इन्हीं सघन वनों की छाँव में न जाने कितनी दूरियाँ तय की हैं उसने। और फिर याद आई वह रात, जिसने उसे घर छोड़ने पर विवश किया था।

जिस बियाबान जंगल को पार करने में दिन में भी डर लगता था, उसी जंगल को न जाने किस हिम्मत और गुस्से के वशीभूत राहुल घुप्प अँधियारे में

भी पार कर गया था। उसे याद था, एक बार तो एक घसियारिन पर दिन-दहाड़े भालू ने हमला कर बुरी तरह लहूलुहान कर दिया था। वहाँ मौजूद अन्य महिलाओं के शोर से घबराकर भालू भाग निकला था अन्यथा उस बेचारी को तो वह मार ही डालता।

कितनी ही बार स्कूल जानेवाले छात्रों के झुंड ने उस जंगल में बाघ के दहाड़ने की आवाज सुनी थी। कभी-कभार तो सीनियर छात्र जूनियर छात्रों को डराने के लिए स्वयं ही इस तरह की आवाजें निकाला करते और फिर संरक्षण देने का बहाना कर उनसे अपना काम करवाते। पढ़ाई में अच्छा होने के कारण राहुल को न जाने कितनी बार सीनियर छात्रों का गृह कार्य करना पड़ता।

कुछ मीठी, कुछ कड़वी यादों में खोया राहुल गाँव पहुँचा तो दिन चढ़ आया था। माँ और रेणु खेत में गए थे और भाभी दिन के भोजन की तैयारी में व्यस्त थी। छुट्टी का दिन होने के कारण पिता भी घर पर ही थे।

पिता से मिलने के बाद राहुल सीधे रसोई में भाभी के पास चला आया। यही सोचकर कि माँ के लौटने के बाद तो भाभी से ठीक से बात भी नहीं हो पाएगी।

लक्ष्मी ने राहुल को देखा तो उसे सहसा अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। जहाँ वह एक ओर राहुल के घर से चले जाने का अपयश भोग रही थी, वहीं दूसरी ओर उसने घर में अपना एक बड़ा सहारा भी तो खो दिया था।

भाभी की दशा देख राहुल सन्न रह गया। वह पहले से कहीं अधिक कमजोर हो गई थी। आँखों के नीचे पड़े गड्ढों की कालिमा और ज्यादा बढ़ गई थी। वह सोचने लगा, माँ का स्वभाव तो भाभी के प्रति बदलने वाला नहीं, अब यदि वह मानस के लिए ही कुछ कर पाए तो भाभी के लिए यही बड़ी राहत होगी।

उसकी आँखें भर आईं। भाभी से ही उसे उनके मायके की खुशी और दु:ख दोनों के समाचारों का एक साथ पता चला।

वह भाभी से कुछ और पूछ पाता, इससे पहले आँगन में माँ की आवाज सुनाई दी। उसे यहाँ बैठे देख माँ का गुस्सा भाभी पर न फूट पड़े, इसी डर से बाहर निकल आया राहुल।

राहुल ने जैसे ही माँ के पैर छुए, उन्होंने उसे गले से लगा लिया। मन में दबा गुस्सा आँसुओं की राह बह निकला। साथ ही आरंभ हुआ उलाहनों का दौर। राहुल चुपचाप सब कुछ सुनता रहा।

माँ चाहे ऊपर से कितनी ही कठोर, निर्दयी लगे, लेकिन औलाद के ममत्व के आगे तो पिघल ही जाती है। राहुल के मन में भी माँ के प्रति स्नेह भाव उमड़ आया। बेचारी के एक बेटे को तो भगवान् ने असमय छीन लिया और बाकी दोनों जीते जी उससे दूर हो गए हैं।

सब मिल गए, लेकिन मानस कहीं न दिखा, उसने इधर-उधर देखा और फिर पूछ लिया, 'मानस कहाँ है?'

'अरे होगा कहाँ, कहीं धूल-मिट्टी फाँक रहा होगा। माँ ढंग की होती तो परवाह करती।' माँ ने कटु स्वर में कहा तो राहुल के मन में माँ के प्रति थोड़ी देर पहले उमड़ा स्नेह फिर से दम तोड़ गया।

थोड़ी ही देर में रेणु मानस का हाथ पकड़ आँगन में ले आई। छह महीनों में काफी बदल गया था मानस। पहले तो चाचा को पहचान ही नहीं पाया, किंतु जब राहुल ने अपने बैग से लाल रंग की चमचमाती खिलौना गाड़ी निकालकर उसके हाथ में रखी तो वह तुरंत राहुल की गोद में आ बैठा। उसका ध्यान राहुल से अधिक उस खिलौने पर था, जो दैववश उसके हाथ में आ गया था।

यूँ तो राहुल तीन-चार दिन के लिए गाँव आया था, किंतु जब भाभी से उनकी माँ की मृत्यु के बाद मीरा और अनीता के मौसी के पास रहने का पता चला तो उसने एक दिन पहले घर से निकल उन लोगों से भी मिलने की ठान ली। भाभी के हाथ में अपना पता और कुछ पैसे चुपके से थमा राहुल घर से निकल गया। साथ ही उन्हें धीरे से इस बारे में बता भी गया कि उन लोगों से मिलता हुआ अपनी नौकरी पर लौट जाएगा।

तीन दिन के लिए घर आया राहुल लक्ष्मी के जीवन में नई आशा का संचार कर गया और साथ ही अपने पिता को भी संबल दे गया।

नन्हे मानस ने तो कई दिनों तक चाचा के लाए कपड़े ही पहने। पहले दिन से ही वह चाचा से इतना घुल-मिल गया कि रात को सोने के लिए भी चाचा के पास ही जाता। राहुल ने भी उसे बहुत सारी कहानियाँ सुनाईं, जो उसने अपनी दादी से छुटपन में सुनी थीं।

'रेणु के विवाह की उम्र हो रही है। उसके लिए भी लड़का ढूँढ़ना शुरू करो।' माँ ने एक और जिम्मेदारी राहुल पर डाल दी।

राहुल को लगा जैसे घर से बाहर छह माह के इस अंतराल ने उसे परिवारवालों की नजर में और अधिक जिम्मेदार बना दिया है।

दोपहर के भोजन के बाद घर से निकला राहुल साँझ ढलते ही मौसी के गाँव पहुँच गया। मौसी ने तो उसे पहचाना नहीं, मीरा और अनीता ने उसका परिचय करवाया।

'घर में पूछकर आया है न बेटा, तू?' मौसी का प्रश्न सुनकर राहुल को मन-ही-मन हँसी आ गई। तो पिछली बार का नाटक शायद इन्हें भी मालूम है!

राहुल ने हाँ में सिर हिलाया तो सब हँस पड़े। जानता था, इस झूठ का किसी को पता न चलेगा और अगर पता चल भी गया तो इस बार कोई हंगामा नहीं होनेवाला।

छोटी उम्र में ही निस्संतान विधवा हुई मौसी के परिवार में अब कोई न था। जीर्ण-शीर्ण कच्चा मकान, जिसके एक कोने में गोशाला थी तो दूसरी ओर दो कमरों का घर। पठालों की बनी छत। पठालों के बीच की खाली जगह से बरसात में पानी रिसता, जिससे गोबर-मिट्टी से लिपे-पुते फर्श पर गहरे गड्ढे बन जाते।

कुछ नाली सूखी जमीन जिस पर कोदा, झंगोरा जैसा मोटा अनाज ही पैदा होता—और कुछ नहीं। इसी गरीबी में मौसी बहन के दो बच्चों को पालने की भी हिम्मत कर रही थीं। साथ ही अनीता का स्कूल भी नहीं छुड़वाया था। आठवीं कक्षा में पढ़ रही थी इस समय अनीता।

देर रात तक राहुल मौसी से बातें करता रहा। मौसी अब मीरा के विवाह को लेकर चिंतित थीं। 'बस, इसके हाथ पीले हो जाएँ तो अनीता के लिए तो अभी समय है।'

राहुल मौसी की चिंता समझता था। कैसे मदद कर पाएगा इनकी? मौसी अकेले कैसे कर पाएगी मीरा और अनीता की परवरिश? मौसी से फिर आने का वादा करके अगली सुबह राहुल अपने गंतव्य की ओर चल दिया।

खचाखच भरी बस में किसी तरह खड़े-खड़े सफर करके राहुल घर पहुँचा तो घर की हालत देख मुसकरा दिया। कितना अस्त-व्यस्त हो गया है घर चार दिन में ही! कमरे में गंदे कपड़े पड़े थे और रसोई में जूठे बरतनों का ढेर लगा था।

पांडेजी के ड्यूटी से लौटने तक सभी सामान यथास्थान रख उसने पूरे घर की सफाई कर डाली। सब काम करने के बाद थका-हारा राहुल अपने कमरे में जाकर सो गया।

‘मुझे पता है राहुल, तुम आ गए हो।’ पांडेजी की आवाज सुन राहुल उठ बैठा। बाहर देखा, साँझ ढलने लगी थी। कितनी देर तक सोया रह गया वह!

‘राहुल, घर के अंदर घुसते ही मुझे पता चल गया था कि तुम आ गए हो। देखो कैसी आदत पड़ गई है इस घर को तुम्हारी?’

‘कितने अच्छे हैं साहब! कहाँ वे इतने बड़े अधिकारी और कहाँ मैं! लेकिन फिर भी कितना स्नेह करते हैं वे!’ राहुल ने मन-ही-मन उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

पांडेजी ने घर की कुशल-क्षेम पूछी तो राहुल ने अपने घर से लेकर मौसी के घर और भाभी की बहनों की व्यथा-कथा सविस्तार उन्हें सुना दी।

पांडेजी समझ गए। संवेदनशील प्रवृत्ति का राहुल भाभी के परिवार की भी मदद करना चाहता है।

‘राहुल, ईश्वर तुम्हें इस लायक अवश्य बनाएगा कि तुम सबकी मदद कर सको। अच्छे मनवालों का साथ ईश्वर अवश्य देता है।’

ठीक ही तो कह रहे हैं पांडेजी, राहुल ने सोचा। अभी तक ईश्वर ने ही तो मदद की है उसकी। वरना अभी भी ढाबे में बरतन माँज रहा होता। मन-ही-मन ईश्वर को धन्यवाद दे राहुल दुगुनी मेहनत और उत्साह से अपने काम में जुट गया।

□

सोलह

ज्यों-ज्यों रेणु की उम्र बढ़ रही थी, त्यों-त्यों ही चैतरामजी की चिंता भी बढ़ती जा रही थी। ऐसा नहीं था कि रेणु के लिए रिश्ते नहीं आ रहे थे, लेकिन किसी को माँ मना कर देती थी तो किसी में बेटी को ही नुक्स दिखाई देता था।

लक्ष्मी और चैतरामजी पिछले एक-डेढ़ साल से यह तमाशा देख रहे थे। लक्ष्मी तो जहाँ इस बात पर मौन ही धारण किए रहती, चैतरामजी अपना विरोध समय-समय पर जता ही देते।

'आखिर तुम लोग क्या ढूँढ़ रहे हो? कमी क्या थी इस लड़के में, जो मना कर दिया?' बुरी तरह खीझ उठते वे पत्नी के व्यवहार पर।

'अरे, तुम क्या जानो दुनियादारी, रिश्ता करने से पहले कितनी बातों का ध्यान रखना पड़ता है।' कमला जवाब दे देती!

'न जाने कौन सी दुनियादारी है, जो माँ-बेटी दोनों निभा रहे हैं।' चैतरामजी जितना सोचते उतना ही तनाव बढ़ता। इसी तनाव के चलते कई दिनों से उनका स्वास्थ्य भी ठीक न था। जरा सा चलते तो साँस फूल जाती। शारीरिक श्रम करते तो थक जाते।

माँ की शह पाकर रेणु और भी अधिक उच्छृंखल हो गई थी। दिन-रात सजना-सँवरना और इधर-उधर घूमना। बस, यही काम रह गया था उसका।

लक्ष्मी कुछ कहना चाहती, लेकिन पिछली बार हुआ तमाशा याद करके चुप्पी लगा जाती।

आखिर हाँ-ना करते-करते माँ को रेणु के लिए लड़का पसंद आ ही

गया। दो बहनों का अकेला भाई था और दोनों बहनें शादीशुदा थीं। पिता सेवानिवृत्त फौजी थे और लड़का स्वयं भी सरकारी नौकरी में था।

छोटा और खाता-पीता परिवार कमला को अच्छा लगा। अकेला लड़का है, बेटी राज करेगी। यही सोच उन्होंने लड़केवालों की स्वीकृति लेकर सगाई का दिन निश्चित कर दिया।

रेणु ने यद्यपि इस बार भी लड़के में कई खामियाँ गिना दी थीं, लेकिन माँ के दबाव के आगे उसकी एक न चली। चुपचाप सबकुछ मान लेने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था।

इस बीच लक्ष्मी ने महसूस किया कि जब से रेणु का रिश्ता हुआ है, तब से वह खोई-खोई-सी रहने लगी है। अच्छे घर में रिश्ता होने की प्रसन्नता उसके चेहरे और हाव-भाव में मौजूद नहीं थी। ससुराल कितनी ही अच्छी हो, ऐसी आजादी तो नहीं मिलेगी। हो सकता है यही कारण हो उसके दु:खी होने का। इतना ही समझ पाई थी लक्ष्मी।

लेकिन वह गलत समझी थी और अपनी इस गलती का पता उसे कुछ ही दिन बाद चल भी गया।

एक रात न जाने क्यों उसे नींद नहीं आ रही थी। उमस भी कुछ ज्यादा ही थी। प्यास से गला सूखने लगा। पानी पीकर लेटी ही थी कि आँगन में किसी के चलने की आहट सुनकर वह उठ खड़ी हुई। आधी रात बीत चुकी, कौन होगा इस समय?

सास-ससुर और रेणु ऊपरवाली मंजिल में सो रहे थे। नीचे लक्ष्मी और मानस अकेले थे। लक्ष्मी को थोड़ा डर सा भी लगा। फिर भी हिम्मत बाँधकर वह दबे पाँव दरवाजे के पास चली आई। धीरे से साँकल खोली और झाँककर देखा, तो पाँव तले की जमीन खिसक गई।

घुप्प अँधियारे में धीरे-धीरे एक छाया आँगन पार कर रही थी।

है तो कोई स्त्री, लेकिन कौन है? और इस अँधियारे में जा कहाँ रही है? कोई भूत-प्रेत की छाया तो नहीं? एक पल के लिए वह काँप उठी।

यूँ तो आजकल शुक्ल पक्ष की रातें थीं और पूर्णमासी के लिए कुछ ही दिन शेष थे, लेकिन आज चंदा की रोशनी को बादलों ने अपने आगोश में ले लिया था।

इतने में क्षण भर के लिए बदली ने चंदा की रोशनी को आजाद किया और उसी पल उस छाया ने सावधानी से पीछे मुड़कर देखा। एक बिजली-सी

कौंधी और लक्ष्मी ने उसे पहचान लिया। रेणु ने हाथ में छोटा सा बैग ले रखा था, दुपट्टे से सिर तो ढका हुआ था, लेकिन असावधानीवश चेहरा खुला ही रह गया।

रेणु कहाँ जा रही है आधी रात को बैग हाथ में लिये? लक्ष्मी साहस जुटाते हुए आँगन में रेणु के सामने जा खड़ी हुई।

'कहाँ जा रही है इस समय? और इस बैग में क्या है?' सवाल दोहराते हुए उसने रेणु के हाथ से बैग छीनने का प्रयास किया, लेकिन रेणु की पकड़ मजबूत थी।

तभी पास की झाड़ियों में सरसराहट हुई और आँगन की दीवार फाँदकर कोई दूसरी ओर कूद गया। लक्ष्मी ने जब तक पीछे मुड़कर देखा, तब तक वह अँधेरे में गुम हो चुका था। इस हड़बड़ाहट में रेणु की पकड़ बैग पर से ढीली हुई तो बैग लक्ष्मी के हाथ में आ गया।

खोलकर देखा तो लक्ष्मी की आँखें फटी–की–फटी रह गईं। कुछ जोड़ी कपड़ों के बीच चमकते हुए आभूषण रखे थे!

'यह सब क्या है? कुछ बताएगी भी या नहीं?' लक्ष्मी ने रेणु के कंधे झकझोरते हुए कहा।

रेणु का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया। कोई और समय होता तो भाभी को उनकी धृष्टता का सबक सिखा देती, लेकिन आज तो उसकी चोरी पकड़ी गई तो खामोश खड़ी रही।

आज वह नजरें भी नहीं मिला पा रही थी। लक्ष्मी ने दोबारा पूछा तो उसकी आवाज की कड़की से रेणु सहम गई।

'धीरे बोलो भाभी, कोई सुन लेगा।' रेणु के स्वर में अतिशय विनम्रता भाँपकर लक्ष्मी समझ गई, कहीं कुछ गड़बड़ है।

अँधेरी सुनसान रात में धीरे से बोली गई आवाज भी कमला की नींद में खलल डाल ही गई। बाहर छज्जे पर आकर उसने नजरें दौड़ाईं तो आँगन में दो लोग खड़े थे। उन्हें देख वह भी नीचे उतर आई।

अरे, ये तो रेणु और लक्ष्मी हैं। ये दोनों क्या कर रही हैं यहाँ? और लक्ष्मी के हाथ में ये बैग कैसा? माजरा क्या है, कुछ समझ में नहीं आया। उसने लक्ष्मी के हाथ से बैग छीनकर उसे खोल लिया।

रेणु और लक्ष्मी दोनों बुत बने खड़े थे। कौन बताएगा उन्हें कि क्या हो रहा था यहाँ पर! लक्ष्मी को तो स्वयं भी पता नहीं था कि आखिर माजरा क्या है?

'कहाँ जा रही थी तू कपड़ा-गहना सब समेटकर?' बैग में किसके कपड़े हैं, यह तो वह अँधेरे में देख न पाई, लेकिन गहने देखते ही आगबबूला हो उठी। बेटी के बारे में तो सपने में भी नहीं सोच सकती थी कि रेणु भी ऐसा कर सकती है।

उधर लक्ष्मी ने भी न सोचा था कि ये गाज भी उसके सिर ही गिरेगी। कुछ कहने को होंठ फड़फड़ाए लेकिन तब तक बीच में ही रेणु ने टोक दिया।

'माँ, आधी रात का समय है। पास-पड़ोसवाले सुन लेंगे। अंदर चलकर बात कर लें!'

कमला की समझ में बेटी की बात आ गई। अंदर आते ही वह फिर लक्ष्मी पर बरस पड़ी–

'घर-परिवार की नाक कटाकर यहाँ से भागने का इरादा था या यहाँ के गहने-कपड़े अपनी बहनों को देने जा रही थी?'

कुछ देर पहले तक रेणु को बचाने का बहाना ढूँढ़नेवाली लक्ष्मी अब अपने पर लगे आरोपों की सफाई ढूँढ़ रही थी।

उसकी चुप्पी से कमला और आगबबूला हो उठी। लक्ष्मी के बाल खींचते हुए उसे जमीन पर ला पटका। ज्यों ही मारने के लिए हाथ उठाया, बेटी ने बीच में ही उसका हाथ पकड़ लिया।

'माँ, सुनो तो।'

'रेणु, तुम बीच में मत बोलो, मैंने गलती की है तो सजा भी मुझे ही भुगतनी होगी।' लक्ष्मी को लगा कि कहीं रेणु माँ के सामने सच्चाई न उगल दे, इसलिए रेणु को इशारा कर बीच में ही बोल पड़ी।

भाभी का इशारा पाकर रेणु चुप हो गई। साथ ही उसने माँ को भी मना लिया कि आधी रात में हो-हल्ला करने से अच्छा सुबह बात करें तो ठीक होगा।

कमला मान तो गई, लेकिन बहू की रखवाली के लिए रेणु को भी साथ छोड़कर बाहर से दरवाजा बंद कर गई।

'कौन था वह? और कहाँ जा रही थी तू?' कुछ ही पल पहले दयनीय बनी लक्ष्मी अब शेरनी की तरह दहाड़ रही थी।

रेणु सहम गई। माँ के गुस्से से उसे बचाकर भाभी ने उपकार किया है उस पर, इस बात को नहीं भूल सकती थी रेणु। और वैसे भी भाभी ने सबकुछ देख ही लिया था। छुपाने को रहा भी क्या था अब!

'सौरभ।'

'कौन सौरभ?' भाभी की तीखी दृष्टि का मुकाबला न कर सकी वह। मानो आँखों-ही-आँखों में निगल जाना चाहती हो उसे।

रेणु ने निगाहें झुकाकर सारी हकीकत बयाँ कर दी।

सौरभ की नियुक्ति गाँव के प्राथमिक विद्यालय में लगभग छह माह पूर्व ही हुई थी। रहने के लिए रेणु की सहेली सुनयना के घर पर कमरा, लिया था उसने।

सौरभ से रेणु की मुलाकात सुनयना के घर पर ही हुई और धीरे-धीरे चंचल व्यवहार की रेणु उसके मोहपाश में बँधती चली गई। सौरभ ने उसे शहर के बड़े-बड़े सपने दिखा रखे थे।

सगाई की तारीख पक्की होते देख रेणु के तो होश ही उड़ गए थे। वह तो सौरभ के साथ विवाह करके शहर की तथाकथित चकाचौंध में रहने के सपने बुन रही थी।

सौरभ को बताया तो उसने घर से भाग जाने की सलाह दी। साथ में कुछ गहना-कपड़ा भी लाने को कह दिया।

'मेरी शहर में नौकरी लग गई है। वैसे तो अगले महीने जाना था, लेकिन अब तुम्हारे कारण कल ही चला जाऊँगा।' कहते हुए उसने रेणु को अपने साथ चलने के लिए मना ही लिया।

और इसी की परिणति थी आज रात की घटना। आज रात ही वे दोनों इस गाँव से निकल जाना चाहते थे।

'शादी करना चाहता है क्या तुझसे?' लक्ष्मी ने उसकी ठुड्डी थामकर चेहरा ऊपर उठाया।

'और तू?' रेणु के स्वीकृति में सिर हिलाने पर लक्ष्मी ने अगला प्रश्न पूछा तो रेणु चुप्पी साध गई।

कितनी बेवकूफ है ये लड़की! इतना भी नहीं समझती कि यदि वो इससे सचमुच विवाह करना चाहता तो घर से भाग निकलने की सलाह देने से पहले आकर परिजनों से बात करने का प्रयत्न करता।

रेणु को ये बातें समझाने का कोई फायदा नहीं था इस समय। इसलिए लक्ष्मी ने कोई दूसरा ही रास्ता निकालने की सोची, ताकि रेणु खुद ही समझ जाए कि वह गलत कदम उठा रही थी।

'कल तू सौरभ से बात करके उसके माता-पिता को यहाँ भेजने के

लिए राजी कर अथवा अभी स्वयं ही आकर ससुरजी से बात कर ले सौरभ।' लक्ष्मी ने रेणु को राह सुझा दी थी। इस राह की मंजिल क्या है, इसका अंदेशा भी मन-ही-मन था उसे।

हमेशा विरोध का झंडा बुलंद करनेवाली रेणु को भी भाभी का सुझाव उचित लगा। जब सौरभ विवाह के लिए राजी है ही तो सबकी सहमति से यह कार्य संपन्न हो जाए, तो ठीक रहेगा और मायके के द्वार भी उसके लिए सदा खुले रहें।

अगली सुबह भाभी द्वारा सुझाए गए रास्ते पर चलते हुए उत्साहित मन से रेणु सुनयना के घर की ओर चल दी।

वहाँ से जब तक रेणु वापस लौटी, माँ घास लेने जंगल जा चुकी थी और पिता अपने ऑफिस। मानस बाहर आँगन में खेल रहा था।

रेणु सीधे भाभी के कमरे में चली गई। देखा, भाभी बेसुध रसोई के एक कोने में पड़ी है। कदमों की आहट सुनकर वह उठ बैठी। आँखें सूजकर लाल हो गई थीं। बाल फैले हुए, जैसे किसी ने पकड़कर खींच दिए हों। कपड़े अस्त-व्यस्त और चेहरे पर जगह-जगह चोट के निशान। रेणु को समझते देर न लगी कि माँ ने रात की घटना के कारण भाभी की ये गत की है।

भाभी के गले से लिपट रेणु फूट-फूटकर रो पड़ी। दोहरे दर्द की रुलाई भी अधिक थी। रेणु की रुलाई सुनते ही लक्ष्मी अपना दर्द भूल गई। समझ गई, ननद प्यार में धोखा खाकर आई है। कुछ पूछने की आवश्कता ही नहीं थी, चुपचाप देर तक उसका सिर सहलाती रही।

रेणु के मन का अपराध-बोध उसे निगाहें न उठाने देता। जिस भाभी का भैया की मृत्यु के बाद उसने सदा तिरस्कार किया, आज उसी भाभी ने इतने बड़े लांछन से उसे बचा लिया। साथ ही चुपचाप माँ की मार भी खा ली, किंतु मुँह न खोला। अन्यथा आज बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता।

रुलाई का आवेग कम हुआ तो बिना पूछे ही रेणु ने लक्ष्मी को सबकुछ बता दिया। सुबह जब वह सहेली के घर पहुँची तो पता चला कि सौरभ तो सुबह ही अपना सामान समेटकर गाँव छोड़ गया है।

'उसकी शहर में नौकरी लग गई है, यही कह रहा था।' सुनयना ने चोर निगाहों से रेणु की ओर देखा। उन दोनों के बीच में क्या पक रहा है, इसकी हलकी सी भनक तो थी उसे भी।

‘क्यों, तुझे नहीं बताया उसने?’ रेणु को बुत बने देख उसी से पूछ लिया सुनयना ने।

‘कितनी देर हुई उसे गए?’ उसका प्रश्न अनसुना कर रेणु ने अपना प्रश्न दाग दिया।

‘अरे, अभी कुछ देर पहले ही गया है। मुश्किल से पंदेरे तक पहुँचा होगा।’

सुनयना की बात पूरी होते–होते रेणु पूरे वेग से पंदेरे की ओर भाग खड़ी हुई। कुछ दूर चलकर गाँव के बाहर ही कंधे पर बैग लटकाए तेज कदमों से चलता हुआ सौरभ उसे नजर आ गया।

‘सौरभ, कहाँ जा रहे हो मुझे छोड़कर?’ सारी लोक–लज्जा त्यागकर रेणु उसका रास्ता रोक खड़ी हो गई।

‘तुम्हें छोड़कर? तुम्हें अपने साथ कब ले जाने वाला था मैं?’ सौरभ के शब्द उसके कानों में पिघले शीशे की तरह पड़े, साथ ही उसकी कुटिल मुसकराहट रेणु का मन चीर गई।

‘सौरभ, भाभी ने सुझाया है कि तुम मेरे माता–पिता से बात कर लो। बाकी सब कुछ तो भाभी सँभाल लेंगी।’ कहते हुए रेणु के आँसू बह चले।

इसके बाद सौरभ ने जो कुछ कहा, उन शब्दों ने रेणु को वहीं जड़ कर दिया।

‘हे ईश्वर! ये धरती फट जाए और मैं यहीं समा जाऊँ! क्या मुँह दिखाऊँगी मैं भाभी को?’ लेकिन सतयुग तो था नहीं कि उसकी इच्छा पूरी होती। यह तो कलयुग था, जिसमें सौरभ जैसे ही लोगों ने जन्म लिया था।

उस जैसी गँवार और अनपढ़ लड़की को तो सौरभ कभी अपने लायक ही नहीं समझता था। वह तो मात्र उस गाँव में अपना वक्त काट रहा था। अपने संस्कारों में जकड़ी रेणु जब विवाह से पूर्व उस पर सर्वस्व लुटाने को तैयार नहीं हुई तो उसने विवाह का झाँसा देकर यह नाटक रचा था। उस अँधेरी रात में वह जानवर अपनी प्यास बुझाकर, उसकी गहनों की पोटली हथियाकर, भाग निकलने की योजना बना चुका था।

कितनी आसानी से कह दिया उसने यह सबकुछ, जैसे रेणु हाड़–मांस का इनसान न हो, कोई मोम की गुड़िया हो। और कितनी बेवकूफ थी वह, जो उसकी चिकनी–चुपड़ी बातों में आकर अपने परिवार तक को छोड़ने पर आमादा हो गई थी।

‘जो हुआ उसे भूल जा, अब कभी किसी से इसका जिक्र तक न करना। अपनी एक नई जिंदगी जीने को तैयार हो जा!’ भाभी ने उसके आँसू पोंछकर उसे गले से लगा लिया।

भाभी उसकी गलती के कारण माँ का कोपभाजन बनी। कितने बड़े पाप से बचा लिया उन्होंने उसे। पैरों में गिरकर माफी माँगना चाहती थी रेणु उनसे अपने व्यवहार के लिए, अपनी अक्षम्य गलती के लिए; लेकिन शब्द कंठ में ही अटक गए।

उसके स्पर्श, उसके चेहरे के भावों, उसके अनवरत बहते आँसुओं ने लक्ष्मी को बिना कहे ही सबकुछ समझा दिया। समझ गई कि विवाह के बाद उसके आस-पास मँडरानेवाली ननद रूपी मित्र, जो बीच में कहीं खो गई थी, आज एक बार फिर उसे वापस मिल गई है।

भाभी की होशियारी से एक बड़ी अनहोनी टल गई। रेणु के भावी सास-ससुर ने मँगनी की तिथि पक्की कर दी। सभी लोग तैयारी में जुट गए। राजेश और राहुल दोनों को पत्र द्वारा सूचित कर दिया गया और आवश्यक सामान लाने को कहकर मँगनी से दो-तीन दिन पूर्व अवश्य पहुँचने की हिदायत दे दी गई।

मँगनी से दो दिन पूर्व जब राहुल मीरा और अनीता को साथ लेकर पहुँचा तो माँ ने त्यौरियाँ चढ़ा लीं।

‘इनसे सारे रिश्ते तोड़ चुके हैं हम। इतना नुकसान किया है हमारे परिवार का, अब क्यों आई हैं यहाँ?’

‘ये अपने आप नहीं आईं, मैं लेकर आया हूँ इन दोनों को यहाँ। जो बात करनी है, मुझसे करो।’

राहुल के स्वर की दृढ़ता से कमला चौंक गई। पिछले कुछ दिनों से उसे लग रहा था कि घर के अधिकांश सदस्य धीरे-धीरे उससे दूर हो रहे हैं। लेकिन अपने अहं में आकंठ डूबी कमला इस पर भी अपनी गलती मानकर अपना व्यवहार-बरताव सुधारने का तनिक भी प्रयास नहीं करती थी।

रेणु और भाभी के बीच सामंजस्य देख राहुल को जहाँ सुखद आश्चर्य हुआ, वहीं यह सब देखकर कमला के माथे पर बल पड़ गए।

मँगनीवाले दिन भी जब रेणु हर समय, हर बात में भाभी-भाभी ही पुकारती रही तो कमला अपने आप को न रोक पाई।

'अरे, इस शुभ कार्य में हर समय उस अपशकुनी को क्यों शामिल कर रही है?'

किंतु रेणु सहित किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। दो माह बाद विवाह का दिन निश्चित कर मेहमान विदा हो गए। दोनों भाइयों की जिम्मेदारी अब और बढ़ गई थी। राजेश तो वैसे भी घर के मामलों में तटस्थ ही रहता था, इसलिए राहुल के कंधों पर ही अधिक भार पड़ने वाला था।

शाम को पिता ने दोनों बेटों को अपने पास बिठाकर बेटी के विवाह के लिए सँजोई गई जमा-पूँजी उनके हवाले कर दी। तय हुआ कि इस समय उनकी स्थिति नए गहने खरीदने की नहीं है, इसलिए माँ के गहनों में से ही रेणु के लिए जेवर बनवा दिए जाएँगे।

दो दिन बाद ही दोनों भाई अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए। जाते हुए राहुल ने मीरा और अनीता को भी साथ ले लिया, जिसे देख माँ एक बार फिर भुनभुना उठी।

'ये छोकरियाँ न जाने कब मेरे बेटों का पीछा छोड़ेंगी! और इसे देखो, अपने माँ-बाप से ज्यादा इनका सगा हो रहा है।' उसका गुस्सा दोनों बहनों के साथ-साथ राहुल पर भी था।

लक्ष्मी और रेणु दोनों ने कमला की बड़बड़ाहट सुनी तो दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकरा दीं।

लक्ष्मी को रेणु के रूप में एक बड़ा संबल मिल गया था। इसलिए सास की बातों का बुरा भी कम लगता। इस समय तो वर्षों बाद अपनी दोनों बहनों से मिलकर लक्ष्मी बहुत खुश हुई थी।

दो महीने बाद ही रेणु का विवाह निश्चित था, अतः सभी लोग अपने-अपने तरीके से विवाह की तैयारियों में जुट गए।

□

सत्रह

विवाह के एक सप्ताह पूर्व ही नाते-रिश्तेदारों के आने से घर में चहल-पहल हो गई। राजेश और राहुल भी एक सप्ताह पूर्व ही आ गए थे। राहुल स्वयं मौसी के गाँव जाकर इस बार मीरा और अनीता के साथ ही मौसी को भी आग्रह कर विवाह में शामिल होने को ले आया।

'माँ ने भाभी के सारे गहने मेरे लिए रख दिए हैं। यह सब मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। तू कुछ कर सकता है क्या?' विवाह से तीन दिन पूर्व ही रेणु ने राहुल को बताया तो उसका मन खिन्न हो उठा।

भाभी के दुर्भाग्य ने पहले ही उनसे बहुत कुछ छीन लिया, लेकिन माँ उन्हें सहारा देने के स्थान पर उनसे सबकुछ क्यों छीन लेना चाहती है? अब ऐन विवाह के समय वह कर भी क्या सकता है?

'क्यों शुभ कार्य के समय मन खराब करते हो? अच्छा ही तो है, मेरे गहने रेणु के काम आ जाएँगे और विवाह का खर्चा भी बचेगा। आज तुम्हारे भैया होते, तो वे भी ससुरजी की मदद करते। उनके स्थान पर अब मैं तो इतना ही कर सकती हूँ।' लक्ष्मी ने राहुल को समझाने का प्रयास किया और सुरेश को याद कर उसकी आँखें भर आईं।

भाभी का आग्रह मानकर उस समय तो राहुल चुप हो गया, लेकिन यह बात फाँस की तरह उसके मन में गड़ गई। आखिर माँ अपने गहने भी तो रेणु को दे सकती थी।

'भविष्य में कभी किसी लायक बन पाया तो भाभी की अमानत उन्हें लौटाने का अवश्य प्रयास करूँगा।' उसने मन-ही-मन प्रण किया।

रेणु के विवाह की तैयारियों में गाँव के सभी लोग जुटे थे। गाँव के युवा जहाँ बारातियों के रहने-खाने की व्यवस्था में लगे थे, वहीं युवतियाँ और महिलाएँ रोट-अरसे जैसे पहाड़ी पकवान बनाने में जुटी थीं। रंग-बिरंगी लड़ियों की कतारों से पूरा घर-आँगन सजाया जा रहा था।

विवाह के दिन सुबह जब रेणु को हलदी लगाकर बान दिए जाने की रस्म होने लगी तो लक्ष्मी स्वयं ही घर की ऊपरी मंजिल के एक अँधेरे कोने में जाकर बैठ गई। शुभ कार्यों में आगे आना तो उसने अभागन होने के बाद वैसे ही छोड़ दिया था।

'उसके अपशकुनी भाग्य की छाया नई दुलहनों पर भी पड़ेगी।' यही सुनती आई थी अब तक अपनी सास से।

मंगलगीतों की ध्वनि के बीच रेणु की निगाहें भाभी को ढूँढ़ रही थी, इस समय किससे कहे कि कोई उन्हें ढूँढ़ लाए!

इशारे से उसने अपनी एक सहेली को अपने पास बुलाकर राहुल से भाभी को बुला लाने को कहा। उसे पता था, राहुल के सिवा भाभी को मनाने का काम कोई और नहीं कर सकता।

राहुल के लाख समझाने पर भी भाभी तैयार न हुई तो अंततः हारकर राहुल ने उन्हें अपनी कसम दे डाली। कसम के बंधन में बँधी लक्ष्मी राहुल के साथ चली तो आई, लेकिन मन शंकाओं से भरा था।

लक्ष्मी को लेकर राहुल जैसे ही वहाँ पहुँचा, माँ का पारा चढ़ गया।

'कहाँ लेकर आ रहा है इस अपशकुनी को इस मंगल कार्य में?'

'भाभी हमारी माँ समान हैं और माँ कभी भी अपने बच्चों के लिए अपशकुनी नहीं हो सकती।' राहुल के इस तर्क ने सबका मुँह बंद कर दिया।

लक्ष्मी ने जैसे ही रेणु को हल्दी लगाई, वह फूट-फूटकर रो पड़ी। लक्ष्मी भी अपने आँसू न रोक पाई। पति के जाने के बाद पहली बार उसे किसी विवाह समारोह में स्थान मिला था।

कमला अचंभित थी। बहू तो पूरी जादूगरनी निकली। ननद की नफरत को भी प्यार में बदल दिया।

रेणु नहाने गई तो बची-खुची हल्दी को लेकर सब आपस में होली खेलने लगीं। भाभियाँ और देवर, जीजा और सालियाँ सब एक-दूसरे को रँगने का अवसर तलाश रहे थे।

हँसी-खुशी के इस माहौल में मीरा और अनीता चुपचाप एक ओर खड़ी

थीं। दुर्दिनों और दुर्भाग्य की छाया ने दोनों से उनका बचपन और अल्हड़पन जैसे छीन लिया था।

राहुल की निगाह उस ओर गई तो वह उनकी ओर बढ़ चला।

'तुम लोग यहाँ अकेले क्यों खड़ी हो? तुम नहीं लगाओगी हल्दी?'

इतने में अनीता ने परात से हल्दी का लोंदा उठाकर राहुल के मुँह पर ही पोत दिया।

'आप भी तो जीजाजी हैं, क्यों न आपसे ही शुरुआत की जाए!' अनीता की इस शरारत से राहुल का चेहरा सुर्ख हो आया।

सारा दिन बारातियों के स्वागत की तैयारियों में बीत गया। कहीं सूजी भूने जाने की खुशबू तो कहीं चटपटी सोंठ बनने की तैयारियाँ, गाँव और आस-पास के ही निपुण रसोइए इस काम को कर रहे थे।

ढोल, मशकबीन की मंगल ध्वनि के बीच रात को बारात पहुँची तो सारा गाँव वहीं इकट्ठा हो गया। कुछ बाराती जहाँ अपनी सौम्यता से मन मोह रहे थे तो कुछ उच्छृंखल युवा शराब के नशे में चूर युवतियों के झुंड के बीच ताका-झाँकी का प्रयास कर रहे थे।

बारात के शामियाने में बैठने के बाद गाँव की कुछ वृद्धाओं ने सुर में सुर मिलाते हुए दूल्हे के रिश्तेदारों को गाली देना आरंभ किया तो राहुल को बड़े भैया के विवाह की याद हो आई। वहाँ भी जब गाँव की महिलाओं ने गाने गा-गाकर उन्हें गाली दी थी तो उसे बहुत गुस्सा आया था। अपना गुस्सा उसने पिता पर जाहिर किया था, तो वे हँस पड़े थे।

'बेटा, यह इस पहाड़ की परंपरा है। मजाक है सब, तुम बुरा मत मानो।'

'कैसी परंपरा है यह, जिसमें दूल्हे के रिश्तेदारों को चुन-चुनकर गाली दी जाए?' राहुल की समझ में न तब आया था और नही आज आ पाया।

अब तो गाँव की कुछ वृद्ध महिलाओं को छोड़कर पहाड़ की यह परंपरा ही लुप्त होती दिखाई देती है।

सुबह चार बजे फेरों का मुहूर्त था। गाँव भर के युवक-युवतियाँ बारातियों के साथ चुहुलबाजी से नहीं चूक रहे थे। इस बीच युवतियों की एक टोली ने दूल्हे के जूते छिपा दिए और दोनों पक्षों में उसे लेकर सौदेबाजी आरंभ हो गई।

इन्हीं सब परंपराओं का निर्वाह करते-करते दोपहर के भोजन के पश्चात् ही बारात विदा हुई। घर-परिवार सहित पूरे गाँव की आँखें नम करके रेणु

अपनी ससुराल के लिए विदा हुई। भाभी के गले लगकर जब रेणु फूट-फूटकर रोई, तो पाषाण हृदय भी अपने आँसू न रोक पाए।

भाभी से अपने सारे गिले-शिकवे दूर कर रेणु आज पराई हो रही थी। बहन को विदा कराने राहुल भी साथ में गया। अगले दिन रेणु की ससुराल से संतुष्ट होकर वापस लौटा। हितेश के घर-परिवार में सभी लोग अच्छे थे। रेणु अगर उन्हें अपना मानकर चलेगी तो खुश रहेगी।

दो दिन बाद पति के साथ रेणु मायके वापस आई। खुशी की आभा उसके चेहरे पर दमक रही थी। माँ ने शाम को सत्यनारायण की कथा रखवाई थी, साथ उसने ही पूरे गाँव को रात के खाने का न्यौता भी दे दिया था।

बड़ी-बूढ़ियाँ ससुराल में मुँह दिखाई में मिले गहनों की नाप-तौल कर रही थीं तो उसकी सहेलियाँ हितेश और उसके घर-परिवार के बारे में पूछ रही थीं। यद्यपि लक्ष्मी सारी व्यवस्था करने में व्यस्त थी, फिर भी आते-जाते नवविवाहिता ननद के हाव-भाव परखना न भूलती। उसे डर था कि पुराने असफल प्रेम की छाया कहीं रेणु के वैवाहिक जीवन को न डस ले। यदि रेणु के मन में अंश मात्र भी सौरभ की यादें जीवित रहीं तो वह कभी अपने पति और ससुरालवालों के साथ न्याय नहीं कर पाएगी।

कथा-समाप्ति के बाद खाने-पीने से निबटकर लक्ष्मी ने चैन की साँस ली। रात भी काफी हो चुकी थी। भाभी को एकांत में पाकर रेणु बाहर उनके साथ ही बैठ गई।

'कैसी है तेरी ससुराल?'

'बहुत अच्छी है भाभी।'

'और हितेश?'

इस सवाल को सुनते ही रेणु के चेहरे पर सुर्खी तैर गई। निगाहें नीची कर लीं उसने। वैसे भी अभी ढंग से पहचाना ही कहाँ था उसने हितेश को! लेकिन जितना भी जाना था, अच्छा लगा। अब भाभी से कैसे कहे इस बात को!

'भाभी, आप न होतीं तो न जाने क्या होता? आपने तो सचमुच बचा लिया मुझे।' अचानक ही भावुक होकर भाभी के पैर पकड़ लिये रेणु ने।

'पागल है तू, मैं कोई पराई थोड़े ही हूँ। अपनों के लिए तो घर में हर किसी के कर्तव्य होते हैं।' लक्ष्मी ने रेणु को गले से लगा लिया।

अगले दिन रेणु जैसे ही ससुराल के लिए विदा होने लगी तो वातावरण

एक बार फिर से गमगीन हो गया। लेकिन इस बार सबको यह खुशी थी कि रेणु अपनी ससुराल में खुश है। हितेश से भी जितनी बात हुई, सबको अच्छा ही लगा।

रेणु का विवाह निपटाकर कमला को अब राजेश के विवाह की जल्दी थी।

'बेटी विदा हो गई, अब बहू चाहिए मुझे इस घर में। एक-दो रिश्ते आए भी हैं। लड़की देख जा और अपना निर्णय सुना दे।'

एक ओर जहाँ माँ को बेटी के विदा होने का गम था तो साथ ही अच्छे घर-परिवार में उसका रिश्ता होने की खुशी भी उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। बेटी की अनुपस्थिति से उपजी इस कमी की भरपाई वह राजेश का विवाह करके करना चाहती थी।

बेटा पक्की नौकरी पर लग गया था, इसलिए उसका विवाह किसी अच्छे घर में धूमधाम से करने का सपना पाले हुए थी कमला। सुरेश का विवाह उसकी इच्छानुसार न हो पाने की कसक उसके दिल से गई नहीं थी अब तक।

लेकिन राजेश ने लड़की देखने का प्रस्ताव अभी टाल दिया।

'ऐसे फैसले जल्दबाजी में नहीं होते, अगली बार लंबी छुट्टी पर आऊँगा, तब देखूँगा।'

माँ को दो-टूक जवाब देकर राजेश वापस चला गया।

राहुल इस बार भी मौसी, मीरा और अनीता को उनके गाँव छोड़ते हुए गया। माँ ने एक बार फिर अपना राग अलापना आरंभ किया लेकिन अब कौन सुनता उसकी?

मौसी मीरा के विवाह के लिए चिंतित थी। कोई गरीब दो रोटी कमानेवाला लड़का मिल जाए तो वे एक जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएँ। राहुल ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह इस कार्य में उनकी हरसंभव मदद करेगा।

इस बार राहुल मानस को गाँव के प्राइमरी विद्यालय में प्रवेश हेतु पिता से कह गया था। जानता था, भाभी अपने आप से यह निर्णय नहीं ले पाएगी, इसलिए किसी बड़े से कहना जरूरी था। चाहता तो था, मानस को अपने साथ ले जाना, लेकिन अभी तो स्वयं दूसरे पर आश्रित था। पांडेजी के वैसे ही बहुत अहसान हैं उस पर। इस समय रेणु के विवाह में भी मदद की थी उन्होंने, साथ ही स्वयं विवाह में सम्मिलित होकर समारोह को गरिमामय बना गए थे।

इन चिंताओं के बीच अब एक नई चिंता जन्म ले रही थी। पिता का दिन-प्रतिदिन गिरता स्वास्थ्य अच्छा संकेत न था। इकलौती बेटी होने के कारण रेणु पिता की लाडली थी। उसकी विदाई उनकी उदासी और बढ़ा गई। पिता को भी अपने पास बुलाकर किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाने की सोची उसने।

अपनी-अपनी ख्वाहिशों, उम्मीदों के सपने लिये सभी लोग जीवन की, अपनी-अपनी जद्दोजहद में जुट गए।

□

अठारह

इंजीनियर पांडे इस बार राहुल का घर-द्वार करीब से देख आए थे। राहुल ठीक ही कहता था कि भाभी की स्थिति बहुत खराब है। अभी उम्र ही क्या है उसकी! होगी बमुश्किल पच्चीस-छब्बीस साल। कैसे काटेगी वह पहाड़ जैसी लंबी जिंदगी! शहरों में तो विधवा विवाह इतनी असामान्य बात नहीं समझी जाती, लेकिन गाँव में तो यह भी संभव नहीं था और फिर लक्ष्मी की सास तो हरगिज ऐसा नहीं होने देगी।

लक्ष्मी के पास जीने का एकमात्र सहारा मानस है। उसकी जिम्मेदारी भी राहुल को ही निभानी होगी। राहुल इस जिम्मेदारी को बखूबी समझता भी है। इस दिहाड़ी की नौकरी में कैसे कर पाएगा सबकुछ? खुद्दार इतना है कि सहायता भी नहीं लेगा।

ऊपर से उसका मन भाभी की बहनों की मदद करने का भी है। पांडेजी इस विषय में जितना सोचते उतना उलझते जाते।

लेकिन कहते हैं न, जिनका मन स्वच्छ होता है, उनकी मदद भगवान् भी करता है। उसी वर्ष इस क्षेत्र की जनता की वर्षों से पॉलिटेक्निक खुलवाने की लंबित माँग सरकार ने मान ली थी। अगले शैक्षणिक सत्र से कक्षाएँ भी आरंभ होनी थीं।

पांडेजी के मन में एक विचार बिजली की तरह कौंधा। क्यों न राहुल को इंजीनियरिंग डिप्लोमा करवा दिया जाए? प्रखर तो वह है ही। प्रवेश परीक्षा पास कर लेगा और तब तक उसकी बारहवीं की परीक्षा भी हो जाएगी। कुछ ही माह बाद पांडेजी ने एक फॉर्म भरकर हस्ताक्षर करने के लिए राहुल के सामने रखा,

जिसे देखकर वह चौंक उठा। यह तो डिप्लोमा इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा का फॉर्म है, कैसे नियमित रूप से स्कूल पढ़ने जा सकता है वह?

'यहीं संस्थान खुल गया है। वहीं तुम्हें प्रवेश मिल जाएगा। फिर कोई चिंता नहीं।' राहुल की निगाहों में प्रश्न-चिह्न देख पांडेजी ने उसकी जिज्ञासा शांत की।

'लेकिन कैसे? मेरी नौकरी? मेरी जिम्मेदारियाँ? और फिर फीस कहाँ से आएगी?'

पांडेजी समझते थे, राहुल को समझाना इतना आसान नहीं। सीधे-सीधे कह देंगे कि वे मदद करेंगे, तो वह मानेगा नहीं, दूसरा ही तरीका अपनाना पड़ेगा।

'तुम परीक्षा में सफल होकर तो दिखाओ। मैं भी तो देखूँ, तुम्हारी पढ़ाई किसी काम की है भी या नहीं? संस्था में प्रवेश लेना, न लेना तो बाद का विषय है।'

राहुल ने एक पल के लिए कुछ सोचा और फिर फॉर्म पर हस्ताक्षर कर दिए, मानो चुनौती स्वीकार कर ली हो।

पांडेजी के चेहरे पर विजयी मुसकान घिर आई। जानते थे, राहुल अवश्य सफल होगा। उसे प्रवेश के लिए कैसे राजी करना है, तब तक कोई-न-कोई तरकीब निकल ही आएगी।

राहुल को अब दो-दो परीक्षाओं की तैयारी करनी थी। एक बारहवीं की और दूसरी पॉलिटैक्निक प्रवेश परीक्षा की।

घर का काम, ऑफिस का काम, बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना और फिर अपनी पढ़ाई के लिए भी समय निकालना। उसकी स्थिति को भाँपकर पांडेजी ने घर के काम के लिए किसी और को बुलवा लिया।

'क्या मेरे काम से आपको कोई शिकायत है, जो आपने किसी और को बुलवा लिया? मेरे यहाँ रहने का क्या औचित्य है अब?' राहुल ने अपनी नाराजगी प्रकट कर ही दी।

'राहुल, तुम यहाँ रहते हो, क्योंकि यह घर तुम्हारा है। इस घर की सारी जिम्मेदारी तुम्हारी है। तुम अपनी दोनों परीक्षाएँ पूरी तैयारी से दे दो, फिर तुम जैसा चाहोगे वैसा ही होगा।'

पांडेजी ने राहुल को निरुत्तर कर दिया। राहुल अब अपनी पढ़ाई में जुट गया। महीने-दो महीने के बाद वह गाँव भी हो आता। साथ ही कभी-कभी मौसी के पास भी चला जाता।

मीरा के रिश्ते की एक जगह बात चल रही थी। गरीब घर का लड़का, न माँ, न बाप। गाँव में ही छोटी सी परचून की दुकान चलाकर दो जून की रोटी कमा ही लेता। जन्मपत्री तो जुड़ गई थी, लेकिन अभी बात पक्की नहीं हुई थी।

अच्छा ही है। यदि मीरा का रिश्ता हो जाए तो मौसी की परेशानी भी कम होगी और मीरा का भी घर बस जाएगा।

स्कूल जाना प्रारंभ करने के बाद मानस में भी बदलाव आ गया। उपेक्षित मानस जहाँ पूर्व में दिन भर गाँव भर की धूल छाना करता था, वहीं स्कूल जाकर वह निखर आया था। राहुल जब भी घर जाता, उसके लिए कुछ अच्छी किताबें, पेंसिल, रंग इत्यादि ले जाना न भूलता।

मानस भी राहुल के आने की बेसब्री से प्रतीक्षा करता। हर बार कुछ नया होता उसके पास राहुल को बताने के लिए। कभी अध्यापकों की बातें, तो कभी सहपाठियों की। कभी कोई नई कविता तो कभी नई कहानी। राहुल से कुछ-न-कुछ इनाम मिलने के लालच में भी मानस उसे कुछ अच्छा कर दिखाता।

राहुल की बारहवीं की परीक्षा हो चुकी थी। ये दो वर्ष कैसे बीत गए, उसे पता भी न चला। घर से निकलने के बाद उसे कतई उम्मीद नहीं थी कि वह दसवीं पास भी कर पाएगा। यदि इंजीनियर साहब की छत्रच्छाया न मिलती तो अभी भी किसी होटल में बरतन साफ कर रहा होता।

परीक्षाओं के बाद गाँव गया तो माँ युद्ध स्तर पर राजेश के लिए लड़की ढूँढ़ने का काम कर रही थी। इस काम के लिए उसका उत्साह सातवें आसमान पर नजर आ रहा था। किसी पैसेवाले घर में राजेश का रिश्ता हो, यही सपना मन में पाले हुए थी वह। सुरेश के विवाह के समय के अधूरे अरमान अब कमला राजेश के विवाह में पूरा करना चाहती थी।

राजेश को कई पत्र लिख चुकी थी, लेकिन उसका जल्दी से कोई जवाब ही न आता। रेणु के विवाह के छह माह बाद राजेश घर आया भी, तो सिर्फ दो दिन के लिए। मगर इतनी जल्दी तो रिश्ता तय होता नहीं।

राहुल मौसी के पास गया तो वहाँ उसे मीरा का रिश्ता तय होने की खुश-खबरी मिली। लड़का स्वयं भी गरीब घर का था, इसलिए मौसी का दर्द भी समझता था। कोई शुभ दिन देख पाँच आदमियों को लाकर विवाह करने को राजी हो गया था।

'बारात का तो कोई खर्चा नहीं बेटा, लेकिन बेटी को खाली हाथ तो न विदा करूँगी। कपड़े-गहने तो बनवाने ही होंगे।' कहते हुए मौसी ने अपना गुलुबंद राहुल के हाथ में रख दिया।

नीले रंग के शनील पर जड़ी चौकोर डिजाइन की सोने की टिक्कियाँ। कितना सुंदर लग रहा था मौसी का गुलुबंद।

'माँ-बाप की आखिरी निशानी है, बेटा। इससे मीरा के लिए दो-चार गहने बनवा देना। और ये कुछ पैसे भी हैं। दूल्हा-दुलहन के कपड़े खरीद लाना।' मौसी ने एक छोटी सी पोटली उसे दे दी।

रूमाल में बाँधकर रखे गए कुछ पैसे, न जाने कैसे बचाए होंगे मौसी ने! राहुल का मन दोनों चीजों को लेने का न था; लेकिन स्वयं ही संसाधनहीन राहुल विवश था। नहीं लेगा, तो कहाँ से होगी मीरा की शादी।

मौसी ने आठवीं तक तो अनीता का स्कूल भी न छूटने दिया था, लेकिन उससे और पढ़ाई करवाना उनकी सामर्थ्य के बाहर था। अनीता की लगन को देखते हुए राहुल ने उसे दसवीं का इम्तिहान व्यक्तिगत विद्यार्थी के तौर पर देने की सलाह दी। अनिता ने इसकी जिम्मेदारी राहुल पर ही डाल दी।

'ठीक है, जब फॉर्म भरे जाएँगे तो मैं बता दूँगा और साथ में किताबों का भी प्रबंध कर दूँगा।' राहुल ने कहा तो अनीता के चेहरे पर चमक उभर आई।

'सर, मीरा का रिश्ता पक्का हो गया।' गाँव से लौटकर प्रफुल्लित मुद्रा में राहुल ने पांडेजी को बताया और फिर बिना उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किए लड़के के बारे में सबकुछ उत्साह से बताता चला गया।

पांडेजी एकटक उसकी ओर देख रहे थे। कितना सरल हृदय और स्नेही बच्चा है राहुल। अपने घर की खुशी में तो सभी खुश होते हैं, लेकिन भाभी का परिवार, जो कि इस समय घोर विपत्ति में है, उनके बारे में भी सोचना, ऐसा हर कोई नहीं कर सकता।

'तुम अपनी परीक्षा की तैयारी करो। बाकी सब मैं स्वयं कर लूँगा।' पांडेजी ने स्नेह से कहा तो कृतज्ञ राहुल ने गुलुबंद और पैसे उनके हाथ में रख दिए।

'ये पैसे कम होंगे शायद, मेरे कुछ पैसे जमा होंगे तो उसमें से…' राहुल ने झिझकते-झिझकते ये बात कही।

पांडेजी ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

पांडेजी की इच्छा का मान रखने के लिए राहुल ने पूरी तैयारी से प्रवेश

परीक्षा दे तो दी, लेकिन जानता था कि सफल होने पर भी प्रवेश नहीं ले पाएगा।

अब उसने अपना पूरा ध्यान अपनी नौकरी, ट्यूशन, घर और मीरा के विवाह की तैयारियों पर लगा दिया था।

लक्ष्मी खुश थी कि उसकी बहन का रिश्ता तय हो गया, साथ ही विवाह में शामिल होने को लेकर मन में संशय था। विनीता के विवाह में तो सास ने जाने न दिया था। इस बार पता नहीं क्या करेंगी!

विवाह के लिए अब एक महीना ही शेष था। राहुल इस बीच मौसी के पास जाकर सारी व्यवस्थाएँ देख आया।

'भाभी, तैयार हो जाओ, कल आपको और मानस को शादी में चलना है।'

विवाह से एक सप्ताह पूर्व राहुल ने भाभी को फरमान सुनाया, जिसे सुनकर माँ आगबबूला हो उठी।

'कहाँ ले जा रहा है इसे? पहले तो हमारा कोई रिश्ता नहीं उनसे और अगर जाना इतना ही जरूरी है तो एक दिन पहले चली जाएगी।'

'माँ, उनका कोई नहीं, मौसी अकेली क्या-क्या करेंगी?' और फिर लक्ष्मी की ओर देखकर बोला–'भाभी, आप तैयार हो जाओ। कल सुबह-सुबह निकल लेंगे।'

लक्ष्मी किसकी बात सुने, राहुल की या सास की? राहुल तो अभी बच्चा है, समझता नहीं। आखिर बड़ों की अनुमति के बिना कैसे कहीं जा सकती है वह?

'माँ, जल्दी से हाँ कहो भाभी को, देखो, तुम्हारी सहमति बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाएँगी।' राहुल ने मानो लक्ष्मी के मन की बात समझ ली।

'जैसी तेरी मरजी' बेटे का हठ देख कमला ने अंततः हथियार डाल दिए।

'माँ, तू अच्छी होती जा रही है।' राहुल अब चापलूसी पर उतर आया था।

'माँ, शादी से एक दिन पहले तुम्हें और पिताजी को लेने आऊँगा, तैयार रहना।' सुबह जाते हुए राहुल ने कहा तो कमला के मन की कड़वाहट जुबान पर आ ही गई–

'तू तो ऐसे बुला रहा है जैसे तेरी बहन की शादी हो रही हो।'

'एक ही बात है, माँ। एक तो वह भाभी की बहन है, दूसरे माँ-बाप का साया उनके सिर से उठ चुका है। ऐसे में इस समय हम मदद नहीं करेंगे तो कौन करेगा?' राहुल बड़े-बूढ़ों की तरह माँ को समझा रहा था।

उसकी इस समझ से माँ जहाँ अंदर तक जल-भुन गई, वहीं लक्ष्मी की आँखें अनायास ही नम हो आईं।

सादे समारोह में मीरा का विवाह संपन्न हो गया। राहुल ने सारी जिम्मेदारी अपने सिर ली और सभी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया भी।

राहुल की जिद पर कमला तो विवाह में शामिल हुई, किंतु स्वास्थ्य खराब होने के कारण चैतरामजी की वहाँ आने की हिम्मत न हुई। चाची को उनके भोजन की जिम्मेदारी सौंप कमला विवाह में सम्मिलित होने चली आई। लेकिन विवाह में राहुल को सर्वेसर्वा बने देखकर वह जल-भुन गई।

सरल हृदय मौसी ने अपने लिए देवदूत बनकर आए राहुल की प्रशंसा जब कमला से की तो उसका क्रोध और भड़क उठा।

'इसका मतलब राहुल यहाँ बराबर आता रहता है? लगता है, अपनी कमाई भी इन बहनों पर ही लुटा रहा है। बड़ी बहन को देखो, कैसी दीन-हीन सी बनी रहती है!' कमला मन-ही-मन लक्ष्मी को भी कोस रही थी।

'और इस छोटीवाली को तो देखो। हर समय राहुल के आस-पास ही डोल रही है। कहीं इसके चक्कर में पड़कर अपना सर्वनाश ही न कर बैठे।' अनीता तो कमला को फूटी आँख नहीं सुहा रही थी।

सभी बहनों से मिलकर लक्ष्मी खुश थी। उसे क्या पता कि इस खुशी के लिए राहुल को और उसे कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

विवाह के बाद लक्ष्मी और राहुल एक दिन वहीं रुकना चाहते थे, लेकिन कमला ने जिद पकड़ ली।

'तेरे पिता की तबीयत ठीक नहीं। इतने दिन अकेले नहीं छोड़ सकते उन्हें।' इस अकाट्य तर्क के आगे किसी की एक न चली।

मौसी से अगले दिन फिर आने को कह राहुल भाभी और माँ को छोड़ने गाँव चला आया। रास्ते भर कमला ने राहुल और लक्ष्मी से कोई बात ही नहीं की, लेकिन घर आते ही उसका गुस्सा फूट पड़ा।

भाभी की बहनों के चरित्र को लेकर दी जानेवाली उसकी गालियों को सुनकर राहुल का मन क्षोभ से भर उठा। यह कैसी सोच है माँ की? राहुल द्वारा उनकी सहायता करने से उनकी बहनों के चरित्र का क्या लेना-देना? औरत ही औरत की इतनी बड़ी दुश्मन क्यों होती है? यह बात उसकी समझ में न आई।

लक्ष्मी तो आते ही चुपचाप रसोई में चली गई। माँ ने जब उसकी बहनों

को छोड़ उसके दिवंगत माता-पिता को भी कोसना शुरू किया तो राहुल से न रहा गया।

माँ को चुप कराने के प्रयास में उसकी आवाज स्वतः ही ऊँची हो गई। उसकी आवाज सुन लक्ष्मी बाहर निकल आई। हे ईश्वर! कहीं उसके और उसके परिवार के कारण माँ-बेटे का झगड़ा न बढ़ जाए।

आँखों-ही-आँखों में विनती कर उसने राहुल को चुप रहने का संदेश दे दिया। भाभी की आँखों का इशारा समझ राहुल उस समय चुप तो हो गया, लेकिन उसके मन की कटुता खत्म न हुई। पता नहीं भाभी इतनी सहनशील कैसे हैं। माँ की इतनी गालियाँ, इतनी मार खाने के बाद भी उन्होंने कभी उफ तक न की। उनकी जगह कोई और होता तो अब तक यह घर अखाड़ा बन चुका होता।

भाभी की इस सहनशीलता को उसने मन-ही-मन नमन किया और अगली सुबह भारी मन से वापस लौट आया। न जाने कब वह इस लायक होगा, जब भाभी को इस नरक से मुक्ति दिला पाएगा। और बेचारा मानस! उसके बाल मन पर इस गाली-गलौज का क्या असर पड़ रहा होगा?

'चाचा, माँ मेरे पिताजी को कैसे खा गई?' पिछली बार मानस ने जब यह प्रश्न राहुल से पूछा तो राहुल अंदर तक हिल उठा था।

'किसने कहा तुमसे?'

'दादी कह रही थीं माँ से।'

'झूठ कहती हैं दादी। तू ही बता, कोई किसी को खा सकता है क्या?' उस समय तो इतना कहकर राहुल ने बातों की दिशा बदल दी, लेकिन ये तो एक बात है। न जाने ऐसी कितनी बातें रोज सुनता होगा बेचारा बच्चा!

माँ की इन बातों को सुनकर उसे माँ से विरक्ति-सी होने लगी थी। मन विद्रोह से भर उठता। मन करता, कभी गाँव न जाए। लेकिन माँ की गलती की सजा बाकी लोग क्यों भुगतें? यही सोच बार-बार उसके कदम गाँव की ओर बढ़ जाते। लेकिन इस बार तो माँ ने हद कर दी।

गालियों के निम्नतम स्तर तक उतर आई। किसी के चरित्र पर प्रहार करने का हक किसने दिया उसे? रास्ते भर इसी सोच में डूबता-उतराता राहुल मौसी के घर जा पहुँचा।

विवाह के बाद के सारे काम निपटाकर और सभी लोगों से विदा ले, अगले दिन राहुल अपनी नौकरी पर वापस चला आया।

उसके स्वभाव में अचानक आए इस परिवर्तन को सभी ने महसूस किया। कल तक तो ठीक-ठाक था, आज न जाने क्या हो गया।

उन्हें तो सपने में भी गुमान नहीं था कि यहाँ से जाने के बाद क्या कुछ नहीं सुनना पड़ा है उसे।

□

उन्नीस

'अगले हफ्ते तुम्हें श्रीनगर जाना है।' बिना किसी भूमिका के वापस पहुँचते ही पांडेजी ने राहुल को फरमान सुना दिया।

ऑफिस का कोई काम होगा शायद या फिर किसी निजी कार्य से भेज रहे होंगे, यही सोच राहुल ने चुपचाप स्वीकृति में सिर हिलाया।

'और हाँ, अपने सर्टिफिकेट, मार्कशीट ले जाना मत भूलना। तुम्हारी काउंस्लिंग है वहाँ पर।'

काउंस्लिग? लेकिन किस बात की? वह तो अब तक इस शब्द से भी परिचित ही नहीं था। क्या कोई नई नौकरी मिलने वाली है उसे?

'सर, लेकिन मैं आपसे दूर नहीं जाना चाहता।'

'लेकिन दूर कौन भेज रहा है तुम्हें! तुम्हारी मेरिट अच्छी है, जो संस्थान चाहोगे, वही मिलेगा। तुम यहीं का विकल्प दे देना और हाँ, इलेक्ट्रिकल ब्रांच ही ठीक रहेगी तुम्हारे लिए।' एक ही साँस में सबकुछ कह दिया पांडेजी ने।

तो क्या उसने पॉलिटेक्निक प्रवेश परीक्षा पास कर ली है? अपनी सफलता पर उसे बेहद खुशी हुई, लेकिन अगले ही पल आजीविका छूट जाने की पीड़ा उसके चेहरे पर उभर आई। अभी कल ही तो भाभी की दुर्दशा देखकर आ रहा है वह।

'लेकिन सर, मैं कैसे…?'

'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, मेरा इतना तो हक है तुम पर। घर में रहकर डिप्लोमा करने को मिल रहा है, इससे ज्यादा क्या चाहिए तुम्हें? और हाँ, सुबह-शाम ट्यूशन पढ़ाते रहना, सारा खर्चा निकल जाएगा।'

इसके बाद राहुल कुछ न बोल पाया। उनसे अधिक किसका हक हो सकता था उसके जीवन पर। जान देने को भी कहें तो वह भी दे दे उनके लिए। फिर भी कई सारे सवाल उसके दिमाग को मथ रहे थे।

तीन वर्ष की नियमित पढ़ाई कैसे कर पाएगा? इस बीच मानस और भाभी का क्या होगा? मौसी भी अपनी जमा-पूँजी अब मीरा के विवाह में लगा चुकी है। उनकी सहायता कैसे कर पाएगा?

इन सारे सवालों के बावजूद पांडेजी की आज्ञा की अवहेलना करने का साहस तो उसमें नहीं था।

सरकारी संस्थानों में खर्चा बहुत अधिक नहीं होता, यह भी पांडेजी ने समझा दिया था उसे।

कुछ दिनों बाद अपनी नौकरी को तिलांजलि देकर राहुल ने संस्थान में प्रवेश ले लिया। उसकी इस सफलता पर कोई सबसे अधिक प्रसन्न और संतुष्ट थे तो वे थे पांडेजी। दो वर्ष पूर्व ढाबे में जूठन साफ करते मासूम राहुल की छवि बार-बार उनकी आँखों में घूम जाती। एक प्रतिभावान् बालक के जीवन को नष्ट होने से बचा लेने की संतुष्टि ने उनके मन को खुशियों से भर दिया था।

राहुल अब अपनी पढ़ाई में जी-जान से जुट गया। अपना खर्चा वह सुबह-शाम ट्यूशन पढ़ाकर ही निकाल लेता, बल्कि उसमें से भी कुछ बचा लेता।

इस बीच हाई स्कूल के फॉर्म भरे जाने लगे तो उसे अनीता की याद हो आई। फॉर्म के साथ ही आधी-तिहाई कीमत पर पुरानी किताबें खरीदकर भी दे आया।

राहुल का प्रोत्साहन पाकर अनीता ने भी परीक्षा की तैयारी आरंभ कर दी। मीरा भी अपने घर में प्रसन्न थी और मौसी उसकी खुशी से संतुष्ट होकर जी रही थी।

प्रथम वर्ष की परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद राहुल गाँव गया तो माँ को बहुत खुश पाया। बहुत खोजबीन के बाद अंततः राजेश के लिए एक लड़की उसे पसंद आ ही गई। दो भाइयों की अकेली बहन। दोनों भाई और पिता सरकारी नौकरी पर। खाता-पीता परिवार। इससे ज्यादा राहुल की माँ को और क्या चाहिए था।

'राहुल, चिट्ठी लिख दे भाई को। अगले हफ्ते ही घर आकर लड़की देख जाए। मुझे तो लड़की बहुत पसंद है।' कहते हुए माँ के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

राहुल का मन हुआ, माँ से पूछ ले कि उन्हें लड़की पसंद आई है या उसके परिवार की संपन्नता? लेकिन चुप्पी साध गया। माँ खुश है इस समय तो घर का माहौल भी ठीक है, वरना इस घर में तो हर समय तनाव ही रहता है।

माँ के कथनानुसार उसने राजेश को पत्र लिख डाला। क्या पता घर में दूसरी बहू के आने से ही माहौल बदल जाए!

लेकिन गाँव से लौटने के कुछ ही दिन बाद जब उसे गाँव के किसी व्यक्ति ने आकर संदेश दिया कि उसे तुरंत घर बुलाया गया है तो राहुल घबरा गया।

ऐसा क्या हो गया होगा घर पर, जो उसे तुरंत बुलाया गया है? पिता की तबीयत, भाभी और मानस की चिंता जैसी न जाने कितनी चिंताओं में डूबता-उतराता राहुल साँझ ढलने के बाद घर पहुँचा तो माँ ने चिट्ठी सामने रख दी। राजेश का पत्र था।

'मेरे विवाह की चिंता करना बंद कर दीजिए। मेरे साथ मेरे ही कार्यालय में शोभना काम करती है। हम दोनों ने विवाह करने का निर्णय लिया है। अगले माह की २५ तारीख को आर्यसमाज मंदिर में हम इस विवाह-बंधन में बँध रहे हैं। आप लोग अपना आशीर्वाद देने अवश्य आइएगा।'

माँ कभी अपने बेटों को कोसती तो कभी उन लड़कियों को, जिन्होंने तथाकथित तौर पर उनके बेटों को अपने जाल में फँसा लिया था।

जहाँ एक ओर उन्हें अपने सपने धूल में मिलते नजर आ रहे थे, वहीं दूसरी ओर अगले माह विवाह की कोई शुभ तिथि न होने की चिंता भी खाए जा रही थी।

'तुम दोनों जाकर रुकवाओ इस शादी को। मेरी तो बिलकुल सहमति नहीं है इसके लिए।' बेटे के साथ-साथ अपने पति को भी शहर भेज कर कमला यह विवाह हर हाल में रुकवाना चाहती थी।

जिस बात का निर्णय बेटा ले चुका है, उसमें अब इस समय हस्तक्षेप करना चैतरामजी को उचित नहीं लगा।

'बेहतर होगा, हम जाकर उन्हें आशीर्वाद दे आएँ।' पति के मुँह से ये शब्द सुनते ही मानो आग में घी पड़ गया हो। बेटे के इस निर्णय का सारा गुस्सा अब पति पर फूट पड़ा।

'तुम ढंग के होते तो मेरे बच्चे यूँ हाथ से न निकलते। बड़ा बेटा

भिखमंगों के घर से इस अपशकुनी को ब्याह लाया तो दूसरा न जाने किस कुल खानदान की लड़की से ब्याह कर नाक कटवा रहा है और तीसरा, उसे तो अपनी भाभी की बहनों से ही फुरसत नहीं है।'

पत्नी व्यंग्य-बाण छोड़ती रही और पति चुपचाप उसकी चुभन महसूस करते रहे। वैसे भी पत्नी से वे कम ही बहस किया करते थे। अब तो स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ इतनी बढ़ गई थीं कि ज्यादा बोलने की हिम्मत ही न होती उनकी।

कमला ने जब देखा कि उसके बड़बड़ाने का किसी पर भी कोई असर नहीं है, तो स्वयं ही थक-हारकर चुप हो गई।

पिता ने राहुल को बुलाकर कुछ पैसे उसके हाथ पर रख दिए।

'बहू के लिए कुछ ले जाना, मेरी तो हिम्मत नहीं है जाने की और तुम्हारी माँ जाएगी नहीं। तू चला जा, वरना राजेश को बुरा लगेगा।'

राहुल ने ध्यान से पिता की ओर देखा। कितने बूढ़े और कमजोर लगने लगे हैं। जवान बेटे की असमय मौत और उसके बाद घर के माहौल ने उन्हें अंदर-ही-अंदर खोखला कर दिया है।

भाई के विवाह के बाद अगली छुट्टियों में उन्हें अपने साथ ले जाकर किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा लाएगा।

लेकिन मन का सोचा मन में ही रह गया। राजेश के विवाह के कुछ समय बाद ही घर से खबर आई कि पिताजी सख्त बीमार हैं। आनन-फानन में दोनों भाई घर पहुँचे। राजेश की नवविवाहिता पत्नी भी इस बार साथ आई थी।

पिछले कई दिनों से कमजोरी के चलते उनका सिर घूमने लगता, इसी कारण एक दिन ऑफिस जाते हुए गहरी खाई में जा गिरे। सिर में गहरी चोट लगी। जितना उपचार संभव था, गाँव में ही करवा लिया गया था। शायद गुम चोट के कारण उन्हें बार-बार बेहोशी छा जाती। राहुल इसी स्थिति में पिता को शहर ले जाना चाहता था, लेकिन उन्होंने बिलकुल मना कर दिया।

'कोई फायदा नहीं बेटा, अब। आखिरी समय में अपनी मिट्टी छोड़ पराए स्थान पर क्यों जाऊँ?' अटक-अटककर कहे गए ये शब्द राहुल को विवश कर गए।

क्यों उसने पहले इस बात पर ध्यान नहीं दिया? एक बार जिद करके उन्हें अपने साथ ले ही जाता तो क्या वे मना कर पाते!

दो दिन यूँ ही बीत गए। पिता धीरे-धीरे अपना होश खोने लगे। तीसरी

शाम उन्होंने अंतिम साँस लेते हुए इस मायावी संसार से विदा ली तो पूरा घर शोक में डूब गया।

'अरे, इस घर की तो किस्मत ही खराब है। पहली आई तो मेरे बेटे को खा गई और दूसरी के कदम रखते ही मेरा अपना सुहाग उजड़ गया।' माँ के तीव्र रुदन के साथ कही गई इन बातों ने सभी के साथ-साथ शोभना का ध्यान भी खींचा।

पिता का अंतिम संस्कार कर राजेश शमशान से वापस लौटा ही था कि शोभना ने रो-रोकर माँ द्वारा कही बातें उसे सुनाकर एक पल भी गाँव में न रुकने का ऐलान कर दिया।

'मैं माँ को समझा दूँगा। कुछ दिन तो यहाँ रुकना ही पड़ेगा।'

और तुरंत ही उसने माँ को शोभना के लिए ऊल-जलूल बातें न कहने की हिदायत दे डाली।

कमला पुत्र का पत्नी-प्रेम देख हैरान रह गई। ऐसा क्या कह दिया था, जो उसने राजेश से शिकायत कर दी और दूसरी ओर राजेश तुरंत चला आया बीबी का हिमायती बनकर।

'जोरू का गुलाम!' बुदबुदाते हुए कमला ने बुरा सा मुँह बनाया। साथ ही उसे अब लक्ष्मी की याद हो आई। सास की डाँट भी खाई, मार भी खाई, लेकिन उफ तक न किया। जब तक सुरेश जीवित रहा, तब तक उससे भी कभी शिकायत न की। एक ओर लक्ष्मी, दूसरी ओर ये कल की आई छोकरी। सोचते हुए कमला ने गहरी साँस ली।

सूतक के तीसरे दिन ही शोभना का बड़बड़ाना आरंभ हो गया, 'कैसा शोक मनाया जा रहा है? न नहा सकते हैं, न कपड़े धो सकते हैं, न सिर में तेल डाल सकते हैं। मेरे तो शरीर में चींटियाँ-सी रेंगने लगी हैं और ऊपर से तेल-हल्दी के बिना बना खाना खाने का हुक्म? मेरी तो भूख ही खत्म हो गई है।'

'शोभना, प्लीज कुछ दिन और, देखो गाँव का यही रिवाज है। ऐसे ही घर में किसी की मृत्यु का शोक मनाया जाता है।' राजेश पत्नी के आगे लगभग गिड़गिड़ा रहा था।

पहाड़ी परिवेश से अनजान शोभना ने विशुद्ध पहाड़ी परिवेश में पले-बढ़े राजेश से प्रेम विवाह तो कर लिया, लेकिन यहाँ के रीति-रिवाज के बारे में कुछ न जान पाई। न ही उसकी राजेश के परिवार के प्रति

इतनी आत्मीयता पनप पाई कि उनकी आशानुरूप ढलने का वह रंच मात्र भी प्रयास करती।

राजेश के समझाने के बावजूद जब चौथे दिन ही शोभना नहा-धोकर धूप में बाल सुखाने बैठी तो गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। कमला के चेहरे पर तो जैसे राख ही पुत गई।

'दूसरों की बहू-बेटियों की बहुत बातें बनाई हैं इसने। अब अपनी को तो देखो! ससुर को मरे चार दिन नहीं हुए और ये महारानी बैठ गई श्रृंगार करके।' एक महिला ने कहा तो औरों ने भी उसकी हाँ-में-हाँ मिलाई।

'बड़ी बहू का देखो, क्या बुरा हाल किया इसने? मिल गया फल इसी जनम में।' जितने मुँह उतनी बातें। कुछ बातें कमला के कानों में भी पड़ीं। स्वयं तो कुछ न कहा, लेकिन बेटी के माध्यम से छोटी बहू को समझाने के लिए कह दिया।

शाम को एक बार फिर शोभना को लेकर घर में महाभारत छिड़ गया। कमला और राजेश दोनों को अपनी-अपनी बातों पर, बहस पर अड़े देख राहुल ने दोनों के सामने हाथ जोड़ दिए।

'कुछ तो शर्म करो आप दोनों! भगवान् के लिए कुछ दिन तो चुप रहो।'

राहुल के कहने पर दोनों चुप तो हो गए, लेकिन दोनों के मन की दरारें और गहरा गईं।

पिता की तेरहवीं के बाद राजेश एक दिन भी गाँव में नहीं रुका। शोभना गाँव में फिर कभी कदम न रखने की शपथ लिये खिन्न मन से पति के साथ लौट गई।

शोभना के व्यवहार से व्यथित कमला के मन में लक्ष्मी के प्रति उपजी सहानुभूति ने तब दम तोड़ दिया, जब उसने अनीता को राहुल के साथ बतियाते हुए देखा। अनीता, जो मौसी के साथ ससुरजी की मौत की खबर सुनकर अफसोस प्रकट करने चली आई थी, कमला की आँख की किरकिरी बनकर रह गई।

एक-एक कर सब लोग चले गए। रह गया राहुल। पिता के यूँ अचानक चले जाने के बाद उसकी इच्छा माँ और भाभी को अकेले गाँव में छोड़ने की बिलकुल न थी, लेकिन वह मजबूर था।

भाभी के प्रति माँ का व्यवहार अधिक निरंकुश हो जाने की चिंता उसे खाए जा रही थी।

लेकिन अभी कोई और विकल्प भी तो न था।

माँ को पिताजी की जमा-पूँजी इत्यादि का कुछ पैसा मिल गया और उनके नाम पेंशन आरंभ होने की औपचारिकताएँ भी राहुल ने पूर्ण करवा दीं। कुछ दिनों बाद भारी मन से राहुल गाँव से वापस चला आया।

अपनी-अपनी जगह सभी भविष्य के ताने-बाने बुनने में मशगूल थे। एक लक्ष्मी ही थी, जिसे अपने भविष्य का कुछ भी पता न था। मानस के भविष्य पर ही उसका कल निर्भर था। मानस में अपना भविष्य तलाशती लक्ष्मी किसी तरह अपने दिन काट रही थी।

लक्ष्मी के प्रति कमला के स्वभाव में कोई विशेष अंतर तो न आया, लेकिन वाणी की कठोरता कुछ कुंद हो गई थी। लक्ष्मी के लिए यही बहुत बड़ा सुकून था।

□

बीस

एक ओर राहुल का प्रथम वर्ष का परीक्षा फल घोषित हुआ, दूसरी ओर अनीता ने हाई स्कूल की परीक्षा पास की। अपनी इस सफलता पर वह बेहद उत्साहित थी। एक सफलता मिली तो आगे भी पढ़ने का मन हुआ। राहुल ही उसका सलाहकार था। वह भी ऐसी परिस्थितियों के चलते अनीता की सफलता पर बहुत प्रसन्न था।

'दो वर्ष बाद तुम बारहवीं की परीक्षा दे सकती हो। अभी से पढ़ना आरंभ कर दो।'

अगली बार राहुल वहाँ गया तो किताबों का बैग भी साथ था। आरंभ में तो अनीता इसे सहानुभूति से उपजी सहायता ही समझती रही, लेकिन धीरे-धीरे उसे राहुल की इस सहानुभूति के पीछे कुछ और ही समझ आने लगा।

'राहुल उसमें कुछ अधिक ही दिलचस्पी लेता है। यह सिर्फ सहानुभूति तो नहीं हो सकती।' वह मन-ही-मन सोचती।

धीरे-धीरे उसके मन में भी राहुल के लिए कोमल भावनाओं ने जन्म लेना आरंभ किया। राहुल के जाते ही वह भी उसके दोबारा आने की प्रतीक्षा करने लगती थी।

किसी-न-किसी बहाने से कुछ पूछने के लिए राहुल के सामने बैठ जाती। राहुल के सामने तो उसका ध्यान पढ़ाई के बजाय अधिक-से-अधिक उसका सामीप्य पाने पर होता। कभी-कभी ऐसे बेवकूफी भरे प्रश्न पूछती कि राहुल भी खीझ उठता।

'अभी तो समझाया था, तुम्हारा ध्यान कहाँ है?'

सुनकर उसका चेहरा सुर्ख हो उठता क्या समझाए राहुल को कि कहाँ खोई हुई थी वह!

अनीता के व्यवहार और हाव-भाव में आए ये परिवर्तन मौसी की निगाहों से छुपे हों, ऐसा भी नहीं था। राहुल के आते ही अनीता के चेहरे पर आई चमक सबकुछ बता देती थी। खाना बनाने से हमेशा जी चुरानेवाली अनीता उस दिन तरह-तरह का भोजन बनाने का प्रयास करती और आग्रह कर के राहुल को खिलाने भी बैठ जाती।

'क्या राहुल के मन में भी ऐसा कुछ होगा?' मौसी भी सोचती।

अगर ऐसा हो, तो अपनी अंतिम जिम्मेदारी से भी मुक्त हो जाएगी वह और साथ में मिलेगा हीरे जैसा दामाद, जो बेटे की कमी भी पूरा करेगा।

'क्या इतनी अच्छी किस्मत होगी उसकी?' मौसी सोच में डूब जाती।

राहुल के मौसी के पास जाने की खबर कमला को भी कभी-कभी लग ही जाती। जब भी उसे पता चलता कि राहुल लक्ष्मी की मौसी के गाँव गया था तो उसके गुस्से का शिकार लक्ष्मी को ही होना पड़ता। राहुल को लेकर उसके मन में असुरक्षा की भावना पनपने लगी थी।

'कहीं ये छोकरी मेरे तीसरे बेटे को भी मुझसे दूर न कर दे!' वह सोचती; लेकिन यह न जानती कि राहुल अनीता के कारण नहीं, बल्कि उसके स्वयं के स्वभाव के कारण उससे दूर हो रहा है।

□

अंतिम वर्ष की परीक्षा में राहुल ने पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया तो इंजीनियर पांडे ने खुशी से भरकर उसे गले से लगा लिया।

'मुझे गर्व है तुम पर।' कहते हुए उनका गला भर आया। एक-दूसरे के गले से लगे दोनों कुछ देर निःशब्द अपनी-अपनी आँखें गीली करते रहे।

राहुल को तो, सब सपना-सा लग रहा था। वह तो जल्दी से घर जाकर अब माँ और भाभी को यह शुभ समाचार देना चाहता था।

मानस पाँचवीं कक्षा में आ चुका था। अगले वर्ष से तो उसे अपने साथ रखने का मन बना ही चुका था राहुल। तब तक उसे नौकरी मिल जाने की पूरी उम्मीद भी थी।

'अगले वर्ष से मानस की पढ़ाई मेरे साथ रहकर ही होगी। तुम लोग भी तब तक घर सँभाल लो। सब एक साथ ही रहेंगे अब।'

'कहाँ जाने की बात कर रहा है तू अब इस उम्र में? इस घर को छोड़

कर कहाँ जा पाऊँगी मैं?'

कमला का स्वर करुण हो आया। पैंतीस वर्ष पहले इसी घर में जब वह दुलहन बनकर आई थी तो उसकी उम्र मात्र सोलह वर्ष की थी। एक ओर संयुक्त परिवार, ऊपर से सास-ससुर का कठोर अनुशासन, जिसके बीच कमला की तो सारी अल्हड़ता ही कहीं खो गई थी।

यूँ तो सास उससे बहुत स्नेह करती थी, लेकिन जरा सी गलती पर कड़ी सजा देने से भी न चूकती थी।

'मेरा बेटा सीधा-साधा है। तुझमें ऐसा बचपना रहा तो कैसे सँभालेगी घर-बार?' और सास की सीख को शिरोधार्य कर कमला शीघ्र ही अपना अल्हड़पन त्याग कर अपने व्यवहार में परिपक्वता ले आई। सास-ससुर की मुत्यु के बाद निष्कंटक घर पर राज करनेवाली कमला का स्वभाव तीखा-दर-तीखा होता गया और आज स्वभाव की वही कटुता उसकी दुश्मन बन गई थी।

इतने वर्षों के खट्टे-मीठे अनुभवों, सुख-दु:ख के गवाह पुश्तैनी मकान को छोड़कर जाने का तो प्रश्न ही नहीं था।

'सासजी को अकेले छोड़कर मैं भी नहीं जाऊँगी। जहाँ तक मानस की पढ़ाई का सवाल है, तुम उसे अपने साथ ले जा सकते हो।' दिल पर पत्थर रख कलेजे के टुकड़े को अपने से दूर करने को भी तैयार थी लक्ष्मी; लेकिन उम्रदराज होती उस सास को अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी, जिसने अब तक लक्ष्मी के लिए कभी दो अच्छे बोल तक नहीं बोले थे।

राहुल का मन एक बार फिर भाभी के लिए अपार श्रद्धा से भर उठा। माँ हमेशा उन्हें उस बात के लिए दोषी मानती रही है, जिसमें उनका कोई दोष नहीं था। उसी माँ की सेवा के लिए आज भाभी अपने मृत पति की अंतिम निशानी को भी अपने से दूर करने को तैयार हैं लेकिन माँ को छोड़ना उन्हें कतई मंजूर नहीं है।

माँ से उसके फैसले पर पुनर्विचार को कहकर राहुल वापस चला आया। शहर लौटने से पहले राहुल मौसी से मिलना भी नहीं भूला। कुछ दिन पहले ही अनीता ने बारहवीं की परीक्षा में सफलता प्राप्त की थी।

'आ गया विमला का दामाद।' कमर में दराँतियाँ खोंसे घास लेने जाती महिलाओं के झुंड में से किसी ने कहा और सब मुँह दबाकर हँस पड़ीं।

राहुल समझ न पाया। दिमाग पर जोर डाला तो समझा। भाई की ससुराल होने के नाते वह भी तो दामाद ही हुआ मौसी का।

'अपने पास होने की खुशी में मिठाई लाया है क्या?' राहुल ने मिठाई का डिब्बा मौसी के हाथ में रखा, तो मौसी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

'नहीं मौसी, इसके पास होने की खुशी में।' अनीता की ओर देख राहुल के मुँह से बरबस ही निकले ये शब्द अनीता के चेहरे पर रक्तिम आभा बिखेर गए। चाय बनाने का बहाना कर अपनी धड़कनों को नियंत्रित करती हुई वह रसोई में चली गई।

चूल्हा जलाया, लेकिन दिल ने दिमाग का साथ न दिया। पानी खौल कर आधा रह गया, तो याद आया कि उसे तो चाय बनानी थी।

'इतनी देर कहाँ लगा दी?'

मौसी ने पूछा, लेकिन अनीता चुप्पी लगा गई। क्या बताए उन्हें कि कहाँ खो गई थी वह! उसके मन ने कौन से सपने देखना आरंभ कर दिया है।

'बारहवीं हो गई, अब आगे?'

'आगे क्या? जिस गाँव में लड़कियों ने आठवीं, दसवीं के बाद पढ़ाई का मुँह नहीं देखा, वहीं तुम्हारी कृपा से इसने बारहवीं कर ली। अब तो एक ही इच्छा है। कहीं अच्छा घर-बार देख इसकी शादी करके मैं भी गंगा नहा लूँ।' अनीता से पूछे गए सवाल का जवाब दिया मौसी ने और साथ ही अपनी मंशा भी जाहिर कर दी।

बातों का रुख दूसरी ओर मुड़ता देख अनीता उठ खड़ी हुई, लेकिन राहुल की प्रतिक्रिया जानने की उत्कंठा में दरवाजे की ओट में जा खड़ी हुई।

'कोई अच्छा लड़का हो आपकी निगाह में तो बताइएगा। मैं भी ध्यान रखूँगा।'

'ये क्या कह रहा है राहुल? तो क्या उसकी सहानुभूति को वह गलत समझ बैठी है? ऐसा भी तो हो सकता है, राहुल मौसी के सामने अपने मन की बात न कह पा रहा हो।' अनेक आशंकाओं-दुविधाओं को मन में समेटे अनीता फिर रसोई में चली आई और राहुल के लिए भोजन की व्यवस्था में जुट गई।

उधर मौसी भी मन में सोच रही थी कि राहुल से कैसे कहे कि अनीता के लिए सबसे योग्य वर तो उसके सामने ही बैठा है। न जाने उसके मन में क्या हो?

राहुल वापस आया, तो विद्युत् विभाग में जूनियर इंजीनियर की अस्थायी

नौकरी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी और यह समाचार उसे देते हुए इंजीनियर पांडे के चेहरे से प्रसन्नता जैसे फूटी पड़ रही थी।

'अब तुम अपने सपने पूरे कर सकते हो, राहुल।'

राहुल पैर छूने के लिए झुका, तो उन्होंने उसे खींचकर अपने गले से लगा लिया।

राहुल नहीं चाहता था कि अब मानस के साथ-साथ माँ और भाभी भी गाँव में रहें, किंतु कमला गाँव छोड़ना नहीं चाहती थी और लक्ष्मी सास को।

सास का व्यवहार अब तक लक्ष्मी के साथ जैसा भी रहा हो, लेकिन अब वह नितांत अकेली थी। राजेश के व्यवहार ने उन्हें आहत भी कम न किया। ऐसी स्थिति में उन्हें अकेले छोड़ देने का मन लक्ष्मी का नहीं था। राहुल ही अब घर में सबका एकमात्र सहारा था।

राहुल के प्रति उनके स्वभाव में यूँ तो अब बहुत बदलाव आया था, लेकिन जब भी कमला राहुल को लक्ष्मी और उसके परिवार का हिमायती होते पाती, तो उसका तन-बदन सुलग उठता।

उधर दादी और माँ के मन में चलते अंतर्द्वंद्व से बेखबर मानस अपने में ही मस्त था। शहर जाकर पढ़ने की कल्पना मात्र से ही उसके पैर जमीन पर न पड़ते। अपने सहपाठियों को वह बता भी आया था कि अगले साल चाचा के पास जाकर बड़े स्कूल में पढ़ेगा।

'तू बस में बैठकर जाएगा?' जब एक बच्चे ने उत्सुकतावश पूछा था, तो मानस गर्व से फूल उठा।

'हाँ, बस में जाऊँगा। चाचा कहते हैं, बहुत दूर है यहाँ से।'

बच्चों ने ईर्ष्या से उसकी ओर देखा। उनमें से अधिकांश बच्चे ऐसे थे, जिन्होंने बस को सिर्फ दूर से ही देखा था। पहाड़ी के दूसरी ओर सर्पीली सड़कों पर चलती बस की ध्वनि इस ओर आती तो बच्चे बाहर खड़े होकर एकटक दूसरी ओर चलती रंग-बिरंगी बस को निहारा करते थे। यद्यपि इतनी दूर से बस माचिस की डिबिया से थोड़ी सी ही बड़ी दिखती थी।

अब मानस उसी बस में बैठकर शहर जाने वाला था तो मानस के साथ-साथ सभी बच्चों के मन में भी उत्सुकता थी।

'छुट्टियों में घर तो आएगा न तू?'

एक और बच्चे ने पूछा तो मानस ने गंभीरता ओढ़ ली।

'पता नहीं। चाचा कह रहे थे, वहाँ जाकर बहुत पढ़ना पड़ता है।' बस

में बैठने के मानस के अनुभव की जानकारी भी नहीं मिल पाएगी, यह सोचकर सभी उदास हो गए। मानस अब पढ़ाई पर भी अधिक ध्यान दे रहा था। उसे डर था कि कम नंबर आने पर कहीं चाचा उसे शहर ले जाने से मना ना कर दें।

उधर अनीता की समझ में नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करे? मौसी ने तो कह दिया है कि वह अब उसकी शादी करना चाहती हैं और राहुल! वह भी तो उनकी हाँ में हाँ मिला रहा है। तो क्या राहुल के मन में उसके लिए सहानुभूति के सिवा कुछ नहीं? क्या उसके लिए राहुल को अपने मन से निकाल देना इतना आसान होगा?

लेकिन अगर राहुल के मन में उसके लिए सहानुभूति के सिवा कुछ नहीं तो उसे भी अभी से अपना मन बदलना होगा। इसका आसान और सही तरीका है, आगे की पढ़ाई। अगली बार राहुल आएगा तो उसी से सलाह लेगी कि अब क्या करे—अनीता ने निर्णय लिया।

अपनी-अपनी चिंताओं-दुश्चिंताओं, उत्साह और सोच में डूबे सभी लोग अपना-अपना जीवन जी रहे थे।

□

इक्कीस

राहुल के मन में अब एक ही धुन थी कि किसी तरह माँ और भाभी को भी शहर आने के लिए राजी कर ले। इसलिए जितनी बार भी वह घर जाता, उन्हें हर तरह से समझाने का प्रयास करता। परंतु हर बार उनके फैसले में बदलाव की संभावना क्षीण ही दिखाई देती।

मानस को अपने साथ ले जाने के फैसले को किसी भी कीमत पर बदलने को राहुल भी तैयार न था। कितनी भी परेशानी क्यों न हो, मानस को अपने पास ही रखकर पढ़ाएगा। यह निश्चय वह पहले ही कर चुका था।

मानस का उत्साह भी उसे अपने फैसले से न डिगने की प्रेरणा देता रहा। राहुल जब भी घर आता, मानस की बाल सुलभ जिज्ञासा से भरे प्रश्नों को सुनकर मन-ही-मन मुसकराता रहता।

'चाचा, आपके स्कूल में मैं कुरसी-मेज पर बैठकर पढ़ूँगा। नवीन बता रहा था कि उसने देखा है एक बार ऐसा स्कूल।'

नंगे फर्श पर बैठ पढ़ाई करनेवाले बच्चों को तो कभी टाट-पट्टी बैठने को मिल जाती तो वे अपने को सौभाग्यशाली समझते। ऐसे में मानस को कुरसी पर बैठकर पढ़ने को मिले, यह तो उसके लिए सपने जैसा था।

'आपका स्कूल?' राहुल चौंका, 'मेरा नहीं बेटा, सरकार का स्कूल।' उसने समझाया।

'ये सरकार कौन है चाचा?' अगला प्रश्न और भी कठिन था।

'चाचा, आपको बस से डर नहीं लगता?' एक सवाल का जवाब मिलते ही मानस का दूसरा सवाल हाजिर हो जाता।

राहुल के आने पर मानस सोता भी था उसी के साथ और जब तक आँखें नींद से बोझिल हो उसकी जुबान का साथ छोड़ न दें, तब तक कुछ-न-कुछ पूछता ही रहता था। राहुल भी उसके प्रश्नों को अनुत्तरित न रखता।

'चाचा, फँसाना क्या होता है?'

इस प्रश्न का आशय राहुल की समझ में नहीं आया। आखिर क्या पूछना चाहता है मानस?

'दादी माँ से कह रही थीं कि तेरी बहिन ने राहुल को फँसा लिया।'

मासूम मानस को तो उसने किसी तरह इधर-उधर की बातों में बहला दिया, लेकिन माँ पर उसे क्रोध आ गया। क्या वे इतनी कृतघ्न हैं कि भाभी का त्याग भी उनकी समझ में नहीं आ रहा है? भाभी तो स्वेच्छा से इस माहौल को नहीं छोड़ना चाहतीं। वो चाहतीं तो मानस के बहाने ही सही, इस नरक से मुक्ति पा सकती थीं। वो तो माँ के कारण मानस के साथ जाने को मान नहीं रहीं, लेकिन मानस को इस माहौल से निकाल लेने के निश्चय पर ही राहुल संतुष्ट हुआ।

उधर मौसी की ना-नुकुर के बावजूद अनीता भी आगे पढ़ने की जिद किए हुए थी।

'बी.ए. करने से कोई व्यावसायिक कोर्स करना ज्यादा अच्छा रहेगा। इससे वह अपने पैरों पर भी खड़ी हो जाएगी।' यही सोचना था राहुल का।

पांडेजी की सलाह मानकर राहुल ने अनीता को बी.टी.सी. करने की सलाह दे डाली।

पहाड़ में लड़कियों के लिए एकमात्र सर्वाधिक लोकप्रिय व्यावसायिक कोर्स था बी.टी.सी.। रोजगार की गारंटी के कारण सुविधा-संपन्न घरों की लड़कियाँ तक इसमें प्रवेश लेने को लालायित रहतीं। प्रवेश परीक्षा होने के कारण अब इसमें प्रवेश कठिन हो चला था। और दो वर्ष की पढ़ाई समाप्त होते ही ठक से प्राथमिक विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी मिलना पक्का था। इससे ज्यादा क्या चाहिए था पहाड़ की संतोषी लड़कियों को।

'इसकी परीक्षा तो बहुत कठिन होती है?' अनीता ने आशंका व्यक्त की।

'तो आसान क्या होता है? मेहनत तो करनी ही पड़ेगी। किताबें मैं ले आऊँगा।' कई झंझावातों को झेलकर इस स्थान पर पहुँचे राहुल ने कठोर परिश्रम की महत्ता अनीता को समझा दी।

'लेकिन दो साल पौड़ी रहकर पढ़ना पड़ेगा, सो कैसे…?' अनीता के मन का संशय अभी समाप्त नहीं हुआ।

'तुम पहले पास होकर तो दिखाओ। बाद की सोचने के लिए मैं हूँ।' राहुल ने कहा तो अनीता ने निगाहें उठाकर उसकी ओर देखा। एक पल को दोनों की निगाहें मिलीं। राहुल ने फौरन निगाहें झुका लीं।

नहीं! उन निगाहों की भाषा समझ सिहर उठा राहुल! अनीता की इस दृष्टि को सामान्य तो नहीं कहा जा सकता।

बचपन से ही कठिनाइयों और जिम्मेदारियों से जूझते राहुल को कभी भूलवश भी अपने बारे में सोचने का अवसर नहीं मिल पाया, लेकिन अब वह बच्चा भी नहीं था। अनीता की मुग्धभाव से निहारती निगाहों की भाषा समझने में कोई भूल नहीं की उसने।

अनीता अच्छी लड़की है, इसमें कहीं कोई संदेह नहीं, लेकिन उसे अपना सके, ऐसी स्थिति में नहीं है राहुल अभी। इससे पहले कि अनीता की भावनाएँ परवान चढ़ें, उसके लिए कोई अच्छा रिश्ता तलाशना ही ठीक होगा।

'आप पर और कितना बोझ बनेंगे हम? वैसे भी बहुत किया है आपने अब तक हमारे लिए।' अनीता के ये स्वर राहुल की तंद्रा भंग कर गए।

'तुम अपनी पढ़ाई करो। बाकी बातों से तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिए। मैं अपना फर्ज पूरा कर रहा हूँ और कुछ नहीं।' राहुल के स्वर में रुखाई भाँप अनीता काँप गई।

राहुल भी इतना कटु नहीं होना चाहता था, लेकिन परिस्थितियों के आगे मजबूर था।

'राहुल, कोई परेशानी है क्या?' राहुल को गाँव से लौटने के बाद चिंतामग्न देख पांडेजी ने प्रश्न किया।

'सर! माँ पैतृक घर छोड़ने को तैयार नहीं और भाभी माँ को नहीं छोड़ सकती। लगता है, मानस को अकेले ही रखना पड़ेगा मुझे।' कहीं गहन विचारों में खोए राहुल ने जवाब दिया।

'तुम्हारी बात अभी खत्म नहीं हुई, राहुल। बात कुछ और है, आगे बोलो।' इतने वर्षों में राहुल की नस-नस पहचान गए थे इंजीनियर पांडे। समझ गए थे कि राहुल कुछ छिपा रहा है।

'कैसे समझ जाते हैं ये मेरे मन की बात? कैसे जान गए कि मैंने अधूरी बात बताई है।' राहुल ने मन-ही-मन सोचा।

नौकरी लगने के बाद भी वह पांडेजी को छोड़कर दूसरी जगह नहीं जा पाया था। एक बार दबी जुबान से किराए पर कमरा लेने का इशारा भी किया था, लेकिन उसके इस विचार को इंजीनियर पांडे ने सिरे से नकार दिया था।

'क्यों, यहाँ कोई परेशानी है क्या? और फिर अपनी भाभी को क्या जवाब दोगे?'

राहुल निरुत्तर हो गया। गाँव से सब लोग यहाँ आने को सहमत हो जाएँ, तभी अलग घर के बारे में सोचेगा।

कस्बे भर में हर कोई उन दोनों के रिश्ते का उदाहरण देते नहीं थकता था।

'आपका विवाह क्या बचपन में ही हो गया था?' विभाग में नए आए रस्तोगीजी ने पांडेजी से पूछा, तो वे चौंक गए।

'नहीं, ऐसा तो नहीं।'

'तो फिर आपका बेटा इतना बड़ा कैसे?'

'मेरा छोटा भाई है।' उनका मंतव्य समझते ही पांडेजी ने हँसते हुए जवाब दिया था।

कुछ समय बाद जब रस्तोगीजी को राहुल और पांडेजी के वास्तविक रिश्ते के बारे में पता चला तो वे आश्चर्य-मिश्रित खुशी से उनके सामने नतमस्तक हो गए थे।

'आप महान् हैं, पांडेजी।'

पांडेजी बस मुसकरा दिए थे। कुछ भी तो नहीं किया था उन्होंने, बल्कि उलटे राहुल ने ही उनके अव्यवस्थित मकान को घर बना दिया था।

अब वही पांडेजी अगर राहुल के चेहरे के एक-एक भाव समझते थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति तो नहीं हो सकती थी।

राहुल ने अनीता की पढ़ाई और साथ ही मौसी की इच्छा के बारे में भी बता दिया, लेकिन इस सब में फिर भी असली बात वह छुपा ही गया। अनीता की निगाहों में पलते सपने की हकीकत तो उसे स्वयं भी ठीक से मालूम नहीं थी। उसका अनुमान ही तो था वह।

'अरे, तो इसमें इतना परेशान क्यों होते हो? उसकी पढ़ाई भी हो जाएगी और इस बीच कोई अच्छा रिश्ता मिलेगा तो शादी भी कर देंगे। मौसी और अनीता दोनों की इच्छा पूरी हो जाएगी।'

कितनी आसानी से समस्या का समाधान सुझा दिया था उन्होंने, लेकिन

राहुल जानता था कि इस समस्या का समाधान इतना आसान नहीं है, जितना वे समझते हैं।

जिंदगी जैसी चल रही थी, उसे मोड़ देना राहुल के वश में नहीं था। फिर भी उसने प्रयत्न जारी रखा।

सभी प्रयत्नों के बावजूद वह माँ और भाभी का निर्णय नहीं बदलवा पाया। जब भी मौसी के पास गया, अनीता को पढ़ाई में व्यस्त पाया। मौसी दबी जुबान से पढ़ाई छोड़कर विवाह की बात करतीं।

'अच्छा लड़का मिले, तभी तो विवाह करेंगे। ऐसे ही तो नहीं धकेल देंगे अनीता को घर से!'

राहुल की इस बात पर मौसी फिर निरुत्तर हो उठतीं और अनीता का पढ़ाई करने का निश्चय और प्रबल हो उठता।

□

माँ की आँखों में नमी छोड़, मानस बेहतर भविष्य के लिए राहुल के साथ शहर चला आया। पहली बार बस में बैठते समय वह बहुत उत्साहित था, लेकिन जैसे ही धूल-धूसरित, कच्ची, टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर बस ने हिचकोले लेकर चलना आरंभ किया, मानस ने डरकर चाचा का हाथ पकड़ लिया। फिर तो पूरे सफर में मानस की पसीजती हथेली राहुल की हथेली को भिगोती ही रही।

कमला समझ रही थी कि लक्ष्मी चाहती तो मानस की पढ़ाई के बहाने आसानी से इस समय उससे पीछा छुड़ा सकती थी, लेकिन उसने वह रास्ता नहीं चुना। लक्ष्मी के प्रति कमला के मन के किसी कोने में अनायास ही हलकी सी सहानुभूति उपज आई।

लेकिन सास की सहानुभूति का पात्र लंबे समय तक बन पाना लक्ष्मी की किस्मत में ही शायद नहीं था। शायद लक्ष्मी की किस्मत ही ऐसी थी कि जैसे ही सास उसके प्रति नरम होने की कोशिश करती, कुछ-न-कुछ ऐसा घटित हो जाता, जो उसका व्यवहार लक्ष्मी के प्रति पूर्ववत् कर जाता। इस बार भी ऐसा ही हुआ।

कुछ ही समय बाद अनीता का परीक्षा परिणाम आया। अपने दृढ़ निश्चय और परिश्रम की बदौलत उसने प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त की। अब उसकी पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ रहने की व्यवस्था की जिम्मेदारी राहुल पर आन पड़ी।

मौसी बार-बार अनीता को कोस रही थी। क्यों आगे पढ़ने की जिद करके राहुल को मुसीबत में डाल दिया इस लड़की ने?

'अरे मौसी, मास्टरनी बनने जा रही है अनीता। तुम क्यों परेशान हो रही हो?' राहुल ने माहौल को हलका बनाने का प्रयास किया।

राहुल के साथ अनीता के पौड़ी जाने की खबर न जाने कहाँ से कमला को लग ही गई।

'कुछ शरम-लाज है तेरी बहनों को या नहीं? उस छोकरी को देखो, चल दी अकेली राहुल के साथ घूमने!' अनीता का राहुल के साथ अकेले घूमने के आरोप पर लक्ष्मी मन-ही-मन मुसकरा दी। वह जानती थी कि राहुल अनीता को बी.टी.सी. में प्रवेश दिलाने ले गया है।

इस तरह की बातें माँ से छुपाकर राहुल भाभी को बता दिया करता। घर में बिना वजह कलह हो, इससे अच्छा चुप रहना ही उचित समझता था वह। इसलिए लक्ष्मी भी सास को ये नहीं बता सकी कि अनीता घूमने नहीं, मास्टरनी का कोर्स करने पौड़ी गई है।

लक्ष्मी लाख छुपाती, लेकिन अनीता के पढ़ने जाने की खबर कमला को मिल गई। समझ गई, खर्चा भी राहुल ही दे रहा होगा। लक्ष्मी को तो सुननी पड़ी, वो तो ठीक, लेकिन जब राहुल घर आया, तो उसकी भी कमला ने खूब लानत-मलानत की।

राहुल ने हमेशा की तरह माँ की बात को एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया। साथ ही भाभी को अनीता की कुशल-क्षेम बताकर वापस चला आया।

एक वर्ष और बीत गया। मानस ने भी अपने आपको नए परिवेश के अनुसार ढाल लिया था। माहौल बदलते ही उसकी प्रखरता में भी और निखार आ गया।

'राहुल, तुम्हें दो समाचार देने हैं। पहला तो यह कि मैंने अनीता के लिए लड़का ढूँढ़ लिया है।' एक दिन ऑफिस से लौटते ही पांडेजी ने यह शुभ समाचार दिया तो राहुल खुशी से झूम उठा। लड़का पांडेजी के विभाग में ही, मुख्यालय पौड़ी में तैनात था। परिवार में माता-पिता और दो बहनें, दोनों का विवाह हो चुका था। साधारण घर-परिवार का लड़का, विवाह भी सादे समारोह में ही करना चाहता था। और सबसे अच्छी बात यह कि अनीता की पढ़ाई में भी इस विवाह से कोई व्यवधान नहीं पड़ने वाला था।

अगर लड़का और उसका परिवार अनीता को पसंद कर ले तो ये रिश्ता हाथ से निकलने नहीं देगा वह। किसी भी तरह से अनीता का विवाह संपन्न करवा ही देगा। अपने ही विचारों में डूबा राहुल भूल गया कि पांडेजी ने उसे दो समाचार देने को कहा था।

'राहुल, मेरा तबादला देहरादून हो गया है।' अपनी ही सोच में डूबे राहुल को पांडेजी की आवाज कहीं दूर से आती प्रतीत हुई।

उसने कोई सपना देखा है या पांडेजी ने सचमुच यह बात बोली है? प्रश्नवाचक दृष्टि से उसने पांडेजी की ओर देखा।

'हाँ राहुल, मेरा तबादला मुख्यालय में हो गया है।' पांडेजी मुसकरा दिए। जानते थे, राहुल को यह जानकर गहरा धक्का लगा होगा।

और राहुल! वह तो स्तब्ध खड़ा था। उसे लग रहा था जैसे तपती धूप में उसके सिर से छाँव हटा ली गई हो। पांडेजी का साथ तो उसके लिए विशाल वटवृक्ष के समान था, जिसने सर्दी, गरमी और भीषण बरसात, हर मौसम में उसे सदा ही छाँव दी है।

लेकिन साथ ही उसे इस बात की भी प्रसन्नता थी कि कई वर्षों से नौकरी के कारण घर-परिवार से अलग रहते आए पांडेजी को अपने परिवार का साथ मिल रहा था।

बस, पंद्रह-बीस दिन और। उसके बाद पांडेजी यहाँ से चले जाएँगे। वर्षों से इस घर में रहते-रहते राहुल तो उसे अपना ही घर समझने लगा था। अब इसे भी छोड़ना पड़ेगा।

अपनी सभी खट्टी-मीठी यादों को मन में समेटे राहुल ने आखिर उस घर से विदा ले ली। उसके कुछ ही समय बाद पांडेजी भी देहरादून के लिए रवाना हो गए। भूली-बिसरी यादों को मन में समेटे दोनों ही अपनी-अपनी मंजिलों की ओर बढ़ चले।

□

बाईस

इंजीनियर पांडे के सुझाए रिश्ते को राहुल उसकी मंजिल तक पहुँचाना चाहता था। मन-ही-मन दुआ करता था कि सुधीर और उसके माता-पिता अनीता के साथ रिश्ते के लिए अपनी स्वीकृति दे दें।

पांडेजी ने बताया कि सुधीर को तो अनीता के साथ रिश्ता जोड़ने में कोई आपत्ति नहीं है, किंतु अंतिम स्वीकृति तो उसके माता-पिता ही देंगे।

अनीता इस रिश्ते की स्वीकृति नहीं देगी, राहुल यह जानता था। इसलिए वह उलझन में था कि उस तक कैसे यह बात पहुँचाई जाए।

अंततः उसने तय किया, वह स्वयं कुछ भी नहीं बताएगा। मौसी ही समझा देंगी अनीता को।

यही सोचकर अगली छुट्टियों में जब अनीता भी गाँव में थी, राहुल मौसी से मिलने के बहाने चला गया।

'क्या? अनीता का रिश्ता? लेकिन हम तो…' मौसी ने जानबूझकर बात अधूरी छोड़ दी।

गाँव के अधिकांश लोगों सहित मौसी की भी यही धारणा थी कि राहुल ही अनीता से विवाह करेगा। अनीता में उसकी इतनी अधिक दिलचस्पी सिर्फ सहानुभूतिवश नहीं हो सकती।

'दीदी, कब कर रही है अनीता की शादी? होनेवाले दामाद का घर के इतने चक्कर काटना ठीक नहीं। न जाने कब कोई ऊँच-नीच हो जाए।' एक दिन गाँव की ही एक महिला ने मौसी से कहा था, तो वह चुप्पी लगा गई थी।

ठीक ही तो कह रही है वह। अनीता की निगाहों की भाषा वैसे भी

उनसे छुपी न थी। राहुल की गंभीरता पर मौसी को पूरा विश्वास था! फिर भी अनीता का रिश्ता करके वह गाँववालों का मुँह बंद कर देना चाहती थीं।

बातों-ही-बातों में उन्होंने राहुल को कई बार संकेत भी दिए, लेकिन या तो राहुल समझा नहीं या अनीता की पढ़ाई की जिद के कारण चुप रहा। पर अब वह खुद किसी और का रिश्ता...?

'क्या सोच रही हो, मौसी? बहुत अच्छा रिश्ता है। अनीता खुश रहेगी। और सबसे अच्छी बात अपनी इच्छा के अनुसार वह पढ़ाई भी कर पाएगी।' मौसी को सोच में पड़ा देख राहुल ने उन्हें झकझोरा।

'लेकिन बेटा, वह तो तेरे साथ खुश रहेगी।'

'मेरे साथ?' अब चौंकने की बारी राहुल की थी। अनीता के मन में क्या चल रहा है, इसका तो अनुमान था उसे, लेकिन क्या मौसी भी यही चाहती हैं? उसे यह उम्मीद नहीं थी।

'हे ईश्वर! किस धर्म-संकट में डाल दिया तूने मुझे? कैसे समझाऊँ मौसी को कि मैं अभी विवाह नहीं कर सकता। मानस के भविष्य के लिए अभी कोई जोखिम मैं उठा सकता।

'मौसी, अनीता को समझाना आपका काम है। वह समझदार है, अवश्य मेरी परिस्थितियाँ समझेगी।' इस बार राहुल के स्वर में दृढ़ता थी। अपनी परिस्थितियाँ, अपना संकल्प सभी कुछ मौसी को समझा दिया था राहुल ने।

जितनी देर भी राहुल वहाँ रहा, अनीता से बचता रहा। और मिला भी तो तब, जब मौसी आस-पास थीं। जानता था, अनीता जुबान से कोई सवाल नहीं करेगी; लेकिन उसकी निगाहों में उठते सवालों का जवाब उसे कैसे दे पाएगा वह?

और उसके बाद सबकुछ तेजी से घटता चला गया। मौसी ने अनीता को क्या समझाया, कैसे समझाया कि उसने जुबान तक न खोली। सुधीर के माता-पिता को अनीता पसंद आई और मौसी को सुधीर व उसका परिवार बहुत अच्छा लगा।

रही अनीता, तो उसकी रजामंदी तो दोनों परिवारों की खुशी में थी। जिसकी छवि पिछले कई वर्षों से मन-मंदिर में बसाई थी, जब उसकी खुशी भी इसी में थी तो उसने भी अपने आपको परिस्थितियों के हवाले कर देना ही उचित समझा।

शुभ मुहूर्त में अनीता दुलहन बनी। सभी बहनें खुश थीं। मौसी भी खुश

थी। उनकी सभी जिम्मेदारियाँ पूरी हुईं, साथ ही एक बार फिर से निपट अकेले रह जाने का गम भी खाए जा रहा था।

कमला भी खुश थी। उसकी आशंका को निर्मूल साबित करते हुए अनीता का विवाह किसी और से हो रहा था।

'पीछा छूटा इस चुड़ैल से!' वह मन-ही-मन बुदबुदाई।

कमला यह भी समझ रही थी कि इस विवाह का पूरा खर्चा भी राहुल ही उठा रहा था। मौसी के पास तो फूटी कौड़ी भी न थी, लेकिन इसे बहू के परिवार पर होनेवाला आखिरी खर्चा समझकर कमला संतोष कर गई।

अनीता विदा हो गई। विवाह का सारा प्रबंध करने की व्यस्तता के बहाने राहुल अनीता के समक्ष आने से बचता रहा।

अनीता भी पूर्व की सभी यादों को छोड़कर एक नई जिंदगी बसाने अपनी ससुराल चली गई।

एक-एक कर सभी मेहमान भी विदा हो गए। राहुल ने भाभी और माँ को एक बार फिर अपने साथ चलने को कहा; किंतु इस बार भी माँ की घर न छोड़ने की जिद के आगे उसकी एक न चली।

सभी ओर से पूर्णत: संतुष्ट और बेफिक्र होकर राहुल ने अपना पूरा ध्यान मानस का भविष्य सँवारने पर केंद्रित कर दिया।

□

तेईस

दिन गुजरे, महीने गुजरे, साल गुजरे और फिर साल-दर-साल कई साल गुजर गए। मानस अब बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी था। हाई स्कूल परीक्षा में मानस को प्रदेश की योग्यता सूची में स्थान प्राप्त हुआ तो राहुल को अपनी मेहनत सफल होती प्रतीत हुई।

इस बीच राहुल ने भी विभागीय परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर ली थी। आजकल वह विद्यार्थी जीवन में बनाए गए घराट से विद्युत् उत्पादन के प्रोजेक्ट को मूर्त रूप देने में लगा था। बिजली की समस्या से जूझते पहाड़ी गाँवों के लिए उसकी यह परिकल्पना अत्यंत सहायक हो सकती थी। मानस भी बारहवीं के पश्चात् किसी अच्छे संस्थान से इंजीनियरिंग करने की इच्छा मन में पाले हुए था और इसके लिए मेहनत भी कर रहा था। पांडेजी समय-समय पर उसका मार्गदर्शन करते आ रहे थे।

बारहवीं की परीक्षा के बाद जब मानस ने देहरादून या दिल्ली जाकर इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की कोचिंग लेने की इच्छा जाहिर की तो राहुल असमंजस में पड़ गया।

'चाचा, सिर्फ एक मौका दीजिए। मैं आपको निराश नहीं करूँगा।' मानस के स्वर में दृढ़ निश्चय के साथ-साथ अनुनय-विनय के भाव देख राहुल भी उसे निराश नहीं करना चाहता था।

लेकिन भाभी! क्या वह मानस को अकेले भेजने को तैयार होंगी?

'भाभी को तुम्हें तैयार करना पड़ेगा। इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष तुम्हें मानस को अपने से दूर करना ही होगा।' पांडेजी ने सलाह दी। साथ ही मानस

को दिल्ली के बजाय देहरादून भेजने को कहा।

'अकेले नहीं रहना पड़ेगा उसे।' पांडेजी के इस कथन से राहुल एक बार फिर उनके सामने नतमस्तक था।

पहले-पहल भाभी मानस के अकेले बाहर जाने की कल्पना से ही सिहर उठी। राहुल के समझाने और पूरी तरह से निश्चिंत हो जाने के बाद भी मानस के घर से आते हुए उनके आँसू थमते ही न थे।

राहुल स्वयं मानस को छोड़ने देहरादून तक चला आया।

'राहुल, तुमने अपने भविष्य के बारे में क्या सोचा है?' एकांत पाकर पांडेजी ने राहुल से पूछ ही लिया।

'सोचना क्या है? अभी तो एक साल की कोचिंग, फिर आगे की पढ़ाई।'

'मैंने मानस के नहीं, तुम्हारे भविष्य के बारे में पूछा है राहुल?' पांडेजी ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

उसका भविष्य मानस के भविष्य से अलग कैसे हो गया? उसने तो कभी दोनों को अलग करके देखा ही नहीं, सोचा ही नहीं।

'राहुल, मैं तुम्हारी शादी के बारे में बात कर रहा हूँ। अब तुम भी अपना घर बसा लो।' राहुल को असमंजस में देख पांडेजी ने अपनी बात समझाई।

'मानस की असली पढ़ाई तो अब है, सर! मेरी परिस्थितियों से अनजान दूसरे घर की लड़की क्या मेरी जिम्मेदारियों को समझ पाएगी?' पांडेजी की बात टालने की हिम्मत तो नहीं थी राहुल की, लेकिन विनम्रता के साथ अपनी बात को कह देना उसने उचित समझा।

'मानस को कोई दु:ख पहुँचे तो भाभी को क्या मुँह दिखाऊँगा मैं?' और अंतिम शब्द कहते-कहते राहुल का गला भर आया।

राहुल की बातों का मर्म पांडेजी ने समझा और मन-ही-मन उसे आशीर्वाद दिया।

अपने निश्चय के अनुरूप अगले ही वर्ष मानस ने जब देश के सर्वोच्च इंजीनियरिंग संस्थान आई.आई.टी. की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की तो सबने दाँतों तले उँगली दबा ली।

इस क्षेत्र से पढ़ाई करने के बाद इस परीक्षा में सफल होनेवाला वह पहाड़ के गाँव का पहला विद्यार्थी था। मानस खुशी में राहुल से लिपट गया।

राहुल की तो खुशी से आँखें भर आईं और उन्हीं धुँधलाती आँखों के मध्य उभर आई इंजीनियर पांडे की तसवीर। अगर वे ईश्वर के भेजे दूत बनकर उसके जीवन में न आते, तो···। यह सोचकर ही राहुल सिहर उठा। मानस की पीठ पर उसकी पकड़ और मजबूत हो गई।

मानस की इच्छानुसार और पांडेजी के मार्गदर्शन से मानस को आई.आई.टी. कानपुर में प्रवेश मिल गया। अब मानस अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गया और राहुल अपने घराट के प्रोजेक्ट में। अपने इस प्रयास से सुदूर पर्वतीय गाँवों के घर-घर को रोशन करना उसने अपना ध्येय बना लिया था।

मानस ने मेरिट में आने का जो सिलसिला स्कूल जीवन से आरंभ किया था, वही सिलसिला इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान भी चलता रहा।

अंतिम वर्ष समाप्त होने से पहले ही कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उसे नियुक्त करने की इच्छा जाहिर की, लेकिन मानस का मन तो अभी और आगे पढ़ने का था।

अमेरिका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में उसे प्रवेश भी मिल गया। चाचा की परिस्थिति और उनके ऊपर इसका बोझ न पड़े, यह सोचकर मानस ने छात्रवृत्ति का भी प्रबंध कर लिया।

चाचा का आशीर्वाद तो हमेशा ही उसके साथ था, लेकिन राहुल ने मानस से इतनी अपेक्षा अवश्य रखी कि पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् वह हर हाल में स्वदेश लौट आए।

'इस देश की माटी ने तुझे बहुत कुछ दिया है तो इस ऋण से तो तुझे उऋण होना ही होगा।' राहुल ने भावुकता से कहा तो मानस ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

राहुल का घराट से बिजली बनाने का अभिनव प्रयोग सफल रहा। राज्य सरकार द्वारा उसे इसके लिए सम्मानित भी किया गया, साथ ही उसे इस योजना पर और अधिक कार्य करने के लिए मंडल मुख्यालय पौड़ी स्थानांतरित कर दिया गया।

विभागीय कार्य हेतु उसका देहरादून आना-जाना लगा रहता था। वहाँ जाता तो पांडेजी के घर पर ही ठहरता।

मानस को विदेश के लिए विदा करने के बाद राहुल पहली बार पांडेजी के घर गया तो उन्होंने फिर अपना प्रश्न दोहरा दिया।

'अब तो मानस को भी व्यवस्थित ही समझो। अव्वल तो वहीं नौकरी पा जाएगा और अगर वापस आया भी तो यहाँ भी उसे रोजगार की कोई कमी न होगी।'

राहुल चुप रहा। कहना चाहता था कि अभी दो वर्ष और रुकना चाहता है। मानस को अपने पैरों पर खड़े देखना चाहता है, लेकिन कह न पाया।

पांडेजी समझ रहे थे कि राहुल पर उनकी बात का असर हो रहा है। इस समय बहुत अधिक न कुरेदकर उन्होंने राहुल को सोचने के लिए वक्त देना ही उचित समझा।

राहुल वापस पौड़ी लौटा तो पांडेजी द्वारा कही गई बातें दिल और दिमाग दोनों पर कब्जा जमाए बैठी थीं। रात को लेटा, किंतु नींद आँखों से कोसों दूर थी। अपनी बीती जिंदगी उसकी आँखों के आगे घूम गई। छोटी सी उम्र में घर से विद्रोह करके चले आना, उसके बाद के संघर्ष, भाभी के परिवार की जिम्मेदारी, उनकी बहनों के विवाह और मानस······।

आज सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर व्यवस्थित हैं। दो वर्ष बाद मानस भी अपने पैरों पर खड़ा हो जाएगा। माँ और भाभी भी कई बार उससे घर बसाने के लिए कह चुकी हैं।

पिछले अनुभवों को देखते हुए कमला ने लड़की ढूँढ़ना तो आरंभ नहीं किया, लेकिन राहुल को विवाह की याद दिलाना न भूलती थी।

'मेरे मरने के बाद घर बसाएगा तू?'

पिछली बार कहते हुए उनकी आँखें भर आई थीं।

तो क्या करे अब वह? माँ को कह दे कि उसके लिए रिश्ता तलाशना आरंभ कर दे। पिछली बार पांडेजी भी कह रहे थे कि उनके पास भी कई लोग रिश्ता लेकर आए हैं। तो क्या उनसे कह दे कि जहाँ उन्हें उचित लगे, वहीं रिश्ता पक्का कर दें।

लेकिन यदि इन दो वर्षों में मानस को किसी तरह की सहायता की आवश्यकता हुई और अपने परिवार के दायित्वों को निभाने के कारण वह उसकी सहायता न कर पाया तो तब क्या होगा? इतने वर्षों की तपस्या, सबकी मेहनत, सब समाप्त हो जाएगी।

सबकुछ सोचने के बाद उसने दो वर्ष और प्रतीक्षा करना ही उचित समझा और अपने निश्चय से पांडेजी को भी अवगत करा दिया।

‘मुझे खुशी है कि अंततः तुमने अपने बारे में सोचा तो दो वर्ष चुटकियों में बीत जाएँगे और उसके बाद मैं तुम्हें यूँ अकेले नहीं रहने दूँगा।’ पांडेजी और उनकी पत्नी राहुल के इस निर्णय से खुश हुए।

‘दो साल बाद तो मानस के लिए भी रिश्ते आने शुरू हो जाएँगे। ऐसा न हो कि चाचा-भतीजे की शादी एक ही मंडप में करनी पड़े।’ पांडेजी की पत्नी ने कहा तो सब ठहाका मारकर हँस पड़े।

□

चौबीस

और देखते-ही-देखते दो वर्ष भी बीत गए, लेकिन इस बार जाने क्यों राहुल को ये दो वर्ष बहुत लंबे लगे।

चाचा की बात का सम्मान करते हुए मानस विदेश में मिलनेवाली नौकरी छोड़, अपने देश वापस चला आया और स्वदेश लौटकर भी किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने की बजाय उसने राष्ट्रीय कंपनी को ही वरीयता दी।

'चाचा, पैसा ही तो सबकुछ नहीं होता। मानसिक संतुष्टि भी तो होनी चाहिए।' मानस ने कहा तो राहुल को सहसा लगा, मानो मानस बहुत बड़ा हो गया है। अन्यथा वह तो उसे अभी बच्चा ही समझ रहा था।

मानस अपनी नौकरी पर बंगलौर चला गया। राहुल के जीवन में फिर एक बार सूनापन घिर आया।

मानस के पत्र पहले सप्ताह में आते। फिर धीरे-धीरे उनका अंतराल बढ़ता गया, लेकिन गाँव में माँ के लिए हर माह वेतन का एक हिस्सा भेजना वह नहीं भूलता था।

लक्ष्मी, जिसने अपने जीवन के वे महत्त्वपूर्ण क्षण—जिनमें उसकी आँखों ने सुनहरे सपने देखे थे—कष्टों में ही गँवा दिए। अब उसकी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ मन में ही दफन हो चुकी थीं। क्या करती अब इन रुपए-पैसों का? राहुल घर आता तो उसी की हथेली पर रख देती और राहुल उसे मानस की अमानत समझ उसके बैंक खाते में जमा करवा देता।

एक समय था, जब रेणु के विवाह के समय उसने भाभी को उनके

गहने लौटाने का मन-ही-मन निश्चय किया था। अब जब उसकी स्थिति भाभी को सबकुछ लौटा देने की थी तो भाभी को इसमें कोई रुचि ही न थी।

राहुल को जब भी अकेलापन सालता, वह अपने ही विभाग में कार्यरत गैरोलाजी के घर चला जाता। इंजीनियर गैरोला पिछले ही वर्ष देहरादून से यहाँ तबादला होकर आए थे।

पति-पत्नी दोनों अकेले ही रहते। बड़ा बेटा पढ़ाई करने अमेरिका गया तो वापस ही न लौटा। बेटी ऋषिकेश स्थित महाविद्यालय में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत थी।

'बेटा, कभी-कभी आ जाया करो। मुझ बुढ़िया का भी मन लग जाएगा।' श्रीमती गैरोला द्वारा स्नेह से कहे गए इन शब्दों में सात समंदर पार बसे बेटे की यादों की पीड़ा झलक उठी थी।

उनका अपनत्व और स्नेह राहुल के मन को छू गया। इसलिए जब भी उसे अपना अकेलापन बोझ लगता, राहुल उनके पास चला जाता था।

उनकी बेटी रश्मि से भी उसकी मुलाकात उसकी छुट्टियों के दौरान हुई। दोनों का संकोची स्वभाव बातचीत को औपचारिक परिचय से आगे नहीं बढ़ा पाया।

यूँ तो अनीता का घर भी उसी शहर में था, लेकिन अनीता के मन में राहुल के प्रति पूर्व में जो कमजोरी उपजी थी, उसे वह और हवा नहीं देना चाहता था। अनीता के पति से कभी-कभार मुलाकात हो जाती तो कुशल-क्षेम पूछ लेता। अनीता अपने घर में प्रसन्न थी।

पिछले दो-तीन माह से अनीता के पति सुधीर से राहुल की मुलाकात तक न हो पाई थी। कार्यालय में पता किया, तो उसकी बीमारी का समाचार मिला। पिछले कुछ समय से उसकी तबीयत ठीक नहीं रहती थी। स्थानीय चिकित्सालय में इलाज कराया, लेकिन बीमारी पकड़ में न आ पाई। अब दिल्ली गए हैं।

समाचार मिलते ही उसी दिन वह अनीता के घर हो आया।

'इतना पराया हो गया मैं कि मुसीबत होने पर भी नहीं बताया!' राहुल के स्वर में अपनत्व भरा उलाहना था।

'कोई बड़ी परेशानी होती तो जरूर बताती। बस दो-चार दिन में वापस आ ही जाएँगे।' अनीता ने विनम्रता और आत्मविश्वास से अपनी बात कह दी।

अपने मन में बसी राहुल की छवि तो अनीता घर की देहरी से विदा

होते हुए वहीं छोड़ आई थी। उसके बाद से उसने अपने पति और ससुराल के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया था।

परेशानी होने पर संपर्क करने और पुनः आने का वादा कर राहुल वापस चला आया। इसके बाद उसे कुछ दिन के लिए देहरादून जाना था।

'कैसी लगी रश्मि?' भोजन के समय पांडेजी ने पूछा तो राहुल अचकचा गया। उनका मंतव्य थोड़ा-बहुत तो समझ रहा था राहुल।

'तुम तो ऐसे घबरा रहे हो जैसे मैंने कोई बहुत टेढ़ा सवाल कर दिया हो। अरे, शादी की बात कर रहे हैं तुम्हारी। रश्मि तुम्हें पसंद हो तो बताओ, हम बात आगे बढ़ाएँ।'

पांडेजी की पत्नी ने बिना किसी दुराव-छिपाव के सारी बात स्पष्ट कर दी।

उनकी बात सुनकर राहुल सोच में पड़ गया। रश्मि से उसकी बमुश्किल दो-तीन छोटी-छोटी मुलाकातें हुई थीं। इस बीच जितना भी समझ पाया, रश्मि उसे अच्छी ही लगी। उस पूरे परिवार से उसका स्नेह का बंधन जुड़ गया था।

उसकी चुप्पी को हामी समझ पांडेजी और उनकी पत्नी दोनों प्रसन्न हो उठे। लंबी प्रतीक्षा के बाद अब राहुल का घर बसने का समय आ ही गया। अब वे स्वयं ही गैरोलाजी से बात कर रश्मि के विचार भी पूछ लेंगे।

राहुल ने उनसे कुछ कहा तो नहीं, लेकिन मन-ही-मन इस रिश्ते को स्वीकार कर लिया। लेकिन अभी तो रश्मि की स्वीकृति आनी बाकी है। पता नहीं वह और उसके माता-पिता इस रिश्ते के लिए सहमत भी होंगे या नहीं!

देहरादून से लौटने के बाद सबसे पहले राहुल अनीता के पति का हाल जानने चला गया। दरवाजा खटखटाया तो अनीता की सास ने दरवाजा खोला।

अंदर की शांति राहुल को अजीब सी लगी। मन-ही-मन उसने सुधीर के स्वस्थ होने की कामना की।

'दिल्ली से चिट्ठी आई थी, अनीता वहीं गई है।' अनीता की सास ने बताया।

लेकिन ऐसी क्या बात हो गई, जो अनीता को जाना पड़ा। तभी उसके ससुरजी आ गए तो सास उठकर चाय बनाने चली गई।

राहुल ने उनसे सुधीर की बीमारी के बारे में जानना चाहा तो उनकी आँखें भर आईं।

'खून का कैंसर बताया है।' अपनी गीली आँखों को उन्होंने अपने आस्तीन के छोर से पोंछ डाला।

'ब्लड कैंसर?' राहुल बुदबुदाया। अनीता को जब यह खबर मिली होगी, तो क्या बीती होगी उस बेचारी पर? उसे जरूर ढूँढ़ा होगा उसने? लेकिन इस मुसीबत के मौके पर भी वह यहाँ नहीं था। कुछ मदद नहीं कर पाया उसकी।

'हाँ बेटा, मेरे सुंदर, स्वस्थ बेटे को न जाने किसकी नजर लग गई। अब बेचारी बहू न जाने कैसे सँभाल रही होगी अकेले उसे?'

इतने में उनकी पत्नी आ गई और उन्होंने तुरंत ही चेहरे के भाव बदल डाले। इसका मतलब बेटे की बीमारी की भयावहता का इन्हें कोई अंदाजा नहीं, अगर पता होता तो इतना सामान्य व्यवहार न करतीं। राहुल ने अपने मन में सोचा।

खिन्न मन से राहुल वापस चला आया। अनीता की वैवाहिक जिंदगी ने यह कौन सा मोड़ ले लिया! बार-बार उसके पति और बच्चों की तसवीर आँखों में घूम जाती और साथ ही याद आते सुधीर के पिता की बूढ़ी आँखों में छलक आए आँसू। उसकी रूह अंदर तक काँप उठी।

'उसे दिल्ली जाना चाहिए। अनीता को सहारे के साथ-साथ आर्थिक मदद की भी आवश्यकता होगी।' उसने सोचा।

वैसे तो उसके ससुराल पक्ष के रिश्तेदार वहाँ पर थे, फिर भी इस समय वहाँ पहुँचना राहुल ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझी।

छह-सात दिन पैसे के इंतजाम में लग गए। उसके तुरंत बाद राहुल दिल्ली रवाना हो गया।

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। सुधीर जीवन की आखिरी साँसें गिन रहा था। किसी भी पल जीवन की डोर उसके हाथ से छूट जाने वाली थी।

मुसीबत और जिम्मेदारी की इस घड़ी ने अनीता को भी कठोर बना दिया। चुपचाप सुधीर की सेवा करती। आँसू का एक कतरा भी कभी सुधीर के सामने आँखों से न बहने दिया उसने।

उसका साहस और उसकी दृढ़ता देख राहुल स्वयं हैरान था। राहुल को आए एक सप्ताह हो चुका था। सुधीर की हालत देख उसकी वापस जाने की इच्छा न हुई। और नियति ने उसे वहाँ और अधिक रुकने भी न दिया।

कुछ दिनों बाद ही सुधीर ने दम तोड़ दिया। अनीता तो जैसे टूट ही गई थी। इतने दिनों से सुधीर के सामने पक्का किया गया मन कच्चे घड़े की तरह फूट पड़ा।

'क्या मुहँ दिखाऊँगी मैं अपने सास-ससुर को? क्या कहूँगी उनसे कि

उनके बेटे को वापस भी न ला पाई मैं।'

अनीता का करुण स्वर सुन राहुल भी अपने आँसू नहीं रोक पाया। मुँह फेरकर दूसरी ओर खड़ा हो गया। सुधीर के रिश्तेदार चाहते थे कि वहीं उसका अंतिम संस्कार कर दिया जाए, लेकिन राहुल उसके माता-पिता को अपने इकलौते बेटे के अंतिम दर्शन से वंचित नहीं रखना चाहता था।

दोनों को साथ ले राहुल वापस चला आया। एक तन से मृत तो दूसरा मन से। अनीता भरसक अपने आँसू रोके हुए थी, लेकिन मन की गहन पीड़ा उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी। अनीता के चेहरे की ओर देखने की राहुल की हिम्मत न होती।

सुधीर की निष्प्राण देह घर पर पहुँचते ही करुण क्रंदन से पूरा घर गूँज उठा। इतनी देर से अपने आपको रोके हुए अनीता के मन का बाँध एक बार फिर फूट पड़ा। दोनों बेटियों को गले लगाए अनीता का रुदन सुनकर राहुल लाख चाहकर भी वहाँ पर रुक नहीं पाया।

अगले ही दिन राहुल गाँव चला आया। भाभी को भी यह दुःखद समाचार देना आवश्यक था। अपने ही दुःखों के भार से टूटी लक्ष्मी सुधीर की मृत्यु की खबर सुनते ही बिलख उठी।

राहुल भाभी को अपने साथ लाना चाहता था। अनीता के संतप्त मन को कुछ तो सहारा मिल जाएगा। लेकिन पिछले कुछ दिनों से माँ की तबीयत ठीक नहीं चल रही थी। लगातार हलकी सी खाँसी रहती और शाम होते-होते बुखार चढ़ जाता।

'लेकिन सासजी को अकेले छोड़कर…?'

'तू जा, मैं ठीक हूँ। भले-बुरे वक्त में अपने ही काम आते हैं।' लक्ष्मी की बात को आधे में ही काट दिया कमला ने।

राहुल ने आश्चर्य से माँ की ओर देखा। क्या यह वही माँ है, जिसे भाभी के परिवार से कोई संबंध रखना मंजूर नहीं था। बहुत ही मजबूरी हुई, तभी भाभी को मायके भेजा होगा उन्होंने और वह भी बेमन से।

राहुल को माँ में आया यह परिवर्तन सुखद लगा। उसने ध्यान से माँ की ओर देखा। कितनी कमजोर हो गई है माँ। आँखों के नीचे गहरे-काले गड्ढे उभर आए हैं। उसे लगा जैसे माँ को वह वर्षों बाद देख रहा हो। मन हुआ, नन्हे शिशु की भाँति उनके सीने में सिर छुपा ले; किंतु संकोचवश उन्हें छू भी न सका।

सास को ढेर सारी हिदायतें देकर लक्ष्मी राहुल के साथ चली तो आई, लेकिन उसका मन गाँव में ही अटककर गया था।

सारे रास्ते वह उन्हीं की चिंता करती रही। वृद्धावस्था है, तबीयत भी ठीक नहीं रहती, पता नहीं अपने लिए खाना भी बनाएँगी या नहीं। यही सब बातें वह पूरे रास्ते राहुल से कहती आई।

यह कैसा रिश्ता है इन दोनों के बीच? राहुल ने सोचा। क्या नफरत से उपजा यह रिश्ता अब प्यार में बदलने लगा है? और भाभी! माँ ने उनसे कभी प्यार के दो बोल बोले हों, ऐसा उसे तो याद नहीं। फिर भी उनके प्रति भाभी का इतना समर्पण? एक दिन था, जब भाभी उसे दुलहन के वेश में देवी लगी थी और एक आज का दिन है, जब भाभी उसे मन से देवी लगी।

लेकिन अनीता के घर पहुँचते ही भाभी सब भूल गई। याद रही तो सिर्फ अनीता की चीख। उसकी उजड़ी माँग और माँ को बिलखते देख उसकी बेटियों का विलाप।

अब तो सबकुछ ठीक हो रहा था, फिर ईश्वर से उनकी खुशी देखी क्यों न गई?

'दोनों बहनों की किस्मत एक जैसी है।' सुधीर की बड़ी बहन छोटी बहन के कान में फुसफुसाई। लेकिन फुसफुसाहट की आवाज भी इतनी ऊँची थी कि लक्ष्मी ने साफ सुन ली।

'तो क्या अनीता का भविष्य भी उसके जैसा ही होने वाला है?' लक्ष्मी ने मन-ही-मन सोचा। उसकी सास ने अभी तक भी अपने बेटे की मृत्यु के लिए उसे माफ न किया था। पति की मृत्यु के बाद क्या यही आरोप अनीता को भी झेलना पड़ेगा?

'हे ईश्वर! मेरी शंका निर्मूल हो।' मन-ही-मन ईश्वर से अनीता के निष्कंटक भविष्य की कामना कर लक्ष्मी अगले दिन ही घर वापस लौट आई।

अपनी बेटियों के भरण-पोषण और भविष्य के लिए अनीता के समक्ष अब दो विकल्प थे। एक तो पति के स्थान पर अनुकंपा के आधार पर नौकरी प्राप्त करना। दूसरा, अपनी योग्यता के आधार पर किसी स्कूल में अध्यापिका का पद प्राप्त कर लेना।

अनीता को दूसरा विकल्प ही अधिक उपयुक्त लगा। मृत पति का पैसा दिलवाने और नौकरी हेतु आवेदन करने में राहुल ने उसकी मदद की।

इन सब औपचारिकताओं में तीन-चार माह बीत गए। अनीता को

नियुक्ति-पत्र मिला तो राहुल ने चैन की साँस ली। उसकी नियुक्ति भी राहुल के गाँव के पास ही स्थित प्राथमिक पाठशाला में हुई।

'अच्छा ही है। दोनों बहनें आपस में मिल एक-दूसरे का दु:ख-दर्द बाँट लेंगी।' राहुल ने सोचा।

दोनों बेटियों को सास-ससुर के पास छोड़कर अनीता नौकरी करने चली आई।

अनीता के काम के लिए उसे कई बार देहरादून भी जाना पड़ा। लेकिन उसे परेशानी में देख पांडेजी और उनकी पत्नी की हिम्मत न हुई कि उसके विवाह की बात आगे बढ़ा सकें।

'न जाने कैसी किस्मत लेकर पैदा हुआ है यह लड़का? जब भी अपने बारे में कुछ सोचने की कोशिश करता है, कोई-न-कोई नई जिम्मेदारी, नई परेशानी आ खड़ी होती है।'

इस नए घटनाक्रम ने पांडेजी और उनकी पत्नी को यह सोचने पर विवश कर दिया था।

□

पच्चीस

अपनी ही परेशानियों में उलझा राहुल कई महीनों से गैरोलाजी के घर भी नहीं जा पाया था। न जाने क्या सोच रही होंगी उनकी पत्नी? उन्हें तो पता होगा कि पांडेजी ने मुझसे रश्मि के बारे में पूछा है?

उन्हें लग रहा होगा कि वह जानबूझकर उनकी उपेक्षा कर रहा है, इन्हीं सब सोच-विचारों में डूबा राहुल एक शाम उनके घर चला गया। पहुँचते ही गैरोलाजी की पत्नी ने प्यार से उलाहना दिया, तो राहुल अपनी पिछली सारी परेशानियाँ भूल गया।

गैरोलाजी जब यहाँ तबादला होकर आए थे, तभी पांडेजी ने उन्हें राहुल के बारे में बताया था।

'उसका मन टटोल लीजिएगा, बहुत सुलझा हुआ इनसान है। रश्मि के लिए अच्छा जीवन साथी साबित होगा।'

लेकिन उनकी कभी हिम्मत न हुई कि वे राहुल से इस विषय में बात कर सकें। वे राहुल से जब भी मिलते, उसे उसकी भाभी, माँ और भतीजे के बारे में बात करता पाते।

बेटी रश्मि को उन्होंने अच्छी-से-अच्छी शिक्षा दिलवाई थी, लेकिन अब उसकी योग्यता, संस्कारों के अनुसार वर तलाशने में कठिनाई हो रही थी।

राहुल से मिलकर उन्हें लगा था कि उनकी तलाश यहाँ पर समाप्त होगी और रश्मि का घर बस जाएगा। पांडेजी ने उसकी जितनी प्रशंसा की थी, हकीकत में वह उससे भी कहीं अधिक योग्य और गुणी इनसान था।

उस रात राहुल भोजन करके ही वापस लौटा। घर पहुँचा तो विचारमग्न

था। क्या अब समय आ गया है कि वह अपना भी एक निश्चित ठौर बना ले! घर लौटने के बाद चारदीवारों के बीच का खालीपन अब खलने लगा था।

जिस दिलो-दिमाग में हर समय अपनों की, अपनों के निकटस्थ संबंधियों के प्रति जिम्मेदारी की भावना भरी रहती थी, वही अब खाली-सा महसूस होने लगा था। सब अपने-अपने में व्यस्त थे और उसकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी मानस भी अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था।

'अब तो अपने बारे में सोचकर वह कोई पाप नहीं कर रहा था?'

बहुत सोच-विचार के बाद आखिर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि माँ और भाभी से सलाह लेकर वह पांडेजी को अपनी स्वीकृति दे ही देगा।

अगले सप्ताह ही गाँव जाकर राहुल भाभी और माँ की इस विषय में सहमति लेना चाहता था। परंतु दो दिन बाद ही उसे अपने प्रोजेक्ट के सिलसिले में विभिन्न पर्वतीय राज्यों के दौरे करने का निर्देश हुआ।

उसकी सफलता को देखते हुए कई हिमालयी राज्य अपने यहाँ भी विद्युत् उत्पादन हेतु यही कार्यविधि अपनाना चाहते थे। इस संबंध में पूर्व में भी वह विभिन्न कार्यशालाओं में सहभागिता कर चुका था।

लौटकर ही इस संबंध में कोई बात संभव थी। पिछली बार जब गाँव गया था तो माँ कुछ अस्वस्थ थी। इसलिए इस बार जाने से पहले माँ से मिलना आवश्यक था।

रविवार का अवकाश होने के कारण अनीता भी बड़ी बहन के पास आई हुई थी।

माँ की हालत बहुत ठीक न थी। लगातार दवाइयाँ खा रही थी, लेकिन उसका बहुत असर होता न दीख रहा था। लेकिन अनीता! उसे क्या हो गया? मुरझाया हुआ चेहरा, शून्य में निहारती उसकी निगाहें, कुछ पूछो, तो धीमी आवाज में बहुत सोच-विचारकर दिया गया छोटा सा जवाब। यह ठीक तो है? राहुल ने अपने आप से ही प्रश्न किया।

राहुल को वह शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रूप से भी कमजोर नजर आई। उसे कुछ भी पूछना बेकार था, इसलिए राहुल ने भाभी से ही उसके बारे में पूछ लिया और उसके बाद लक्ष्मी ने जो कुछ बताया वह उसकी स्वयं की कहानी से बहुत हटकर न था।

पुत्र की मृत्यु के कुछ दिन बाद तक तो सुधीर के माता-पिता स्वयं भी गहरे सदमे में थे। सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो चली थी। अनीता और

उसकी दोनों बेटियों के साथ उनकी पूर्ण सहानुभूति थी। लेकिन अनीता के भाग्य को उसकी बड़ी बहन से जोड़ने का कुत्सित प्रयास लक्ष्मी स्वयं अपने कानों से सुनकर आ रही थी।

धीरे-धीरे सुधीर की बहनों ने अनीता के विरुद्ध माँ के कान भरने आरंभ कर दिए। सुधीर की मृत्यु का ठीकरा अनीता और उसकी किस्मत पर फोड़ा जाने लगा। अनीता की अनुपस्थिति में दोनों बहनें दिन भर अनीता और उसके परिवार को लेकर माँ के कान भरती। आर्थिक समस्या को लेकर भी उनके मन में भय पैदा करने का प्रयास किया बहनों ने।

'अरे, उसकी तो कल नौकरी लग जाएगी। पेंशन भी, तनख्वाह भी और भाई का सारा पैसा भी उसी का। कल तुम्हें ठेंगा दिखाकर चली जाएगी।' बड़ी बहिन ने आँखें मटकाकर कहा तो दूसरी ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

'कुछ पैसा अपने नाम करा लो अभी से, वरना तुम्हें तो दो रोटी के भी लाले पड़ जाएँगे।' दूसरी ने स्थिति की भयावहता को और अधिक बढ़ाने का प्रयास किया।

सुधीर के पिता की कोई आमदनी न थी। घर का खर्च सुधीर के वेतन से ही चल रहा था। जीवन भर एक आढ़ती के बही-खाते का लेखा-जोखा रखने का काम किया था उन्होंने। उससे जो आमदनी हुई उसी से परिवार का लालन-पालन किया था। जो पैसा बचा, दोनों बेटियों के विवाह में काम आ गया था। गनीमत थी कि पुश्तैनी मकान था, अन्यथा किराया देने में ही कमर टूट जाती।

नौकरी लगने के बाद सुधीर ने घर को अच्छी तरह सँभाल लिया, लेकिन पिता ने तब भी अपना काम न छोड़ा था। एक वर्ष पहले ही सुधीर के बहुत आग्रह पर उन्होंने काम छोड़ दिया था।

पत्नी ने पति से इस संबंध में बात की तो वे भड़क उठे।

'दो-दो बेटियाँ हैं उसकी, उनकी पढ़ाई-लिखाई, फिर विवाह, उस बेचारी के पास अब है ही क्या? और अगर आवश्यकता पड़ी भी तो मेरे हाथ-पैर चलते हैं अभी, फिर से काम कर लूँगा। लाला तो वैसे भी मुझे छोड़ना नहीं चाहता था। वो तो सुधीर की जिद, थी वरना···।'

मृतक पुत्र के पैसे पर निगाहें गड़ाने से अच्छा उन्हें काम करना पसंद था। वैसे वे जानते थे कि यह नौबत कभी नहीं आएगी। उनको पूर्ण विश्वास था कि उनकी सुघड़, सुसंस्कारित बहू कभी भी ऐसा न होने देगी।

अपनी बातों से पत्नी का मुँह तो उन्होंने बंद करवा दिया, लेकिन मन पर प्रभाव न डाल पाए। आर्थिक असुरक्षा की भावना उसके मन में कूट-कूट कर भर गई थी।

'भाभी, तुम्हें तो पेंशन मिलनी ही है। साथ में नौकरी भी लग गई है। भाई का जो पैसा मिला है, उसे माँ के नाम कर दो।' सुधीर के फंड का पैसा मिलते ही छोटी बहन ने अनीता को फरमान सुना दिया।

'तुम तो अपनी नौकरी पर चली जाओगी, माँ-पिताजी को भी महीने के खर्च के पैसे चाहिए। तुम्हारे यहाँ रहने पर बैंक से पैसे निकालेगा भी कौन? इसलिए ये ठीक ही तो कह रही है।' बड़ी ननद ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

कुछ ही दिनों बाद बड़े ननदोई के साथ बैंक जाकर अनीता ने सारा पैसा अपनी सास के नाम कर दिया। यह सब उससे इतनी चतुराई से कराया गया कि सुधीर के पिता को भनक भी न लग पाई।

'यह सब मुझे क्यों नहीं बताया?' भाभी से यह जानकर राहुल झल्ला उठा।

'क्या-क्या बताती तुम्हें, वैसे भी तुमने कम मदद की है उसकी?'

'लेकिन…'

'लेकिन क्या, राहुल? इस लायक तो तुमने उसे बना ही दिया था कि दो रोटी इज्जत से खा सके। इतना पर्याप्त नहीं क्या? और फिर माता-पिता का भी अपने पुत्र पर हक होता है।'

भाभी के जवाब ने राहुल को निरुत्तर कर दिया। उसे याद आया, जब भाई की मृत्यु हुई थी, भाभी के पास कुछ भी न था। वह बेचारी पूरी तरह अपने ससुराल की दया पर निर्भर थी। अनीता की स्थिति तो तब भी बहुत बेहतर है।

लेकिन अब उसकी बेटियों के भविष्य का भी प्रश्न था। उनके साथ भी दादी का व्यवहार अच्छा न था। जहाँ सुधीर ने बेटियों को कभी बेटे से कम न समझा, उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा देने का मन बनाए रखा, वहीं उसकी माँ अब उन्हें लड़कियों की तरह रहने के ताने देती।

'घर के काम-काज सीखो, यही काम आएगा तुम्हारे।' सुधीर के रहते जिन बच्चियों ने अपनी पढ़ाई के सामने घर के काम को कभी प्राथमिकता न दी, उन्हीं को घर के छोटे-मोटे कार्यों में लगा देख अनीता का मन खून के आँसू रोता।

'ये दोनों ही हमारे बेटे हैं। अच्छा पढ़ा-लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा

करूँगा इन्हें।' दो-दो बेटियाँ पैदा करने का उलाहना मिलने पर उसने कभी सुधीर से शिकायत की तो वह इन्हीं बातों से उसका मन जीत लेता।

'कौन सी सदी की बात कर रही है, माँ? तुम एक कान से सुना करो और दूसरे से निकाल दो। मुझे तो कोई शिकायत नहीं है न!' सुधीर का यही सहारा उसे इन अनर्गल बातों को सहन करने की क्षमता देता।

लेकिन अब सुधीर के जाने के बाद अंदर-बाहर से टूट चुकी अनीता को सहारा देनेवाला कोई न था। बेटियों को अपने साथ भी न ला सकती थी। पाँचवीं तक तो वो उसके साथ रहकर भी पढ़ लेतीं, लेकिन उसके बाद तो कई मील दूर पैदल चलकर स्कूल जाने का ही एकमात्र विकल्प था।

उनके भविष्य की चिंता ने अनीता के तनाव को और बढ़ा दिया था।

'इस लड़की का दुःख मुझसे देखा नहीं जाता।' माँ ने दुःखी स्वर में कहा।

'किस लड़की की बात कर रही है, माँ?' राहुल सोच में पड़ गया।

'दो-दो बेटियों की जिम्मेदारी और कोई सहारा भी नहीं।'

तो माँ अनीता की बात कर रही है। लेकिन लक्ष्मी को हमेशा अपने बेटे की मौत का जिम्मेदार माननेवाली माँ अनीता के लिए इतनी दुःखी क्यों है? ध्यान से उसने माँ के चेहरे की ओर देखा, कहीं कोई बनावट नहीं, माँ की भावनाएँ उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

माँ की सोच में कितना बदलाव आ गया है? राहुल हैरान था।

'लक्ष्मी तो भरे-पूरे परिवार के बीच में थी। तेरे पिता थे, मैं थी, तुम दोनों भाई थे तो कभी किसी की हिम्मत न हुई उसकी ओर आँखें उठाने की! लेकिन अनीता, वह बेचारी तो एकदम अकेली है। ईश्वर उसकी रक्षा करे।' माँ बोले जा रही थी और राहुल सुन रहा था। उसे लग रहा था मानो कोई उसके कानों में अमृत घोल रहा हो। माँ का एक नया रूप आज उसके सामने था। तो क्या माँ जैसी बाहर से दिखती है वैसी मन से नहीं है?

लेकिन अगले ही पल पिछली बातें उसकी आँखों के आगे घूम गईं। नहीं, माँ पहले ऐसी तो कतई न थी। लेकिन आज की उनकी बातों से, उनके विचारों से उसका मन पिछली सारी ज्यादतियों के लिए उन्हें क्षमा कर देने को हुआ।

'माँ, हम उसकी पूरी सहायता करेंगे।' और उनका विश्वास मजबूत करने के लिए उसने उनके दोनों हाथ मजबूती से अपने हाथों में थाम लिये।

‘माँ, तेरे हाथ तो गरम हो रहे हैं, बुखार है क्या?’ उसने अपना हाथ माँ के माथे पर रख दिया।

‘कुछ नहीं है, बेटा। अब बुढ़ापा है तो कुछ-न-कुछ तो लगा ही रहेगा।’ माँ ने उसका हाथ माथे से हटाकर अपने हाथों में ले लिया।

राहुल गाँव से लौटा तो मन फूल की तरह हलका था। और इसका कारण था माँ के विचारों में आया परिवर्तन। अनीता को देख उसे निराशा अवश्य हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा, ऐसा उसका मानना था। अनीता आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर नहीं थी और यही उसका सबसे बड़ा संबल था।

दौरे पर जाने से पहले गैरोलाजी के घर जाना नहीं भूला राहुल।

गैरोलाजी और उनकी पत्नी को भी पांडेजी की बातों से लगा था कि राहुल भी रश्मि में रुचि ले रहा है। इसलिए मन-ही-मन वे लोग इस रिश्ते को पक्का मान बैठे थे। रश्मि ने भी इस रिश्ते के लिए सहमति दे दी थी। ‘एक महीने बाद लौटूँगा, तब मिलूँगा आपसे।’ गैरोलाजी और उनके परिजनों के मन में आशा के दीप प्रज्वलित कर राहुल अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

□

छब्बीस

राहुल एक माह के दौरे के बाद वापस लौटा ही था कि गाँव से एक व्यक्ति माँ की बीमारी का संदेश लेकर आ गया।

पांडेजी को फोन पर सूचित कर राहुल आनन-फानन में गाँव चला आया। कई महीनों से चलनेवाली निरंतर खाँसी और बुखार कमला के शरीर को घुन की तरह चाट गए थे और पिछले दस दिन से उन्होंने जो बिस्तर पकड़ा, तो उठ ही न सकी।

उनका बुखार तेज होने व सीने में दर्द की शिकायत पर घबराकर लक्ष्मी ने स्वास्थ्य केंद्र के फार्मेसिस्ट को घर बुलवा भेजा।

'एक्स-रे करवाना पड़ेगा और उसके लिए शहर जाना होगा। वैसे भी इनकी हालत अब ठीक नहीं।' उसने कहा तो लक्ष्मी घबरा उठी।

पूर्व में भी वह कमला से कई बार एक्स रे करवाने को कह चुका था, लेकिन कमला ने हर बार उसकी सलाह को हँसी में उड़ा दिया।

'अरे, अब क्या मरघट जाने के लिए एक्स-रे करवाना है?'

इस बात को कभी उन्होंने राहुल को भी न बताया। पहले से ही उसे बहुत अधिक परेशानियाँ देने का अपराध-बोध उन्हें राहुल को कुछ कहने से रोक लेता।

'मैं माँ को शहर ले जाता हूँ।' माँ की गंभीर हालत देखकर उसने भाभी से कहा।

लेकिन उन्होंने मना कर दिया, 'अब क्या शहर जाना, बेटा। आखिरी साँस अपनी मिट्टी में ही निकले तो अच्छा।' बड़ी मुश्किल से उन्होंने ये शब्द

कहे और हाँफने लगीं।

राहुल को अपने आप पर बहुत क्रोध आया। इतने महीनों से वह माँ की हालत देख रहा था। क्यों पहले उसके दिमाग में यह बात न आई कि उन्हें शहर ले जाए। इतनी भी क्या व्यस्तता, जो अपनों के दुःख और बीमारी की भी अवहेलना हो जाए।

पश्चात्ताप की अग्नि में जलते हुए राहुल ने अब माँ की सेवा में अपने आप को समर्पित कर दिया। उनकी हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही थी। अपनी बात कहने में उन्हें अत्यधिक परेशानी होने लगी। कुछ कहना भी चाहती तो राहुल उन्हें रोक देता। माँ के इशारों की भाषा को भी वह इन दिनों बखूबी समझने लगा था।

एक सप्ताह तक राहुल की कोई खबर न मिली तो पांडेजी भी माँ का हालचाल जानने के बहाने उसके गाँव चले आए। गैरोलाजी भी उनके साथ हो लिये। सोचा, इसी बहाने राहुल के घरवालों से भी मुलाकात हो जाएगी। और अगर उचित समय मिला तो उसकी माँ से रिश्ते के लिए बात भी कर लेंगे। यही सोचकर उन्होंने भी पांडेजी के साथ आना उचित समझा।

किंतु होनी को तो कुछ और ही मंजूर था। पिछले दो दिन से अपने होशोहवास खो बैठी कमला ने कुछ देर के लिए आँखें खोलीं। इशारे से सबको अपने पास बुलाया। माँ की बीमारी की खबर सुन पिछले दो दिन से अनीता भी वहीं थी। कमला ने इधर-उधर निगाहें दौड़ाईं। लक्ष्मी को इशारे से अपने पास बुलाया और अनीता को भी वहाँ आने को कहा।

'मुझे तुम सबसे कुछ कहना है।' बहुत मुश्किल से बोल पाई कमला। राहुल ने उनके सिरहाने बैठ उन्हें चुप रहने का इशारा किया।

'माँ, अभी चुप रहो, जब ठीक हो जाओगी, तब बात करेंगे।'

राहुल की बात सुनकर कमला के चेहरे पर क्षीण मुसकान घिर आई, मानो कह रही हो कि अब ठीक होने का इंतजार नहीं कर सकतीं। इस इंतजार में कहीं बहुत देर न हो जाए।

आगे कुछ बोलना चाहा, लेकिन भरपूर प्रयास करने पर भी मुँह से आवाज न निकली। विवशतावश उनकी आँखों से आँसू निकल आए।

इशारे से ही अनीता को अपने पास बुलाया। फिर लक्ष्मी की ओर कातर निगाहों से देख काँपते हाथों को उठाकर उन्हें जोड़ने का प्रयास किया। शायद उससे पूर्व में किए गए व्यवहार के लिए क्षमा माँग रही थी।

लक्ष्मी आकर उनके सिरहाने बैठ गई। दोनों हाथों को कसकर उसने अपने हाथों में जकड़ लिया। लक्ष्मी की आँखों से बरसते आँसू कमला के दोनों हाथों को भिगोते रहे।

थोड़ी देर में ही उन्होंने लक्ष्मी का बंधन छुड़ाकर राहुल का हाथ पकड़ लिया और अनीता को अपने पास आने का इशारा किया। आखिर कमला चाहती क्या है? क्यों अनीता को अपने पास बुला रही है? सभी के मन में यही प्रश्न था। स्वयं अनीता भी माँ की मन:स्थिति समझ नहीं पा रही थी। इतनी देर में माँ ने अनीता का हाथ अपने हाथ में थाम उसे राहुल के हाथ में थमा दिया और दोनों के हाथ के ऊपर मजबूती से अपना हाथ रख दिया।

वहाँ उपस्थित सभी लोग चौंक पड़े। आखिर चाहती क्या हैं वे? कमला राहुल की ओर आशापूर्ण निगाहों से देख रही थी। कुछ कहना चाहती थी, लेकिन विवश कमला की आँखों से आँसू के सिवा कुछ न निकलता। होंठ थरथराते, लेकिन शब्द कहीं गले में ही उलझकर रह जाते।

ईश्वर ने अंतिम समय में उसकी बोलने की शक्ति छीन ली थी। लक्ष्मी के साथ जो पाप उसने जीवन भर किया, वह शायद अब उसका प्रायश्चित्त करना चाहती थी, लेकिन अपनी बात समझा नहीं पा रही थी। बीच-बीच में आँखें मूँदकर मानो कामना कर रही हो—'हे ईश्वर! राहुल को इतनी शक्ति दे कि वह मेरे मन की बात समझ सके।' अब वह एकटक राहुल की ओर निहार रही थी।

लक्ष्मी माँ का इशारा समझने का प्रयास करती, लेकिन समझ न पाती। वह तो इस बात से ही गद्गद थी कि जीवन भर अपने बेटे की मृत्यु का ठीकरा उसके सिर फोड़नेवाली सास अंतिम समय में उसे क्षमा कर गई है।

उन्होंने अनीता का हाथ राहुल के हाथ में क्यों दिया? इस रहस्य को समझने का प्रयास करती लक्ष्मी अपने में ही उलझकर रह गई।

राहुल और उसकी माँ की हथेलियों के बीच दोनों के स्पर्श की ऊष्मा महसूस करती अनीता भी अपने विचारों में खोई थी। माँ के इस भाव को समझने का प्रयास करती अनीता के मन में पूर्व स्मृतियाँ जीवंत हो उठीं।

एक समय था, जब वह शिद्दत से राहुल को पाने की कामना करती रही थी। समय बदला, परिस्थितियाँ बदलीं और उसका विवाह स्वयं राहुल ने ही सुधीर से करवा दिया। राहुल की यादों को मिटाकर अनीता ने अपना सबकुछ सुधीर को समर्पित कर दिया। लेकिन अब जब सुधीर के जाने के

बाद वह सिर्फ और सिर्फ अपनी बेटियों के लिए जी रही थी, तो अब राहुल की माँ क्या कहना चाहती है उससे? क्यों उसका हाथ राहुल के हाथ में दे रही है?

इधर, पांडेजी भी गहन सोच में डूबे थे, 'क्या राहुल का सारा जीवन दूसरों के लिए ही समर्पित रहेगा? बड़ी कठिनाई से सारी जिम्मेदारियाँ निभाकर अब वह अपने लिए कुछ सोच रहा था, तो अचानक अब माँ का यह आग्रह! क्या अनीता की जिम्मेदारी एक बार फिर राहुल पर डालना चाहती हैं वह?'

माँ के कारण ही एक दिन राहुल को यह घर छोड़ना पड़ा था और अब अंतिम समय में भी माँ मनमानी पर उतर आई है। पांडेजी जितना सोचते उतना ही उन्हें माँ पर क्रोध और राहुल के भाग्य पर तरस आता। सोलह-सत्रह वर्ष का था वह, जब उनके पास आया था। तब से अब तक उन्होंने उसे हमेशा दूसरों के बारे में ही सोचते हुए पाया।

गैरोलाजी निर्विकार भाव से वहाँ बैठे तो थे, लेकिन उनका मन कहीं और था। रश्मि और उसकी माँ की आँखों में कई सपनों को पलते देखा था उन्होंने। तो क्या ये सपने अब सदा के लिए सपने ही रह जाएँगे? क्या राहुल की माँ अनीता को उसे सौंपना चाहती है? गैरोलाजी जितना सोचते उतने ही उलझते जाते। अभी तो कुछ कहा जा सकता था, अपने आप को समय की धारा के प्रवाह में छोड़ दिया था उन्होंने।

और राहुल! बचपन से ही माँ के इशारों, चेहरे के भावों को समझते आए राहुल ने इस बार भी उनकी इच्छा को समझने में भूल न की। समझ गया था, माँ क्या चाहती है? माँ की सोच इतनी बदल जाएगी, इसका तो उसे सपने में भी अनुमान न था।

'माँ, अंतिम समय में ये कैसी परीक्षा ले रही हो तुम मेरी?' एक ओर अनीता और दूसरी ओर रश्मि का चेहरा उसकी आँखों के आगे घूम गया। चोर निगाहों से उसने गैरोलाजी की ओर देखा। निर्विकार चेहरा, उसमें कहीं कोई भाव न थे। मन में उठते बवंडर को चेहरे पर आने से रोक लिया था उन्होंने।

रश्मि के लिए पांडेजी को तो अपनी मौन स्वीकृति दे ही चुका था वह, बस माँ की स्वीकृति बाकी थी।

माँ के गले से गड़गड़ाहट का स्वर सुनते ही राहुल हड़बड़ाकर अपनी सोच से बाहर निकल आया। माँ कुछ बोलने का प्रयास कर रही थीं। लगता था मानो राहुल के जवाब की प्रतीक्षा करती उनकी आँखें अब संतुष्ट होकर

मुंद जाना चाहती थीं।

'जीवन में बहुत सारी परीक्षाओं से गुजरा हूँ माँ, अगर अंतिम समय में तुम एक और परीक्षा लेना चाहती हो तो मैं उस पर भी खरा ही उतरूँगा और तुम्हें निराश नहीं करूँगा।' मन को कठोर कर राहुल ने माँ की ओर देखते हुए स्वीकृति में सिर हिला दिया।

माँ के चेहरे पर संतोष की रेखाएँ खिंच आईं। गहरी पीड़ा के भाव खुशी में बदल गए। आश्वस्त होकर धीरे से उन्होंने आँखें मूँद लीं, लेकिन अनीता और राहुल के हाथों पर उनकी हथेली का दबाव और बढ़ गया।

माँ सो गईं, तो राहुल ने धीरे से उनका हाथ हटाकर स्वयं को और अनीता को मुक्त कर लिया। लेकिन क्या अब कभी इस बंधन से वे दोनों मुक्त हो पाएँगे? अनीता राहुल की ओर देखे बिना शीघ्रता से कमरे से बाहर निकल गई। कमला की मंशा क्या थी, अनीता ने समझने का प्रयास भी न किया।

दादी की बीमारी की सूचना पर उसी दिन मानस भी घर पहुँच गया।

अगले दो दिन कमला को होश न आया। तीसरे दिन थोड़ी देर के लिए उन्होंने आँखें खोलीं। मानस को पहचानने का प्रयास किया और उनकी आँखों की चमक बढ़ गई।

शाम के वक्त राहुल उनके पास बैठा उनकी हथेलियाँ सहला रहा था। अपने स्पर्श और आँखों की भाषा से उसने उन्हें विश्वास दिला दिया था कि उनकी अंतिम इच्छा का वह हर कीमत पर सम्मान करेगा। अचानक माँ को जोर की हिचकी आई और बेटे की ओर निहारती उनकी आँखें खुली-की-खुली रह गईं। राहुल ने धीरे से हाथ धर कर उन्हें हमेशा के लिए ढाँप दिया। कुछ देर के लिए वहाँ सन्नाटा पसर गया।

जीवन का एक अध्याय समाप्त हुआ, लेकिन राहुल के जीवन में माँ की अंतिम इच्छा के रूप में एक नया अध्याय आरंभ होने को था।

□□□